हिस्नुल मुस्लिम

(क़ुरआन व हदीस की दुआयें)

अनुवादक

अबु आबिद फैसल बिन सनाउल्लाह मदनी

सन्शोधन

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

प्रकाशक

इस्लामी आमन्त्रण एवं निर्देश कार्यालय रब्वा

फोन:**4916085** - पोस्ट बाक्स:**29465** - रियाज:**11457**

सऊदी अरब

www.islamhouse.com

1428-2007

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ
*	प्राक्कथन	11
*	ज़िक्र की फ़ज़ीलत	13
1	नींद से जागने के बाद की दुआएँ	19
2	कपड़ा पहनने की दुआ ।	24
3	नया कपड़ा पहनने की दुआ ।	24
4	नया कपड़ा पहनने वाले को क्या दुआ दी जाए	25
5	कपड़ा उतारे तो क्या पढ़े ?	25
6	शौचालय (बैतुल-खला) में दाख़िल् होने की दुआ ।	26
7	शौचालय (बैतुल-खला) से निकलने की दुआ ।	26
8	वुज़ू शुरु करने से पहले की दुआ ।	26
9	वुज़ू से फारिग़ होने के बाद की दुआ ।	27
10	घर से निकलते समय की दुआ ।	27
11	घर में दाख़िल् होते समय की दुआ ।	28
12	मस्जिद की ओर जाने की दुआ ।	29
13	मस्जिद में दाख़िल् होने की दुआ ।	30
14	मस्जिद से निकलने की दुआ ।	31
15	अज़ान की दुआएँ ।	31
16	नमाज़ शुरू करने की दुआएँ ।	33
17	रुकूअ़ की दुआएँ	38
18	रुकूअ से उठने की दुआएँ ।	39
19	सजदे की दुआएँ ।	40
20	दोनों सजदों के बीच बैठने की दुआएँ ।	42

21	सजदा तिलावत् की दुआ ।	43
22	तशह्हुद् की दुआ ।	44
23	तशह्हुद के बाद नबी करीम ﷺ पर दुरूद शरीफ ।	44
24	आख़िरी तशह्हुद् के बाद और सलाम फेरने से पहले की दुआएँ ।	45
25	नमाज़ से सलाम फेरने के बाद की दुआएँ ।	50
26	नमाज़े इस्तिख़ारा की दुआ ।	56
27	सुबह् और शाम के अज़्कार और दुआएँ ।	58
28	सोने के समय की दुआएँ ।	71
29	रात को करवट बदल्ते समय की दुआ ।	79
30	नींद में बेचैनी और घब्राहट् की दुआ ।	80
31	कोई आदमी बुरा ख़्वाब (स्वप्न) देखे तो क्या करे?	80
32	कुनूते वित्र की दुआ ।	81
33	वित्र का सलाम फेरने के बाद की दुआ ।	83
34	ग़म् और फिक्र से नजात पाने की दुआ	83
35	बेक़रारी तथा बेचैनी की दुआ ।	84
36	दुश्मन् तथा शासन अधिकारी से मुलाक़ात के समय की दुआ ।	86
37	शासक् के अत्याचार से डरने वाले की दुआ ।	87
38	दुश्मन् पर बद्दुआ ।	88
39	जब किसी क़ौम से डरता हो तो कौनसी दुआ पढ़े ?	88
40	जिसे अपने ईमान में शक् होने लगे तो वह यह दुआ पढ़े ।	89
41	क़र्ज (ऋण) की अदायगी के लिए दुआ ।	89
42	नमाज़ में या कुरआन पढ़ते समय उत्पन्न होने वाले वस्वसों से बचने की दुआ ।	90
43	उस आदमी की दुआ जिस पर कोई काम मुश्किल हो जाए ।	90

44	गुनाह कर बैठे तो कौनसी दुआ पढ़े और क्या करे ?	91
45	वह दुआएँ जो शैतान तथा उस के वस्वसों को दूर करती हैं ।	91
46	नापसन्दीदा वाकिआ़ पेश आने या बेबसी की दुआ	92
47	जिस के यहाँ कोई औलाद पैदा हो उसे किस प्रकार मुबारक्बाद (दुआ) दी जाए और जिसे मुबारक्बादी दी जा रही हो वह मुबारकबाद देने वाले के लिए क्या कहे ?	93
48	बच्चों को किन कलिमात के साथ अल्लाह की पनाह में दिया जाए ।	94
49	बीमार पुर्सी के वक्त मरीज़ के लिए दुआ	94
50	बीमार पुर्सी की फज़ीलत् ।	95
51	उस मरीज़ की दुआ जो अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो चुका हो ।	95
52	जो आदमी मरने के क़रीब हो उसे ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ाया जाए ।	97
53	जिसे कोई मुसीबत् पहुँचे वह यह दुआ पढ़े ।	97
54	मैयित् की आँखें बन्द करते समय की दुआ ।	97
55	नमाज़े जनाज़ा की दुआ ।	98
56	बच्चे पर नमाज जनाज़ा की दुआ ।	100
57	ता़ज़ियत् (मैयित के घर वालों को तसल्ली देने) की दुआ ।	101
58	मैयित को क़ब्र में उतारते समय की दुआ	102
59	मैयित को क़ब्र में दफन् करने के बाद की दुआ	103
60	क़बरों की ज़ियारत् की दुआ ।	103
61	आँधी की दुआ	104
62	बादल् गरजते समय पढ़ी जाने वाली दुआ ।	104
63	बारिश् माँगने की कुछ दुआएँ ।	105

64	बारिश् उतरते समय की दुआ ।	105
65	बारिश् खत्म होने के बाद की दुआ ।	106
66	बारिश् रुकवाने के लिए दुआ ।	106
67	नया चाँद देखने की दुआ ।	106
68	रोजा खोलते समय की दुआ ।	107
69	ख़ाना खाने से पहले की दुआ ।	107
70	खाने से फारिग़ होने के बाद की दुआ ।	108
71	मेहमान की दुआ खाना खिलाने वाले मेज़बान के लिए ।	109
72	जो आदमी कुछ पिलाए या पिलाने का इरादा करे उस के लिए दुआ ।	109
73	जब किसी घर वालों के यहाँ रोज़ा इफ्तार करे तो उन के लिए यह दुआ करे ।	110
74	दुआ जब खाना हाज़िर हो और रोज़ादार रोज़ा न खोले ।	110
75	रोज़ादार को जब कोई गाली दे तो क्या कहे ?	110
76	पहला फल् देखने के समय की दुआ ।	111
77	छींक की दुआ ।	111
78	जब काफिर छींकते समय अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो उस के लिए क्या कहा जाए ?	112
79	शादी करने वाले के लिए दुआ ।	112
80	शादी करने और सवारी खरीदने की दुआ ।	113
81	जिमाअ़ (संम्भोग) से पहल की दुआ ।	113
82	गुस्सा आजाने के वक़्त की दुआ ।	114
83	किसी बीमारी या मुसीबत् में मुब्तला आदमी को देखे तो यह दुआ पढ़े ।	114
84	मजलिस में पढ़ने की दुआ ।	114
85	मजलिस् के गुनाह दूर करने की दुआ ।	115

86	जो आदमी कहे (ग़फरल्लाहु लका)) अर्थात अल्लाह तुझे बख़्श दे उस के लिए दुआ ।	115
87	जो अच्छा सुलूक करे उस के लिए दुआ ।	116
88	वह दुआ जिसे पढ़ने से आदमी दज्जाल के फित्ने से महफूज़ रहता है ।	116
89	जो आदमी कहे मुझे तुम से अल्लाह के लिए मोहब्बत् है उस के लिए दुआ ।	116
90	जो आदमी तुम्हारे लिए अपना माल पेश करे उस के लिए दुआ ।	117
91	क़र्ज़ (ऋण) अदा करते समय क़र्ज देने वाले के लिए दुआ ।	117
92	शिर्क से डरने की दुआ ।	118
93	जो आदमी कहेः ''अल्लाह तुझे बरकत दे'' तो उसके लिए क्या दुआ की जाये.....	118
94	बदफाली को नापसन्द करने की दुआ.....	118
95	सवारी पर सवार होने की दुआ	119
96	सफर की दुआ	120
97	किसी गावँ या शहर में दाखिल् होने की दुआ	121
98	बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ	122
99	सवारी के फिसल्ने या गिरने के समय की दुआा	122
100	मुसाफिर की दुआ मुक़ीम के लिए	122
101	मुक़ीम की दुआ मुसाफिर के लिए ।	123
102	सफर के दौरान तक्बीर और तस्बीह़	123
103	मुसाफिर की दुआ जब सुबह़ करे ।	124
104	सफर के दौरान जब मुसाफिर किसी मन्ज़िल् (मुक़ाम) पर उतरे उस समय की दुआ	124
105	सफर से वापसी की दुआ ।	124
106	खुश करने वाली या ना पसन्दीदा चीज़ पेश आने	125

	पर क्या कहे ?	
107	रसूलुल्लाह ﷺ पर दरूद की फ़ज़ीलत्	126
108	सलाम को फैलाना ।	127
109	जब काफिर सलाम कहे तो उसे किस तरह जवाब दिया जाए ।	129
110	मुर्ग़ बोलने और गदहा हींगने के समय की दुआ ।	129
111	रात में कुत्तों का भूँकना (तथा गदहों का हींगना) सुनकर यह दुआ पढ़े ।	130
112	उस आदमी के लिए दुआ जिसे तुम ने बुरा भला कहा (या गाली दी) हो ।	130
113	कोई मुस्लिम जब किसी मुस्लिम की तारीफ करे तो क्या कहे ?	131
114	जब किसी मुसलमान आदमी की तारीफ की जाए तो वह क्या कहे ?	131
115	ह़ज्ज या उमरा का इह़राम बाँधने वाला कैसे तल्बिया कहे?	132
116	ह़जरे अस्वद् वाले कोने पर अल्लाहु अक्बर कहना चाहिए ।	132
117	रुक्ने यमानी और ह़ज्रे अस्वद् के दरमियान की दुआ ।	133
118	सफा और मरवा पर ठहरने की दुआ ।	133
119	अरफा (९जुल्ह़िज्जा) के दिन की दुआ ।	134
120	मश्अरे हराम के पास की दुआ	135
121	जमरात की रमी के समय हर कंकरी के साथ तक्बीर (अल्लाहु अक्बर) कहना	135
122	तअज्जुब या खुशी के समय की दुआ ।	136
123	खुशखबरी मिलने पर क्या करे ?	136
124	जो आदमी अपने बदन् में दर्द महसूस करे वह कौन	137

	सी दुआ पढ़े ?	
125	जिस को अपनी ही नज़र लगने का भय हो तो वह क्या करे ?	137
126	घबराहट के समय क्या कहा जाए	138
127	आम जानवर या ऊँट ज़बह करते वक़्त की दुआ ।	138
128	सरकश् शैतानों की खुफिया तदबीरों के तोड़ के लिए दुआ ।	138
129	तौबा व इस्तिग़फार करना (अल्लाह से बख़्शिश् और माफी माँगना)	138
130	तस्बीह (सुब्हानल्लाह), तहमीद (अल्हमदुलिल्लाह), तहलील (ला इलाहा इल्लल्लाह) और तकबीर (अल्लाहु अक्बर कहने) की फज़ीलत	142
131	नबी ﷺ तस्बीह कैसे पढ़ते थे?	148
132	अनेक प्रकार की नेकिया और जामिअ आदाब	148

بسم الله الرحمن الرحيم

प्राक्कथन

إن الحمد لله، نحمده، ونستعينه، ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضـــلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله صلى الله عليه وعلى أصحابه ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين وسلم تسليماً كثيراً، أما بعد:

यह संछिप्त किताब जो आप के हाथों में है मेरी एक अन्य किताब (**الذكر والدعاء والعلاج بالرقى من الكتاب والسنة**) का सारांश है जिस में मैं ने दुआओं के भाग को संछिप्त रूप में प्रस्तुत किया है; ताकि इसे सफर में साथ रखना आसान हो।

इस किताब में मैं ने केवल दुआओं के मतन को ज़िक्र किया है और असल किताब में उल्लिखित हवालों में से केवल एक या दो हवालों पर बस किया है। जिसे सहाबी (रावी) की जानकारी या अधिक तख़रीज (हवालों) के जानने की इच्छा हो वह असल किताब की ओर पलटे।

मैं अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से उसके अच्छे नामों और उच्च गुणों (सिफात) के वास्ते से दुआ करता हूँ कि वह इस काम को अपनी

रज़ामन्दी के लिए खालिस बनाये, इस से मुझे मेरी ज़िन्दगी में और मेरे मरने के बाद (भी) लाभ पहुँचाए और जो भी इस किताब को पढ़े या छपवाए या इसके प्रकाशन का कारण बने इसे उसके लिए फायदामन्द बनाये। बेशक अल्लाह पाक ही इसका मालिक और इस पर क़ादिर है।

وصلى الله على نبينا محمد وعلى آله وأصحابه، ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

लेखक

दिनाँकः सफ़र १४०६ हिज्री

ज़िक्र की फ़ज़ीलत

अल्लाह तआला ने फरमाया :–

﴿ فَٱذۡكُرُونِيٓ أَذۡكُرۡكُمۡ وَٱشۡكُرُواْ لِي وَلَا تَكۡفُرُونِ ﴾

(البقرة: ١٥٢)

तुम मेरा ज़िक्र करो मैं भी तुम्हें याद करुँगा और मेरा शुक्र करो और मेरी नाशुकरी न करो । (सूरा बक़राः १५२)

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ ذِكۡرٗا كَثِيرٗا ﴿٤١﴾ ﴾

(الأحزاب: ٤١)

ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करो । (अह्ज़ाब ४१)

﴿ وَٱلذَّٰكِرِينَ ٱللَّهَ كَثِيرٗا وَٱلذَّٰكِرَٰتِ أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُم مَّغۡفِرَةٗ وَأَجۡرًا عَظِيمَۢا ﴿٣٥﴾ ﴾ (الأحزاب: ٣٥)

अल्लाह को बहुत याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें अल्लाह ने उन के लिए बख़्शिश् और बहुत बड़ा बदला (पुण्य) तैयार कर रखा है । (सूरा अह्ज़ाब ३५)

﴿ وَٱذۡكُر رَّبَّكَ فِي نَفۡسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ ٱلۡجَهۡرِ مِنَ ٱلۡقَوۡلِ بِٱلۡغُدُوِّ وَٱلۡأٓصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ ٱلۡغَٰفِلِينَ ﴾

(الأعراف: ٢٠٥)

और अपने रब् को अपने मन में आजिज़ी और डर से बुलन्द आवाज़ के बिना सुबह़ व शाम याद कर और ग़ाफिलों में से मत् हो जा। (सूरा आराफ: २०५)

وَقَالَ ﷺ: ((مَثَلُ الَّذِىْ يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِىْ لاَيَذْكُرُ رَبَّهُ مَثَلُ الْحَىِّ وَالْمَيِّتِ)) (**البخارى مع الفتح ٢٠٨/١١**)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया: ((उस आदमी की मिसाल जो अपने रब को याद करता है और जो अपने रब को याद नहीं करता ज़िन्दा और मुर्दा की तरह् है। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ११/२०८)

मुस्लिम की रिवायत में है:

((مثل البيت الذي يذكر الله فيه والبيت الذي لا يذكر الله فيه مثل الحي والميت)) (المسلم١/٥٣٩)

उस घर की मिसाल जिस में अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है और जिस घर में अल्लाह ज़िक्र नहीं किया जाता ज़िन्दा और मुर्दा की तरह है। (मुस्लिम १/५३६)

وَقَالَ ﷺ : ((أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ ، وَأَزْكَاهَاعِنْدَ مَلِيْكِكُمْ ، وَأَرْفَعِهَافِيْ دَرَجَاتِكُمْ ، وَخَيْرٍلَكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالْوَرِقِ ، وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ أَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوا أَعْنَاقَهُمْ وَيَضْرِبُوْا أَعْنَاقَكُمْ ؟)) قَالُوْا بَلَى. قَالَ : ((ذِكْرُ اللهِ تَعَالَى))

रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम् ने फरमाया: (क्या मैं तुम्हें वह काम न बताऊँ जो तुम्हारे सब कामों से बेहतर , तुम्हारे मालिक के निकट सब से पवित्र, तुम्हारे मर्तबा में सब से बुलन्द और तुम्हारे सोना चाँदी ख़र्च करने से बेहतर है और तुम्हारे लिए इस से भी बेहतर है कि तुम अपने दुश्मनों से मिलो तुम उनकी गर्दनें काटो और वे तुम्हारी गर्दनें काटें । सहाबा ने कहा क्यों नहीं जरुर बतलाईए । आप ने फरमाया अल्लाह तआला को याद करना ।

(अत-त्रिमिजी ५/४५९ इब्ने माजा २/१२४५ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३१६ और सहीह अत-त्रिमिजी ३ /१३९)

وَقَالَ ﷺ : يَقُوْلُ اللهُ تَعَالَى :" أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِيْ بِيْ ، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِيْ ، فَإِنْ ذَكَرَنِيْ فِيْ نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِيْ نَفْسِيْ ، وَإِنْ ذَكَرَنِيْ فِيْ مَلإٍ ذَكَرْتُهُ فِيْ مَلإٍ خَيْرٍمِنْهُمْ ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ شِبْراً تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِراعاً وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعاً تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعاً ،وَإِنْ أَتَانِيْ يَمْشِيْ أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً".

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है: ((मैं अपने बन्दे के उस गुमान के मुताबिक़ हूँ जो वह मेरे बारे में रखता है । और जब वह मुझे याद करता है तो मैं उस के साथ होता हूँ । यदि वह मुझे

अपने दिल में याद करता है तो मैं उसे अपने दिल में याद करता हूँ और अगर वह किसी जमाअत् में मुझे याद करता है तो मैं उसे ऐसी जमाअत् में याद करता हूँ जो उस से बेहतर है और अगर वह एक बालिश्त मेरे क़रीब आए तो मैं एक हाथ उस के क़रीब आता हूँ और अगर वह एक हाथ मेरे क़रीब आए तो मैं दोनों हाथ फैलाने के बराबर उस के क़रीब आता हूँ और अगर वह चलकर मेरे पास आए तो मैं दौड़ कर उस के पास आता हूँ। (बुखारी ८/१७१ मुस्लिम ४/२०६१ और शब्द बुखारी के हैं)

وَعَنْ عَبْدِاللهِ بُسْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاًقَالَ : يَارَسُوْلَ اللهِ إِنَّ شَرَائِعَ الْإِسْلاَمِ قَدْ كَثُرَتْ عَلَيَّ فَأَخْبِرْنِيْ بِشَيءٍ أَتَشَبَّثُ بِهِ . قَالَ : ((لاَيَزَالُ لِسَانُكَ رَطْباً مِنْ ذِكْرِاللهِ))

और अब्दुल्लाह बिन बुस्र फरमाते हैं कि एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मुझ पर इस्लाम के अह्काम बहुत ज्यादा हो गए हैं। इस लिए आप मुझे कोई एक चीज़ बताएँ जिसे मैं मज़बूती के साथ पकड़ लूँ। आप ने फरमाया कि तेरी ज़बान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर् रहे।

(अत-त्रिमिज़ी ५/४५८ इब्ने माजा २/१२४६ और देखिए सहीहुत -त्रिमिज़ी ३/१३९ और सहीह इब्ने माजा २/३१७)

وَقَالَ ﷺ: ((مَنْ قَرَأَ حَرْفاً مِنْ كِتَابِ اللهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ ، وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا ، لاَ أَقُوْلُ :﴿ الم ﴾ حَرْفٌ وَلكِنْ: أَلِفٌ حَرْفٌ ، وَلاَمٌ حَرْفٌ ، وَمِيْمٌ حَرْفٌ))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया जो आदमी अल्लाह की किताब में से एक ह़र्फ (शब्द) पढ़े उस के लिए इस के बदले में एक नेकी मिलती है और एक नेकी (कम से कम) दस गुना कर दी जाती है। मैं यह नहीं कहता कि अलिफ् लाम मीम एक ह़र्फ (शब्द) है बल्कि अलिफ् एक ह़र्फ है लाम एक ह़र्फ है और मीम एक ह़र्फ है । (त्रिमिज़ी ५/१७५ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/९, सह़ीहुल् जामिइस्सग़ीर ५/३४०)

وَعَنْ عُقْبَةَبْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَنَحْنُ فِي الصُّفَّةِ فَقَالَ : ((أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنْ يَغْدُوَ كُلَّ يَوْمٍ إِلَى بُطْحَانَ أَوْ إِلَى الْعَقِيْقِ فَيَأْتِيَ مِنْهُ بِنَاقَتَيْنِ كَوْمَاوَيْنِ فِيْ غَيْرِ إِثْمٍ وَلاَ قَطِيْعَةِ رَحِمٍ ؟)) فَقُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ نُحِبُّ ذٰلِكَ . قَالَ : ((أَفَلاَ يَغْدُو أَحَدُكُمْ إِلَى الْمَسْجِدِ فَيَعْلَمَ ، أَوْ يَقْرَأَ آيَتَيْنِ مِنْ كِتَابِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ خَيْرٌ لَهُ مِنْ نَاقَتَيْنِ، وَثَلاَثٌ خَيْرٌ لَهُ مِنْ ثَلاَثٍ ، وَأَرْبَعٌ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَرْبَعٍ ، وَمِنْ أَعْدَادِهِنَّ مِنَ الْإِبِلِ))

उक़्बा बिन् आ़मिर (رضي الله عنه) फरमाते हैं कि हम सुफ्फा में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् घर से निकले और फरमाया ((तुम में से कौन है जिसे यह पसन्द हो कि हर दिन बुत्हान या अ़क़ीक़ वादी की ओर जाए और वहाँ से बड़ी बड़ी कौहानों वाली दो ऊँटनियाँ लेकर आए और उसे उस में न कोई गुनाह हो और न रिश्तों नातों को तोड़ना ।)) हम ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल हम सभी लोग यह पसन्द करते हैं । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया तो तुम में से कोई मस्जिद में क्यों नहीं जाता ताकि अल्लाह की किताब की

दो आयतें सीखे या पढ़े, यह उस के लिए दो ऊँटनियों से बेहतर हैं, तीन आयतें हों तो तीन ऊँटनियों से बेहतर हैं और चार आयतें चार ऊँटनियों से, इसी प्रकार जितनी आयतें हों उतने ऊँटों से बेहतर हैं। (मुस्लिम १/५५३)

وَقَالَ ﷺ:((مَنْ قَعَدَ مَقْعَداً لَمْ يَذْكُرِاللهَ فِيْهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللهِ تِرَةٌ ، وَمَنِ اضْطَجَعَ مَضْجَعاً لَمْ يَذْكُرِ اللهَ فِيْهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللهِ تِرَةٌ))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया जो शख्स किसी ऐसी जगह बैठा जिस में उस ने अल्लाह को याद न किया तो वह अल्लाह की तरफ् से उस के लिए नुक्सान का सबब होगी और जो शख्स किसी जगह लेटा जिस में उस ने अल्लाह को याद न किया तो वह (लेटना) उस के लिए अल्लाह की ओर से नुकसानदेह साबित होगा।

(अबूदाऊद ४/२६४आदि और देखिए सहीहुल् जामिअ् ५/३४२)

وَقَالَ ﷺ: ((مَاجَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِساً لَمْ يَذْكُرُوا اللهَ فِيْهِ ، وَلَمْ يُصَلُّوا عَلَى نَبِيِّهِمْ إِلاَّكَانَ عَلَيْهِمْ تِرَةٌ ، فَإِنْ شَاءَ عَذَّبَهُمْ وَإِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُمْ

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमायाः

जब कोई क़ौम किसी मजलिस में बैठे और उस जगह अल्लाह को याद न करे और अपने नबी पर दरुद न पढ़े तो ऐसी मजलिस उन के लिए नुकसानदेह साबित होगी। फिर अगर अल्लाह चाहे तो ऐसी क़ौम को अज़ाब दे या उन्हें माफ कर दे। (त्रिमिज़ी और देखिए सहीह् त्रिमिज़ी ३/१४०)

وَقَالَ ﷺ: ((مَا مِنْ قَوْمٍ يَقُوْمُوْنَ مِنْ مَجْلِسٍ لاَيَذْكُرُوْنَ اللهَ فِيْـــهِ إِلاَّ قَامُوْا عَنْ مِثْلِ جِيْفَةِ حِمَارٍ وَكَانَ لَهُمْ حَسْرَةً))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया:

जब कोई क़ौम ऐसी मजलिस से उठती है जिस में उन्हों ने अल्लाह का ज़िक्र न किया हो तो वह गदहे की (बद्बूदार) लाश जैसी चीज़ से उठती है और वह मजलिस उन के लिए हसरत व नदामत का कारण होगी । (अबूदाऊद ४/२६४ , मुस्नद् अह्मद् २/३८९ और देखिए सह़ीहुल् जामिअ् ५/१७६)

1- नींद से जागने के बाद की दुआ़एं

1- ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ أَحْيَانَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ))

१. सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें मारने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की तरफ् उठकर जाना है ।

(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ११/११३ , मुस्लिम ४/२०८३)

2- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَشَرِيْكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ . سُبْحَانَ اللهِ ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلاَ إِلَـــهَ إِلاَّ اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ ، وَلاَ حَوْلَ وَلاَقُوَّةَ إِلاَّ بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ، رَبِّ اغْفِرْ لِىْ))

२. अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं , उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर

है । अल्लाह पाक है और सब तारीफ अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है और बुलन्दी और अज्मत् वाले अल्लाह की मदद् के बिना न किसी चीज़ से बचने की ताकत है और न कुछ करने की कुव्वत । ऐ मेरे रब मुझे बख्श दे ।

(जो आदमी रात को किसी भी समय जागे और जागने के बाद यह दुआ पढ़े तो उसे बख़्श दिया जाता है, फिर यदि कोई दुआ करे तो उस की दुआ क़बूल होती है, फिर यदि उठ खड़ा हो वुज़ू करे और नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ क़बूल होती है । बुखारी फत्हुल्बारी के साथ ३/३९ , शब्द इब्ने माजा के हैं देखिए सहीह इब्ने माजा २/३३५)

٣- ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَافَانِىْ فِىْ جَسَدِىْ ، وَرَدَّ عَلَـيَّ رُوْحِـىْ ، وَأَذِنَ لِيْ بِذِكْرِهِ)) .

३. सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने मेरे बदन् को हर क़िस्म की बीमारियों से पाक रखा और मेरी जान को मेरे बदन् में लौटा दी और मुझे अपने ज़िक्र की इजाज़त दी ।

(त्रिमिज़ी ५/४७३ और सही त्रिमिजी ३/१४४)

٤- ﴿ إِنَّ فِى خَلْقِ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱخْتِلَـٰفِ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ لَأَيَـٰتٍ لِّأُو۟لِى ٱلْأَلْبَـٰبِ ﴿١٩٠﴾ ٱلَّذِينَ يَذْكُرُونَ ٱللَّهَ قِيَـٰمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِى خَلْقِ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَـٰذَا بَـٰطِلًا

سُبۡحَٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَآ إِنَّكَ مَن تُدۡخِلِ
ٱلنَّارَ فَقَدۡ أَخۡزَيۡتَهُۥۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنۡ أَنصَارٖ ﴿١٩٢﴾ رَّبَّنَآ
إِنَّنَا سَمِعۡنَا مُنَادِيٗا يُنَادِي لِلۡإِيمَٰنِ أَنۡ ءَامِنُواْ بِرَبِّكُمۡ
فَـَٔامَنَّاۚ رَبَّنَا فَٱغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرۡ عَنَّا سَيِّـَٔاتِنَا
وَتَوَفَّنَا مَعَ ٱلۡأَبۡرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا وَءَاتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ
رُسُلِكَ وَلَا تُخۡزِنَا يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِۗ إِنَّكَ لَا تُخۡلِفُ ٱلۡمِيعَادَ
﴿١٩٤﴾ فَٱسۡتَجَابَ لَهُمۡ رَبُّهُمۡ أَنِّي لَآ أُضِيعُ عَمَلَ عَٰمِلٖ
مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوۡ أُنثَىٰۖ بَعۡضُكُم مِّنۢ بَعۡضٖۖ فَٱلَّذِينَ
هَاجَرُواْ وَأُخۡرِجُواْ مِن دِيَٰرِهِمۡ وَأُوذُواْ فِي سَبِيلِي وَقَٰتَلُواْ
وَقُتِلُواْ لَأُكَفِّرَنَّ عَنۡهُمۡ سَيِّـَٔاتِهِمۡ وَلَأُدۡخِلَنَّهُمۡ جَنَّٰتٖ تَجۡرِي
مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ ثَوَابٗا مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ عِندَهُۥ

حُسۡنُ ٱلثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ فِي
ٱلۡبِلَٰدِ ﴿١٩٦﴾ مَتَٰعٞ قَلِيلٞ ثُمَّ مَأۡوَىٰهُمۡ جَهَنَّمُۚ وَبِئۡسَ ٱلۡمِهَادُ
﴿١٩٧﴾ لَٰكِنِ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوۡاْ رَبَّهُمۡ لَهُمۡ جَنَّٰتٞ تَجۡرِي مِن
تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلٗا مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِۗ وَمَا
عِندَ ٱللَّهِ خَيۡرٞ لِّلۡأَبۡرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنۡ أَهۡلِ ٱلۡكِتَٰبِ
لَمَن يُؤۡمِنُ بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡكُمۡ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِمۡ
خَٰشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشۡتَرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ ثَمَنٗا قَلِيلًاۚ أُوْلَٰٓئِكَ
لَهُمۡ أَجۡرُهُمۡ عِندَ رَبِّهِمۡۗ إِنَّ ٱللَّهَ سَرِيعُ ٱلۡحِسَابِ
﴿١٩٩﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱصۡبِرُواْ وَصَابِرُواْ وَرَابِطُواْ
وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾ ﴾ (آل عمران١٩٠-٢٠٠)

४. बेशक् आसमानों और ज़मीन की पैदाइश् और रात दिन के हेर-फेर में अक़्ल् वालों के लिए निशानियाँ हैं। जो खड़े, बैठे, और लेटे हर ह़ालत् में अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों

और ज़मीन की पैदाइश् में सोच-विचार करते हैं और कहते हैं ऐ हमारे रब तूने इन्हें बेमक़्सद नहीं पैदा किया है । तू पाक है अत: हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले । ऐ हमारे रब जिसको तू ने जहन्नम् में डाला तो अवश्य उसे तू ने रुसवा किया और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं । ऐ हमारे रब हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान के लिए पुकार रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आए । ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को माफ फरमा दे और हमारे गुनाहों को हम से मिटा दे और मरने के बाद हमें नेक बन्दों के साथ कर दे । ऐ हमारे रब तूने जिन जिन चीज़ों के बारे में हम से अपने पैग़म्बरों के ज़बानी वादे किए हैं वह हमें अता कर और क़ियामत् के दिन हमें रुसवा न करना । इस में कुछ शक् नहीं कि तू वादा ख़िलाफी नहीं करता । चुनांचे उनके रब ने उनकी दुआ क़बूल कर ली कि तुम में से किसी काम करने वाले के काम को चाहे वह मर्द हो या औरत मैं कभी नष्ट नहीं करता, तुम आपस में एक दूसरे से हो, इसलिए वह लोग जिन्हों ने हिज़्रत की और अपने घरों से निकाल दिये गये और जिन्हें मेरी राह में कष्ट दी गई और जिन्हों ने जिहाद किया और शहीद किए गए, मैं अवश्य उनकी बुराईयाँ उनसे दूर कर दूँगा और अवश्य उन्हें उन जन्नतों में ले जाऊँगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, यह है सवाब (पुण्य) अल्लाह की ओर से और अल्लाह ही के पास बेहतरीन बदला है। तुझे काफिरों का नगरों में चलना फिरना धोखे में न डाल दे। यह तो बहुत ही थोड़ा लाभ है, उसके बाद उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा स्थान है। लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे उनके लिए जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, उन में वह हमेशा रहें गे यह मेहमानी है अल्लाह की ओर से

और नेक लोगों के लिए जो कुछ अल्लाह तआला के पास है वह बहुत ही बेहतर है। अवश्य अहले किताब में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह तआला पर ईमान लाते हैं और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है और उनकी ओर जो उतरा उस पर भी, अल्लाह तआला से डरते हैं और अल्लाह तआला की आयतों को थोड़ी-थोड़ी क़ीमत पर बेचते भी नहीं, उनका बदला उनके रब के पास है, निःसन्देह अल्लाह तआला जल्द हिसाब लेने वाला है। ऐ ईमान वालो! तुम डटे रहो और एक दूसरे को थामे रखो और जिहाद के लिए तैयार रहो और अल्लाह तआला से डरते रहो ताकि तुम कामयाब हो। (आल इम्रानः१६०-२००)

(बुख़ारी फत्हुल् बारी के साथ ८/२३७ , मुस्लिम १/५३०)

2- कपड़ा पहनने की दुआ

5- ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ كَسَانِىْ هَذَا (الثَّوبَ) وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَــوْلٍ مِنِّىْ وَلَاقُوَّةٍ))

५. सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे यह (कपड़ा) पहनाया और मेरी किसी ताक़त् के बग़ैर मुझे अता किया ।

(अबूदाऊद , त्रिमिज़ी , इब्ने माजा और देखिए इर्वाउल् ग़लील् ७/४७)

3- नया कपड़ा पहनने की दुआ

6- ((اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ كَسَوْتَنِيْهِ ، أَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِهِ وَخَيْرِ مَــا صُنِعَ لَهُ ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّمَاصُنِعَ لَهُ))

६. ऐ अल्लाह तेरे ही लिए तारीफ है तू ने मुझे यह पहनाया , मैं तुझ से इस की भलाई और जिस चीज़ के लिए इसे बनाया गया है उस की भलाई चाहता हूँ। और इस की बुराई से और जिस चीज़ के लिए इसे बनाया गया है उस की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ । (अबूदाऊद ,त्रिमिजी , बग़वी और देखिए शैख़ अल्बानी (रहि) की किताब मुख़्तसर शमाइल त्रिमिजी पृष्ठ ४७)

4- नया कपड़ा पहनने वाले के लिए दुआ

7- ((تُبْلِيْ وَيُخْلِفُ اللهُ تَعَالَى))

७ . तू इसे पुराना करे और अल्लाह तआला इस के बाद और ज़्यादा कपड़े अता करे ।

(अबूदाऊद ४/४१, देखिए सहीह अबू दाऊद २/७६०)

8- إِلْبِسْ جَدِيْداً ، وَعِشْ حَمِيْداً ، وَمُتْ شَهِيْداً .

८ . नया कपड़ा पहन् , तारीफ वाली ज़िन्दगी गुज़ार और शहीद हो के मर । (इब्ने माजा २/११७८ बग़वी १२/४१ और देखिए सही इब्ने माजा २/२७५)

5 – कपडा़ उतारे तो क्या पढ़े ?

9- ((بِسْمِ اللهِ))

९ . अल्लाह के नाम के साथ । (त्रिमिजी २/५०५ सहीहुल् जामिअ् ३/२०३ और देखिए अल्इर्वा हदीस न०–४९)

6- बैतुल-खला (शौचालय) में दाख़िल् होने की दुआ

10- (([بِسْمِ اللهِ] اللّهُمَّ إِنِّىْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ))

१०. [अल्लाह के नाम से] ऐ अल्लाह मैं ख़बीसों और ख़बीसनियों (नर और मादा शैतानों) से तेरी पनाह चाहता हूँ। (बुखारी १/४५ मुस्लिम १/२८३ शुरु में बिस्मिल्लाह की वृद्धि सुनन् सअीद बिन् मन्सूर में है। देखिए फत्हुल्बारी १/२४४

7- बैतुल-खला (शौचालय) से निकलने की दुआ

11- ((غُفْرَانَكَ))

११. (ऐ अल्लाह मैं) तेरी बख़्शिश् माँगता हूँ।

(त्रिमिजी , अबूदाऊद , इब्ने माजा, अमलुल यौम वल-लैला नसाई, देखिए तखरीज ज़ादुल मआद २/३८७)

8- वुज़ू से पहले की दुआ

12-((بِسْمِ اللهِ))

१२. अल्लाह के नाम से शुरु करता हूँ।

(अबूदाऊद , इब्ने माजा , मुस्नद् अह्मद्, देखिए इर्वाउल गलील १/१२२)

9-वुज़ू से फारिग़ होने के बाद की दुआ

13- ((أَشْهَدُ أَنْ لاَإِلهَ إِلاَّاللهُ وَحْدَهُ لاَشَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّـــداً عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ))

१३. मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है , उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बन्दे और रसूल हैं। (मुस्लिम १/२०९)

14- ((اَللَّهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ))

१४. ऐ अल्लाह मुझे बहुत अधिक तौबा करने वालों में से बना दे और मुझे पाक साफ रहने वालों में से बना दे।

(त्रिमिजी १/७८और देखिए सहीह त्रिमिज़ी १/१८)

15- ((سُبْحَانَكَ اَللّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لاَّ إِلهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ))

१५. ऐ अल्लाह तू हर ऐब से पाक है और तेरे ही लिए सब तारीफ है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। मैं तुझ से माफी चाहता हूँ और तुझ ही से तौबा करता हूँ। (इमाम नसाई की किताब अमलुल् यौमि वल्लैला पृष्ठ १७३ और देखिए इर्वाउल् गलील १/१३५ तथा २/९४)

10- घर से निकलते समय की दुआ

16- ((بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ وَلاَحَوْلَ وَلاَقُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ))

१६. अल्लाह के नाम से । मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया और अल्लाह की मदद् के बिना न किसी चीज़ से बचने की हिम्मत है न कुछ करने की ताक़त । (अबूदाऊद ४/३२५ , त्रिमिजी ५/४९० देखिए सहीह़ त्रिमिजी ३/१५१)

17- ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ أَنْ أَضِلَّ ، أَوْ أُضَلَّ ، أَوْ أَزِلَّ ، أَوْ أُزَلَّ ، أَوْ أَظْلِمَ ، أَوْ أُظْلَمَ ، أَوْ أَجْهَلَ ، أَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ))

१७. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस बात से कि गुमराह हो जाऊँ या मुझे गुमराह किया जाए या मैं फिसल् जाऊँ या मुझे फिसलाया जाए या मैं किसी पर जुल्म करुँ या कोई मुझ पर जुल्म करे या मैं किसी पर जिहालत् व नादानी करुँ या कोई मुझ पर जिहालत् व नादानी करे ।

(अबूदाऊद , त्रिमिजी , निसाई , इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५२ और सहीह़ इब्ने माजा २/३३६)

11- घर में दाख़िल् होते समय की दुआ

18- ((بِسْمِ اللهِ وَلَجْنَا ، وَبِسْمِ اللهِ خَرَجْنَا ، وَعَلَى اللهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا))

१८. अल्लाह के नाम से हम दाख़िल् हुए , अल्लाह के नाम के साथ निकले और अपने रब अल्लाह ही पर हम ने भरोसा किया ।

फिर वह अपने घर वालों को सलाम करे।

(अबूदाऊद ४/३२५, अल्लामा इब्ने बाज़ ने तोहफतुल अख्यार में इस की सनद को हसन कहा है, देखिये पृष्ठ २८, और सहीह मुस्लिम में है कि: '' जब आदमी अपने घर में दाखिल होते समय और खाना खाते समय अल्लाह का ज़िक्र करता

है तो शैतान कहता है तुम्हारे लिए रात बिताने की जगह है न खाना''। मुस्लिम २०१८)

12-मस्जिद की तरफ् जाने की दुआ

19- ((اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْراً ، وَفِيْ لِسَانِيْ نُوْراً ، وَفِيْ سَمْعِيْ نُوْراً ، وَفِيْ بَصَرِيْ نُوْراً ، وَمِنْ فَوْقِيْ نُوْراً ، وَمِنْ تَحْتِيْ نُوْراً، وَعَنْ يَمِيْنِيْ نُوْراً ، وَعَنْ شِمَالِيْ نُوْراً ، وَمِنْ أَمَامِيْ نُوْراً ، وَمِنْ خَلْفِيْ نُوْراً ، وَاجْعَلْ فِيْ نَفْسِيْ نُوْراً ، وَأَعْظِمْ لِيْ نُوْراً ، وَعَظِّمْ لِيْ نُوْراً ، وَاجْعَلْ لِيْ نُوْراً ، وَاجْعَلْنِيْ نُوْراً ، اللّٰهُمَّ أَعْطِنِيْ نُوْراً ، وَاجْعَلْ فِيْ عَصَبِيْ نُوْراً، وَفِيْ لَحْمِيْ نُوْراً ، وَفِيْ دَمِيْ نُوْراً ، وَفِيْ شَعْرِيْ نُوْراً ، وَفِيْ بَشَرِيْ نُوْراً [اللَّهُمَّ اجْعَلْ لِيْ نُوْراً فِي قَبْرِي.. وَنُوْراً فِي عِظَامِي] [وَزِدْنِي نُوْراً، وَزِدْنِي نُوْراً، وَزِدْنِي نُوْراً] [وَهَبْ لِي نُوْراً عَلَىٰ نُوْرٍ]))

१९. ऐ अल्लाह मेरे दिल् में नूर बना दे और मेरी ज़बान में नूर बना दे और मेरे कानों में नूर बना दे और मेरी आँखों में नूर बना दे और मेरे ऊपर नूर बना दे और मेरे नीचे नूर बना दे और मेरे दाएँ और बाएँ नूर बना दे और मेरे आगे और पीछे नूर बना दे और मेरे प्राण में नूर भर दे और मेरे लिए नूर को विशाल और बहुत अधिक बड़ा बना दे और मेरे बदन में नूर भर दे और मुझे नूर बना दे । ऐ अल्लाह मुझे नूर अता कर और मेरी माँसपेशियों (पट्ठों) में नूर भर दे और मेरे गोश्त में नूर भर दे और मेरे खून में नूर पैदा कर दे और मेरे बालों में

नूर बना दे और मेरे चमड़े में नूर भर दे । (बुख़ारी ११/११६ हदीस न०– ६३१६, मुस्लिम १/५२६, ५२९, ५३०, हदीस न०–७६३)

{ऐ अल्लाह मेरी क़ब्र में मेरे लिए नूर बना दे और मेरी हड्डियों में भी नूर बना दे।} (त्रिमिज़ी हदीस न. ३४१६, ५/४८३)

{और मेरे नूर को बढ़ा दे, मेरे नूर को अधिक कर दे और मेरे नूर को बढ़ा दे।} (इसे इमाम बुखारी ने अदबुल-मुफ़रद हदीस न.६९५, पृष्ठ न.२५८ में रिवायत किया है, और अल्लामा अलबानी ने सहीहुल अदबिल-मुफरद हदीस न.५३६ में इसकी सनद को सहीह कहा है)

{और मुझे नूर पर नूर अता कर।} (इसे इब्ने हज्र ने फत्हुल बारी में ज़िक्र किया है और इब्ने आसिम की तरफ मन्सूब किया है कि उन्हों ने इसे किताबुद-दुआ में ज़िक्र किया है, देखिए फत्हुलबारी ११/११८ और कहा है कि मुख्तलिफ रिवायतों से (२५) चीज़ें जमा हो गईं।)

13- मस्जिद में दाख़िल् होने की दुआ

20- ((أَعُوْذُ بِاللهِ الْعَظِيمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ))(١) [بِسْمِ اللهِ وَالصَّلاَةُ](٢) [وَالسَّلاَمُ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ](٣) اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ))(٤).

२०. मैं अज़्मत् वाले अल्लाह की और उस के करीम चेहरे की और उस के हमेशा से रहने वाले राज्य की पनाह चाहता हूँ मर्दूद शैतान से । अल्लाह के नाम से (दाख़िल् होता हूँ) और रसूलुल्लाह ﷺ पर दरुद व सलाम हो । ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी रह़्मत् के दरवाज़े खोल दे । ((१) अबूदाऊद देखिए सह़ीहुल्जामिअ् ह़दीस न०–४५९१ (२) इबनुस्सुन्नी ह़दीस न०–८८ शैख़

अल्बानी (रहि) ने इसे हसन कहा है। (३) अबूदाऊद १/१२६ देखिए सहीहुल् जामिअ् १/५२८ (४) मुस्लिम १/४९४.

सुनन इब्ने माजा में फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस में है:

((اللهم اغفر لي ذنوبي وافتح لي أبواب رحمتك))

'' ऐ अल्लाह तू मेरे गुनाहों को बख्श दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।'' अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को इसके शवाहिद की बिना पर सहीह कहा है। देखिए सहीह इब्ने माजा १/१२८-१२९)

14 - मस्जिद से निकलने की दुआ

21- ((بِسْمِ اللهِ والصَّلاَةُ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ، اللّهُمَّ إِنِّىْ أَسْـئَلُكَ مِـنْ فَضْلِكَ ، اَللّهُمَّ اعْصِمْنِىْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ))

२१. अल्लाह के नाम के साथ और सलात व सलाम नाज़िल् हो रसूलुल्लाह ﷺ पर। ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरे फज्ल का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह मुझे मर्दूद शैतान से बचा। (पिछली हदीस न.२० की रिवायतों के हवाले देखिए और '' اَللّهُمَّ اعْصِمْنِىْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ'' का इज़ाफा इब्ने माजा ने किया है। देखिए सहीह इब्ने माजा १/१२९)

15 – अज़ान की दुआएँ

22 –मोअज़्ज़िन के जवाब में वही कलिमा कहे जो मोअज़्ज़िन् कह रहा हो लेकिन ((हैया अलस्सलात)) और ((हैया अलल् फलाह)) के जवाब में ((ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह)) कहे। (बुख़ारी १/१५२ मुस्लिम १/२८८)

23 - मोअज़्जिन् के ((अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह और अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह)) पढ़ने के बाद यह दुआ पढ़े:

((وَأَنَا أَشْهَدُ أَنْ لاَّ إِلهَ إِلاَّاللهُ وَحْدَهُ لاَشَرِيْكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّـــداً عَبْـــدُهُ وَرَسُوْلُهُ ((رَضِيْتُ بِاللّهِ رَبّاً، وَبِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلاً وَبِالْأِسْلاَمِ دِيْناً))

और मैं भी गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मोहम्मद ﷺ उस के बन्दे और रसूल हैं । मैं अल्लाह को अपना रब मानकर और मोहम्मद ﷺ को अपना रसूल मान कर और इस्लाम को अपना दीन मानकर राजी हूँ ।

(इब्ने खुजैमा १/२२० मुसिलम १/२९०)

24 – मोअज़्जिन् के जवाब से फारिग़् हो कर रसूलुल्लाह ﷺ पर सलात (दरुदे मसनून) पढ़े । (मुस्लिम १/२८८)

25–((أَللّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلاَةِ الْقَائِمَـــةِ آتِ مُحَمَّـــداً الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَاماً مَحْمُوْداً الَّذِىْ وَعَدتَّهُ [إِنَّكَ لاَ تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ]

२५. ऐ अल्लाह इस मुकम्मल् दावत् और क़ाईम् सलात के रब् । मुहम्मद ﷺ को वसीला और फज़ीलत् प्रदान कर और उन्हें उस मुक़ामे महमूद पर खड़ा कर जिस का तू ने उन से वादा किया है । बेशक् तू वादा खिलाफी नहीं करता ।

(बुख़ारी १/१५२, दोनों कोस्ट के बीच के शब्द बैहक़ी के हैं, १/४१० इस की सनद् को शैख़ बिन् बाज़ रहिमहुल्लाह ने तुहफ़तुल् अख़्यार पृष्ठ ३८ में हसन कहा है।)

26- अज़ान और इक़ामत् (तक्बीर) के बीच अपने लिए दुआ करे क्योंकि उस समय दुआ नहीं रद् की जाती । (त्रिमिजी, अबूदाऊद, अहमद, देखिए इर्वाउल् ग़लील १/२६२)

16 – नमाज़ शुरु करने की दुआएँ

अल्लाहु अक्बर् कह कर नमाज़ शुरु करे और इन दुआओं में से कोई दुआ पढ़े :

27– ((اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِىْ وَبَيْنَ خَطَايَاىَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ ، اللّٰهُمَّ نَقِّنِىْ مِنْ خَطَايَاىَ ، كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ ، اللّٰهُمَّ اغْسِلْنِى مِنْ خَطَايَاىَ ، بِالثَّلْجِ وَالْمَاءِ وَالْبَرَدِ))

२७ . ऐ अल्लाह मेरे और मेरे गुनाहों के बीच मशरिक़ और मग़रिब जितनी दूरी कर दे । ऐ अल्लाह मुझे मेरे गुनाहों से इस तरह पाक व साफ कर दे जिस तरह सफेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ किया जाता है । ऐ अल्लाह मुझे मेरे गुनाहों से बर्फ़, पानी और ओलों के साथ धो दे ।

(बुखारी १/१८१ मुस्लिम १/४१९)

28–((سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلاَ إِلَهَ غَيْرُكَ))

२८. ऐ अल्लाह तू पाक है और हर क़िस्म की तारीफ सिर्फ तेरे ही लिए है । बाबरकत् है तेरा नाम और बुलन्द है तेरी शान और तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं ।

(अबूदाऊद , त्रिमिजी , नसाई , इब्ने माजा और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी १/७७ और सहीह़ इब्ने माजा १/१३५)

29-((وَجَّهْتُ وجهي للذي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيْفاً وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ إِنَّ صلاتي ، وَنُسُكِيْ ، وَمَحْيَايَ ، وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، لاَ شَرِيْكَ لَهُ وَبِذلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ . اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لاَ إِلهَ إِلاَّ أَنْتَ . أَنتَ رَبِّيْ وَأَنَاعَبْدُكَ ، ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ جَمِيْعاً إِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلاَّ أَنْتَ . وَاهْدِنِيْ لِأَحْسَنِ الْأَخْلاَقِ لاَ يَهْدِيْ لِأَحْسَنِهَا إِلاَّ أَنْتَ ، وَاصْرِفْ عَنِّيْ سَيِّئَهَا، لاَيَصْرِفُ عَنِّيْ سَيِّئَهَا إِلاَّ أَنْتَ لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ ، وَالْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدَيْكَ والشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ)).

२९. मैं ने अपना चेहरा उस ज़ात की तरफ़ फेर लिया जिस ने आसमानों और ज़मीन को बनाया एक्सू (एकाग्रचित्) हो कर और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। मेरी नमाज़ मेरी क़ुरबानी , मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल् आलमीन के लिए है। उस का कोई शरीक नहीं और मुझे इसी अक़ीदे पर ईमान रखने का हुक्म दिया गया है और मैं मुसलमानों में से हूँ। ऐ अल्लाह तू ही बादशाह है, तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू ही मेरा रब् है और मैं तेरा बन्दा हूँ मैं ने अपने आप पर ज़ुल्म किया है और अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ। इस लिए मेरे सारे गुनाहों को बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई और गुनाहों को नहीं बख़्श सकता। और मुझे सब से अच्छे अख़लाक़ (स्वभाव)

की ओर हिदायत् दे और सब से अच्छे अख़लाक़ की ओर हिदायत् तेरे सिवा कोई नहीं दे सकता । ऐ अल्लाह मैं इबादत के लिए हाज़िर हूँ तेरी तारीफ के लिए हाज़िर हूँ और हर प्रकार की भलाई तेरे हाथों में है और बुराई की निसबत् तेरी तरफ् नहीं की जा सकती । मैं तेरी तौफीक़ से हूँ और तेरी ओर मुतवज्जेह हूँ, तू बरकत् वाला और बुलन्द है । मैं तुझ् से माफी माँगता हूँ और तौबा करता हूँ । (मुस्लिम १/५३४)

30-((اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِيْلَ ، وَمِيْكَائِيْلَ وَإِسْرَافِيْلَ فَاطِرَالسَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ، أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ . اِهْدِنِيْ لِمَااخْتُلِفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ إِنَّكَ تَهْدِيْ مِنْ تَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ))

३०. ऐ अल्लाह ! ऐ जिब्राईल , मीकाईल और इस्राफील के रब् आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले , ग़ायब् और हाजिर को जानने वाले! अपने बन्दों के बीच तू ही उस चीज़ के बारे में फैसिला करेगा जिस में वे इख़्तिलाफ करते थे । हक़् की जिन बातों में इख़्तिलाफ हो गया है तू अपनी इजाजत से मुझे सच्चाई की ओर हिदायत् दे दे । बेशक तू जिसे चाहता है सीधी राह की तरफ् हिदायत् देता है । (मुस्लिम १/५३४)

31-((اَللّٰهُ أَكْبَرُكَبِيْراً ، اَللّٰهُ أَكْبَرُ كَبِيْراً ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْراً ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْراً ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْراً ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْراً ، وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّأَصِيْلاً)) (तीन बार पढ़े) ((أَعُوْذُباللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ:مِنْ نَفْخِهِ، وَنَفْثِهِ، وَهَمْزِهِ)).

३१. अल्लाह सब से बड़ा है बहुत् बड़ा, अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा, अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा, और हर किस्म की तारीफ सिर्फ अल्लाह के लिए है बहुत ज़्यादा तारीफ, और हर किस्म की तारीफ सिर्फ अल्लाह के लिए है बहुत ज्यादा तारीफ और हर किस्म की तारीफ सिर्फ अल्लाह के लिए है बहुत ज्यादा तारीफ और मैं सुबह् व शाम अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ। (इस दुआ को तीन बार पढ़े) मैं अल्लाह की पनाह पकड़ता हूँ शैतान से उसकी फूँक से,उस के थुक्थुकाने से और उस के चोके से। (यानी शैतान के दुर्भावना, मक्र व फरेब और वसवसा से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ)

(अबूदाऊद १/२०३ , इब्ने माजा १/२६५ , मुस्नद् अह्मद् ४/८५ और मुस्लिम ने इसे इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत् किया है कि एक मर्तबा हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक आदमी ने कहा:

((अल्लाहु अक्बर् कबीरा वल्हम्दुलिल्लाहि कसीरा व सुब्हानल्लाहि बुक्रतौं व असीला))

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया फलाँ फलाँ कलिमात के साथ दुआ माँगने वाला कौन है ? हाजिर लोगों में से एक शख्स ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैं हूँ। आप ﷺ ने फरमाया मुझे इन कलिमात से तअ़ज्जुब् हुआ कि इन के लिए आसमान के दरवाज़े खोले गए। (मुस्लिम १/४२०)

रसूलुल्लाह ﷺ जब रात को तहज्जुद् के लिए उठते तो यह दुआ पढ़ते :

32-((اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُوْرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ ،[وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ] [وَلَكَ الْحَمْدُ لَكَ مُلْكُ

السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ] [وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ مَلِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ] [وَلَكَ الْحَمْدُ] [أَنْتَ الْحَقُّ ، وَوَعْدُكَ الْحَقُّ ، وَقَوْلُكَ الْحَقُّ، وَلِقَاءُ كَ الْحَقُّ ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ ، وَالنَّارُ حَقٌّ ، وَالنَّبِيُّونَ حَقٌّ ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ ، [اَللّٰهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ ، وَبِكَ آمَنْتُ ، وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ ، وَبِكَ خَاصَمْتُ ، وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ . فَاغْفِرْلِيْ مَاقَدَّمْتُ ، وَمَاأَخَّرْتُ ، وَمَا أَسْرَرْتُ ، وَمَا أَعْلَنْتُ] [أَنْتَ الْمُقَدِّمُ ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُلاَ إِلهَ إِلاَّ أَنْتَ] [أَنْتَ إِلهِيْ لاَ إِلهَ إِلاَّ أَنْتَ].

३२. ऐ अल्लाह तेरे लिए ही तारीफ है तू ही आसमानों और ज़मीन का नूर है और उन का भी (नूर है) जो उन में हैं और तेरे ही लिए सभी तारीफ है, तू ही आसमानों और ज़मीन को क़ाईम् रखने वाला है और उन को भी (क़ाईम् रखने वाला है) जो उन में हैं। और तेरे ही लिए हर क़िस्म की तारीफ है तू ही आसमानों और ज़मीन का रब् है और उन का भी (रब है) जो उन में हैं। और तेरे ही लिए तारीफ है तेरे ही लिए आसमानों तथा ज़मीन की बादशाही है और जो कुछ उन में हैं। और तेरे ही लिए हर क़िस्म की तारीफ है तू आसमानों तथा ज़मीन का बादशाह है। और हर किस्म की तारीफ केवल तेरे लिए है। तू हक़ है, तेरा वादा हक़ है, तेरी बात हक़ है, तूझ से मुलाक़ात हक़् है, जन्नत् हक़् है और जहन्नम् हक़् है और सारे पैग़म्बर हक़् हैं और मुहम्मद ﷺ भी हक़् हैं और क़यामत् हक़् है। ऐ अल्लाह मैं तेरे लिए मुसलमान हुआ और तुझ पर मैं ने भरोसा

किया और तुझी पर मैं ईमान लाया और तेरी ही तरफ् रुजूअ् किया और तेरी मदद् तथा तेरे भरोसे पर मैं ने दुश्मन् से झगड़ा किया और तुझ को अपना हाकिम् माना । इस लिए मेरे वह गुनाह बख़्श दे जो मैं ने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैं ने छिपा कर किया और जो मैं ने जाहिर में किया । तू ही सब से पहले था और तू ही बाद में भी रहेगा तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं । तू ही मेरा सच्चा माबूद है तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं । (बुखारी फत्हुल्बारी के साथ ३/३, ११/११६, १३/३७१,४२३, ४६५ मुस्लिम् १/५३२)

17 - रुकूअ् की दुआएँ

33-((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ))

३३. मेरा बडा रब् पाक है । (तीन बार पढ़े) (अबूदाऊद , त्रिमिजी , नसाई , इब्ने माजा ,अह्मद् और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी १/८३)

34- ((سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ))

३४. ऐ अल्लाह हमारे रब् तू पाक है । हर किस्म की तारीफ तेरे ही लिए है । ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे ।

(बुखारी १/ ९९ मुस्लिम १/३५०)

35-((سُبُّوْحٌ ، قُدُّوْسٌ ، رَبُّ الْمَلاَئِكَةِ وَالرُّوحِ))

३५. बहुत पाकीज़गी वाला , बहुत मुक़द्दस् है फरिश्तों तथा रुह़ (जिब्रील) का रब् । (मुस्लिम १/३५३, अबूदाऊद १/२३०)

36- ((اَللّٰهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ ، وَبِكَ آمَنْتُ ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، خَشَعَ لَكَ سَمْعِيْ ، وَبَصَرِيْ ، وَمُخِّيْ ، وَعَظْمِيْ ، وَعَصَبِيْ ، وَمَااسْتَقَلَّ بِهِ قَدَمِيْ))

३६. ऐ अल्लाह मैं तेरे ही लिए झुका (रुकूअ् किया) और तुझी पर ईमान लाया और तेरा ही फरमाँबरदार बना, और तेरे लिए विनीत हो गए (झुक् गए) मेरे कान , मेरी आँखें, मेरा मग़्ज़, (भेजा) मेरी हड्डियाँ, मेरे पट्ठे और (मेरा पूरा बदन) जिसे मेरे दोनों पैर उठाए हुए हैं ।

(मुस्लिम १/५३४, त्रिमिजी, नसाई , अबूदाऊद)

37- ((سُبْحَانَ ذِى الْجَبَرُوْتِ ، وَالْمَلَكُوْتِ ، وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظْمَةِ))

३७. पाक है बहुत ज़्यादा ताकत रखने वाला, बड़े मुल्क वाला और बड़ाई तथा अज्मत् वाला (अल्लाह) ।

(अबूदाऊद १/२३०, नसाई , अह्मद् और इसकी सनद हसन है)

18 - रुकूअ् से उठने की दुआएँ

38- ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ))

३८. सुन ली अल्लाह ने जिस ने उस की तारीफ की ।

(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ २/२८२)

39- ((رَبَّنَاوَلَكَ الْحَمْدُ، حَمْداً كَثِيْراً طَيِّباًمُبَارَكاً فِيْهِ)).

३९. ऐ हमारे रब तेरे ही लिए तमाम तारीफ है, बहुत अधिक पाकीज़ा तारीफ जिस में बरकत् की गई हो ।

(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ २/२८४)

40- ((مِلْءَ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءَ الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ . أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ . اَللّٰهُمَّ لاَمَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلاَمُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلاَ يَنْفَعُ ذَالْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))

४०. (ऐ हमारे रब) तेरे ही लिए तारीफ है आसमानों और ज़मीन भर और जो कुछ उन दोनों के बीच है उसके भर और इस के बाद जो तू चाहे उसके भर । तू तारीफ तथा बुज़ुर्गी वाला है । सब से सच्ची बात जो बन्दे ने कही यह है - और हम सब तेरे बन्दे हैं - ऐ अल्लाह जो तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं, और किसी शान वाले को उस की शान तेरे यहाँ कोई फायदा नहीं पहुँचा सकती । (मुस्लिम १/३४६)

19 - सज्दे की दुआएँ

41- ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلى))

४१. मेरा महान रब् पाक है । (तीन बार पढ़े)

(अबूदाऊद , त्रिमिज़ी, नसाई , इब्ने माजा, अह्मद और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी १/८३)

42-((سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ))

४२. पाक है तू ऐ अल्लाह ऐ हमारे रब् और हर क़िस्म की तारीफ तेरे ही लिए है । ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे ।

(बुख़ारी १/९९, मुस्लिम १/३५०)

43-((سُبُّوْحٌ ، قُدُّوْسٌ ، رَبُّ الْمَلاَئِكَةِ وَالرُّوْحِ))

४३ . बहुत ज्यादा पाक बहुत मुक़द्दस् है फरिश्तों तथा रुह़ (जिब्रील) का रब् । (मुस्लिम १/३५३, अबूदाऊद १/२३०)

44- ((اَللّٰهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ آمَنْتُ ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ ، سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ ، تَبَارَكَ اللهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ))

४४. ऐ अल्लाह मैं ने तेरे लिए ही सज्दा किया और तुझी पर ईमान लाया, तेरा ही फरमाँबरदार बना । मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सजदा किया जिस ने उसे पैदा किया, उस की सूरत् बनाई और कानों में सूराख़ बनाए और आँखों के शिगाफ बनाए । बर्कत् वाला है अल्लाह जो तमाम बनाने वालों से अच्छा है । (मुस्लिम १/५३४)

45- ((سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوْتِ ، وَالْمَلَكُوتِ ، وَالْكِبْرِيَاءِ ، وَالْعَظَمَةِ))

४५. पाक है बहुत ज़्यादा ताक़त रखने वाला , बड़े मुल्क वाला और बड़ाई और अज्मत् वाला (अल्लाह) ।

(अबूदाऊद १/२३०, नसाई , अह्मद् और अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद १/१६६ में सहीह कहा है।)

46-((اللّهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ كُلَّهُ ، دِقَّهُ وَجِلَّهُ ، وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ وَعَلاَنِيَتَهُ وَسِرَّهُ))

४६. ऐ अल्लाह मेरे छोटे ,बड़े , पहले, पिछले , ज़ाहिर और पोशीदा तमाम गुनाहों को बख़्श दे । (मुस्लिम १/३५०)

47- ((اَللّهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ ، لاَ أُحْصِيْ ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ))

४७. ऐ अल्लाह मैं तेरे ग़ुस्से से तेरी रज़ा की पनाह चाहता हूँ और तेरी सज़ा से तेरी माफी की पनाह चाहता हूँ । और मैं तुझ से तेरी पनाह चाहता हूँ । मैं पूरी तरह तेरी तारीफ नहीं कर सकता । तू उसी तरह है जिस तरह तू ने खुद् अपनी तारीफ की है । (मुस्लिम १/३५२)

20– दो सजदों के बीच बैठने की दुआएँ

48 -((رَبِّ اغْفِرْ لِيْ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ))

४८. ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे । ऐ मेरे रब् मुझे बख़्श दे ।

(अबूदाऊद १/२३१और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा १/१४८)

49- ((اَللّهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ، وَارْحَمْنِي ، وَاهْدِنِيْ ، وَاجْبُرْنِيْ ، وَعَافِنِيْ ، وَارْزُقْنِيْ ، وَارْفَعْنِيْ))

४९ . ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे और मुझ् पर रहम कर और मुझे हिदायत् दे और मेरे नुक़्सान पूरे कर दे और मुझे आ़फियत् दे और मुझे रोज़ी दे और मुझे बुलंन्द कर ।

(अबूदाऊद , त्रिमिजी , इब्ने माजा और देखिए सह़ीह़ त्रिमिजी १/९० , सह़ीह़ इब्ने माजा १/१४८)

21-सजदा तिलावत् की दुआ

50- ((سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ ﴿فَتَبَارَكَ اللهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ﴾))

५०. मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सजदा किया जिस ने उसे पैदा किया,और अपनी ताक़त् व क़ुव्वत से उस के कान में सुराख़ और आँखों के शिगाफ बनाए । बहुत बरकत् वाला है अल्लाह जो सब बनाने वालों से अच्छा है ।

(त्रिमिजी २/४७४, अह़मद् ६/३० और ह़ाकिम् ने इसे रिवायत् करके सह़ीह़ कहा है और इमाम ज़ह़बी ने इस बात की पुष्टि की है १/२२० और ((फतबारकल्लाहु अह़सनुल् ख़ालिक़ीन)) शब्द की वृद्धि भी ह़ाकिम् की है ।)

51- اَللّٰهُمَّ اكْتُبْ لِيْ بِهَا عِنْدَكَ أَجْراً ، وَضَعْ عَنِّيْ بِهَا وِزْراً ، وَاجْعَلْهَا لِيْ عِنْدَكَ ذُخْراً ، وَتَقَبَّلْهَا مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ

५१. ऐ अल्लाह इस सज्दे के बदले में मेरे लिए अपने पास सवाब लिख दे और इस के ज़रिये से मेरे ऊपर से गुनाहों का बोझ उतार दे और इसे मेरे लिए अपने पास नेकियों का खज़ाना बना दे और इसे मेरी तरफ् से इस तरह क़बूल कर ले जिस तरह् तूने अपने बन्दे दाऊद की ओर से क़बूल किया था ।

(त्रिमिज़ी २/४७३ और इमाम हाकिम् ने इसे रिवायत् करके सहीह़ कहा है और इमाम ज़हबी ने इस की पुष्टि की है १/२१९)

22 – तशह्हुद् की दुआ

52- اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ ، وَالصَّلَوَاتُ ، وَالطَّيِّبَاتُ ، السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَاالنَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ ، اَلسَّلاَمُ عَلَيْنَاوَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِيْنَ . أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدَهُ وَرَسُوْلُهُ.

५२. ज़बान , बदन् और माल के जरिये से की जाने वाली सारी इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं । सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह की रह्मत् और उस की बरकतें । सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर । मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाईक़ नहीं । और मैं गवाही देता हूँ कि मुहमम्द ﷺ उस के बन्दे और उस के रसूल हैं ।

(बुखारी फत्हुल् बारी के साथ १/१३ और मुस्लिम् १/३०१)

23- तशह्हुद के बाद नबी ﷺ पर दरुद

53-((اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَىٰ آلِ إِبْرَاهِيْمَ ، إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ ، اللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَىٰ آلِ إِبْرَاهِيْمَ ، إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ))

५३. ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल कर मुहम्मद ﷺ पर और मुहम्मद ﷺ की आल पर जिस तरह तू ने रहमत नाज़िल की इब्राहीम पर और इब्राहीम की औलाद पर, बेशक तू तारीफ वाला बुजुर्गी वाला है । ऐ अल्लाह बरकत् नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर और मुहम्मद ﷺ की आल पर जिस तरह त ूने बरकत् नाज़िल् की इब्राहीम पर और इब्राहीम की औलाद पर बेशक तू तारीफ और बुजुर्गी वाला है ।

(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ६/४०८)

54- ((اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَىٰ آلِ إِبْرَاهِيْمَ . وَبَارِكْ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَىٰ آلِ إِبْرَاهِيْمَ . إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ))

५४. ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल कर मुहम्मद ﷺ पर और आप ﷺ की बीवियों तथा औलाद पर जिस तरह तू ने रहमत नाज़िल की इब्राहीम की औलाद पर । और बरकत् नाज़िल् फरमा मुहम्मद् ﷺ पर और आप की बीवियों और औलाद पर जिस तरह बरकत् नाज़िल् की तू ने इब्राहीम की औलाद पर, बेशक तू तारीफ वाला बुजुर्गी वाला है । (बुखारी फत्हुल् बारी के साथ ६/४०७ और मुस्लिम १/३०६ शब्द मुस्लिम के हैं)

24 - आख़िरी तशह्हुद् के बाद और सलाम फेरने से पहले की दुआएँ

55- ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ القَبْرِ ، وَمِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ ، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ))

५५. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और जहन्नम् के अज़ाब से और ज़िन्दगी तथा मौत के फित्ने से और मसीह़ दज्जाल के फित्ने की बुराई से ।

(बुखारी २/१०२ और मुस्लिम १/४१२, और शब्द मुस्लिम के हैं)

56-((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ ، وَ أَعُوذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحَ الدَّجَّالِ ، وَ أَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ . اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوذُبِكَ مِنَ الْمأْثَمِ والْمَغْرَمِ))

५६. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और तेरी पनाह चाहता हूँ मसीह दज्जाल के फित्ने से और तेरी पनाह चाहता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फित्ने से । ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ गुनाह से और क़र्ज (ऋण) से ।

(बुख़ारी १/२०२ तथा मुस्लिम १/४१२)

57- اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْماً كَثِيْراً ، وَلاَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلاَّ أَنْتَ، فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ .

५७ . ऐ अल्लाह मैं ने अपनी जान पर बहुत जुल्म किया और तेरे सिवा कोई और गुनाहों को माफ नही कर सकता । इस लिए मुझे अपने ख़ास फज़ल से बख़्श दे और मुझ पर रहम कर । बेशक तू बख़्शने वाला बहुत ज्यादा रहम करने वाला है ।

(बुख़ारी ८/१६८ तथा मुस्लिम् ४/२०७८)

58- ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ مَاقَدَّمْتُ، وَمَاأَخَّرْتُ ، وَمَا أَسْـرَرْتُ ، وَمَـا أَعْلَنْتُ، وَمَا أَسْرَفْتُ ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّيْ . أَنْتَ الْمُقَدِّمُ ، وَأَنْـتَ الْمُوَخِّرُ لاَإِلهَ إِلاَّ أَنْتَ))

५८. ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे जो मैं ने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैं ने छिपाकर किया और जो मैं ने ज़ाहिर में किया और जो मैं ने ज्यादती की और जिसे तू मुझ से ज़्यादा जानता है । तू ही पहले करने वाला है तू ही पीछे करने वाला है । तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं ।

(मुस्लिम १/५३४)

59-((اَللّٰهُمَّ أَعِنِّيْ عَلَى ذِكْرِكَ ، وَشُكْرِكَ ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ))

५९. ऐ अल्लाह अपनी याद , अपने शुक्र और अपनी अच्छी इबादत् पर मेरी मदद् फरमा । (अबूदाऊद २/८६ तथा नसाई ३/५३ और अल्लामा अलबानी ने सहीह अबू दाऊद १/२८४ में इसे सहीह कहा है)

60-((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ ، وَ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُـبْنِ ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ ، وَ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الـدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ))

६०. ऐ अल्लाह मैं कन्जूसी से तेरी पनाह चाहता हूँ और बुज़्दिली से तेरी पनाह चाहता हूँ और इस बात से तेरी पनाह चाहता हूँ कि निकम्मी उम्र की तरफ लौटाया जाऊँ और मैं दुनिया के फित्ने और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ६/३५)

61-((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَ أَعُوْذُبِكَ مِنَ النّارِ))

६१. ऐ अल्लाह मैं तुझ् से जन्नत् का सवाल करता हूँ और जहन्नम् से तेरी पनाह चाहता हूँ।

(अबूदाऊद और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा २/३२८)

62- ((اَللّٰهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبَ وَقُدْرَتِكَ عَلَي الْخَلْقِ أَحْيِنِيْ مَا عَلِمْتَ الْحَيَاةَ خَيْراً لِيْ وَتَوَفَّنِيْ إِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْراً لِيْ . اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ خَشْيَتَكَ فِيْ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ، وَ أَسْأَلُكَ كَلِمَةَ الْحَقِّ فِيْ الرِّضَا وَالْغَضَبِ ، وَ أَسْأَلُكَ الْقَصْدَ فِيْ الْغِنَىٰ وَ الْفَقْرِ ، وَ أَسْأَلُكَ نَعِيْماً لاَيَنْفَدُ، وَ أَسْأَلُكَ قَرَّةَ عَيْنٍ لاَتَنْقَطِعُ ، وَ أَسْأَلُكَ الرِّضَا بَعْدَ الْقَضَاءِ ، وَ أَسْأَلُكَ بَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ ، وَ أَسْأَلُكَ لَذَّةَ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ وَ الشَّوْقَ إِلَى لِقَائِكَ فِيْ غَيْرِ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ وَلاَفِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ . اَللّٰهُمَّ زَيِّنَّا بِزِيْنَةِ الْإِيْمَانِ وَاجْعَلْنَا هُدَاةً مُهْتَدِيْنَ))

६२. ऐ अल्लाह मैं तेरे ग़ैब जानने और मख़लूक़ पर क़ुद्रत् रखने के साथ सवाल करता हूँ कि मुझे उस वक़्त तक ज़िन्दा रख् जब तक तू ज़िन्दगी मेरे लिए बेहतर जाने और मुझे उस वक़्त वफात दे जब वफात मेरे लिए बेहतर जाने। ऐ अल्लाह मैं ग़ाइब् और ह़ाजिर होने की ह़ालत् में तुझ से तेरे खौफ का सवाल करता हूँ और रजा तथा नाराज़गी हर ह़ालत में तुझ से ह़क़् बात कहने की तौफीक़ का सवाल करता हूँ और तुझ से अमीरी तथा ग़रीबी में मियाना रवी का सवाल करता हूँ और तुझ से ऐसी नेमत् का सवाल करता हूँ जो कभी भी खत्म न

हो और आँखों की ऐसी ठंडक् का सवाल करता हूँ जो खत्म न हो और तुझ से तेरे फैसिले पर राज़ी रहने का सवाल करता हूँ और तुझ से मौत के बाद खुशगवार ज़िंदगी का सवाल करता हूँ और तुझ से तेरे चेहरे की तरफ देखने की लज़्जत् और तेरी मुलाक़ात के शौक़ का सवाल करता हूँ बिना किसी तक्लीफदेह मुसीबत् और गुम्राह करने वाले फित्ने के । ऐ अल्लाह हमें ईमान की ज़ीनत् (शोभा) से मुज़ैयन् फरमा और हमें हिदायत् याफता रहबर बना दे । (नसाई ३/५४, ५५ तथा अह्मद् ४/३६४ और अल्लामा अलबानी ने सहीह अन-नसाई १/२८१ में इसे सहीह कहा है।)

63- ((اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ يَا اَللهُ بِأَنَّكَ الْوَاحِدُ الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُواً أَحَدٌ أَنْ تَغْفِرَ لِيْ ذُنُوْبِيْ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيْمُ))

६३. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के ज़रिये से कि तू अकेला, एक और बेनियाज़ है जिस ने न किसी को जना और न वह किसी से जना गया है और न ही उस का कोई शरीक है कि तू मेरे गुनाहों को माफ फरमा दे । बेशक तू ही बख़्शने वाला मेहरबान है ।

(नसाई शब्द के साथ ३/५२, अह्मद् ४/३३८ और अल्लामा अलबानी ने सहीह अन-नसाई १/२८० में इसे सहीह कहा है।)

64-((اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْدَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ وَحْدَكَ لاَشَرِيْكَ لَك، اَلْمَنَّانُ، يَابَدِيْعَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَاذَا الْجَلاَلِ وَالْإِكْرَامِ، يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَأَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ))

६४. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के साथ कि हर क़िस्म की तारीफ तेरे ही लिए है , तेरे सिवा कोई इबादत् के लाइक़् नहीं । तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं । बेहद् इह्सान करने वाला । ऐ आसमानों तथा ज़मीन को बनाने वाले , ऐ बुज़ुर्गी तथा इज़्ज़त् वाले , ऐ ज़िन्दा और क़ाइम् रखने वाले मैं तुझ से जन्नत् का सवाल करता हूँ और आग से तेरी पनाह चाहता हूँ । (अबूदाऊद , नसाई , त्रिमिज़ी , इब्ने माजा और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा २/३२६)

65 -((اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنِّيْ أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُواً أَحَدٌ))

६५. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के माध्यम से कि मैं गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह है तेरे सिवा कोई अन्य इबादत् के लाइक़् नहीं । तू अकेला है , बेनियाज़ है जिस से न कोई पैदा हुआ और न तो वह किसी से पैदा हुआ है और न ही कोई उस का हमसर (समकक्ष) है ।

(अबूदाऊद २/६२, त्रिमिज़ी ५/५१५, इब्ने माजा २/१२६४, अह्मद् ५/३६० और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा २/३२९ और सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१६३)

25 - नमाज़ से सलाम फेरने के बाद की दुआयें

66- ((أَسْتَغْفِرُاللهَ)) तीन बार

६६. मैं अल्लाह से बख़्शिश् माँगता हूँ ।

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ السَّلاَمُ وَمِنْكَ السَّلاَمُ تَبَارَكْتَ يَاذَاالْجَلاَلِ وَالْإِكْرَامِ

ऐ अल्लाह तू ही सलामती वाला है और तुझी से सलामती है। ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त् वाले तू बड़ी बरकत् वाला है।

(मुस्लिम १/४१४)

67-((لاَ إِلٰهَ إِلاَّاللّٰهُ وَحْدَهُ لاَشَرِيْكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ، اَللّٰهُمَّ لاَمَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلاَ يَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))

अर्थ :– अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं , वह अकेला है , उसका कोई शरीक नहीं। उसी के लिए बादशाहत् है , और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह जो कुछ तू दे उसको कोई रोकने वाला नहीं , और जिस चीज़ से तू रोक दे उसको कोई देने वाला नहीं और किसी दौलत्मन्द को उसकी दौलत् तेरे यहाँ कुछ फायदा नहीं दे सकती। (बुखारी १/२५५, मुस्लिम १/४१४)

68- ((لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهُ لاَشَرِيْكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ ، وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ . لاَحَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّبِاللّٰهِ ، لاَ إِلٰهَ إِلاَّاللّٰهُ ، وَلاَ نَعْبُدُ إِلاَّ إِيَّاهُ ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَ لَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ))

६८. अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक़ नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। बादशाही उसी की है और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ुद्रत्

रखने वाला है । न बचने की ताक़त् है न कुछ करने की ताक़त लेकिन अल्लाह की मदद् के साथ । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक़् नहीं । और उस के सिवा हम किसी की इबादत् नहीं करते । उसी के लिए नेमत् है और उसी के लिए फज़्ल और उसी के लिए अच्छी तारीफ है । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक़् नहीं । हम अपनी इबादत् उसी के लिए ख़ालिस् करते हैं चाहे काफिरों को बुरा ही लगे । (मुस्लिम १/४१५)

69- ((سُبْحَانَ اللهِ ، وَالْحَمْدُ لِلّهِ ، وَاللهُ أَكْبَرُ ३३ बार لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَشَرِيْكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ))

६९. अल्लाह पाक है, हर क़िस्म की तारीफ अल्लाह के लिए है और अललाह सब से बड़ा है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक़् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । बादशाही उसी की है और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ुद्रत् रखने वाला है ।

(मुस्लिम १/४१८, जो आदमी हर नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े उस के गुनाह माफ कर दिए जाते हैं चाहे वे समुद्र के झाग के बराबर हों ।)

70- بسم الله الرحمن الرحيم ﴿ قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدٌۢ ۝٤ ﴾ (الإخلاص ٠٠١-٠٠٤)

بسم الله الرحمن الرحيم ﴿ قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلۡفَلَقِ ۝١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِي ٱلۡعُقَدِ ۝٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝٥ (الفلق ١٠٠١-١٠٠٥)

بسم الله الرحمن الرحيم ﴿ قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ۝١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ۝٢ إِلَٰهِ ٱلنَّاسِ ۝٣ مِن شَرِّ ٱلۡوَسۡوَاسِ ٱلۡخَنَّاسِ ۝٤ ٱلَّذِي يُوَسۡوِسُ فِي صُدُورِ ٱلنَّاسِ ۝٥ مِنَ ٱلۡجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ۝٦ ﴾ (الناس ١٠٠١-١٠٠٦)

७०. अल्ला के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत दयालू बड़ा रहम करने वाला है।

‘‘ आप कह दीजिए वह अल्लाह एक है, अल्लाह तआला बेनियाज़ है, न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है और न उसका कोई समकक्ष (हमसर) है’’। (सूरतुल इख्लासः १-४)

‘‘ आप कह दीजिए कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है, और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाए। और गाँठ लगाकर उन

में फूँकने वालियों की बुराई से और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे। (सूरतुल फलक़:१-५)

आप कह दीजिए कि मैं लोगों के रब, लोगों के मालि और लोगों के माबूद की पनाह में आता हूँ वस्वसा डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है (चाहे) वह जिन्न में से हो या मानव में से। (सूरतुन्नास:१-६)

(अबूदाऊद २/८६, नसाई ३/६८ और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी २/८, इन तीनों सूरतों को मुऔविज़ात कहा जाता है, देखिये फत्हुल बारी ६/६२)

71- हर नमाज़ के बाद आयतल् कुर्सी पढ़े :

﴿ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۗ مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾ ﴾

(البقرة: ٢٥٥)

अर्थ :– अल्लाह के सिवा कोई मा़बूद (पूजनीय) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है , सबको क़ाइम् रख्ने वाला है । उसको न ऊँघ आती है न नींद आसमान और जमीन की सब चीज़ें उसी की हैं । कौन है जो उस के पास किसी की सिफारिश् करे उसकी इजाज़त् के बग़ैर । वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है , और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम) सक्ते मगर जितना अल्लाह चाहे , और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने वुसअत् (घेरे) में ले रखा है । और उन दोनों की हिफ़ाजत् उसको थका नहीं सकती और वह बुलन्द है अज़्मत् वाला है ।))

(जो आदमी हर नमाज़ के बाद इसे पढ़े उसे जन्नत में जाने से मौत के सिवा कोई चीज़ नहीं रोके गी। नसाई अमलुल यौम वल्लैलह हदीस न.१००, इब्ने सुन्नी हदीस न.१२१, अल्लामा अलबानी ने इसे सहीहुल जामिअ् ५/३३६ और सिलसिला अहादीस सहीहा २/६६७, हदीस न.६७२ में सहीह कहा है।)

72-((لاَ إِلهَ إِلاَّاللهُ وَحْدَهُ لاَشَرِيْكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَ يُمِيْتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ))

७२. अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक़् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । बादशाही उसी की है और उसी के लिए सब तारीफ है, वह मारता और जिलाता है, और वह हर चीज़ पर क़ुद्रत् रखने वाला है ।

दस बार मग़्रिब् और फज्र के बाद । (त्रिमिज़ी ५/५१५ अह्मद् ४/२२७, तखरीज के लिए ज़ादुल मआद देखिए १/३००)

73-((اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسأَلُكَ عِلْماً نَافِعاً ، وَرِزْقاً طَيِّباً ، وَعَمَلاً مُتَقَبَّلاً))

७३. ऐ अल्लाह मैं तुझ से लाभ देने वाले इल्म, पाकीज़ा रोज़ी और क़बूल होने वाले अमल का सवाल करता हूँ।

फज्र की नमाज़ से सलाम फेरने के बाद ऊपर बयान की गई दुआ पढ़ें ।

(इब्ने माजा और देखिए सहीह़ इब्ने माजा १/१५२, मजमउज़्ज़वाइद १०/१११)

26 – नमाज़े इस्तिख़ारा की दुआ

७४. जाबिर (رضي الله عنه) फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें तमाम कामों में इस्तिख़ारा करने की तालीम देते जिस तरह हमें कुरआन की किसी सूरा की तालीम देते, आप फरमाते कि तुम में से कोई आदमी जब किसी काम का इरादा करे तो फर्ज़ के सिवा (नफिल की नियत से) दो रक्अत नमाज़ अदा करे फिर यह दुआ पढ़े :

(اَللّٰهُمَّ اِنِّى أَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ ؛ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ ؛ وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ ؛ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَااَقْدِرُ ؛ وَتَعْلَمُ وَلَااَعْلَمُ ؛ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هَذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ وَعَاجِلِ اَمْرِيْ – اَوْ قال: عَاجِلِهِ وَآجِلِهِ– فَاقْدُرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ لِيْ فِيْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هَذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ – اَوْ قال: عَاجِلِهِ وَآجِلِهِ– فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِيْ بِهِ)) (مسلم)

ऐ अल्लाह मैं तेरे इल्म की मदद् से भलाई तलब् करता हूँ और तेरी कुद्रत् की मदद् से कुद्रत् (ताकत्) माँगता हूँ। और तुझ् से तेरा अज़ीम फज़्ल माँगता हूँ। बेशक् तू ही कुद्रत् रखता है। और मैं कुद्रत् नहीं रख्ता और तू ही जानता है और मैं नहीं जानता। और तू ही ग़ैबों (परोक्ष) का जानने वाला है। ऐ अल्लाह अगर तू जानता है कि यह काम (उस काम का नाम ले) मेरे लिए मेरे दीन और मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार में -या आप ﷺ ने कहाः इस दुनिया के लिए या आख़िरत के लिए - बेहतर है तो इस काम को मेरे लिए मुक़द्दर कर दे और इसको मेरे लिए आसान बना दे फिर मेरे लिए उसमें बरकत् दे। और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे दीन और जिन्दगी और अन्जामे कार -या आप ﷺ ने कहाः इस दुनिया के लिए या आख़िरत के लिए - बुरा है तो तू इस काम को मुझ् से फेर दे और मुझ को उस काम से फेर दे। और मेरे लिए भलाई मुक़द्दर कर दे वह जहाँ भी हो। फिर तू उस काम पर मुझे् राज़ी करदे। (बुखारी ७/१६२)

जो आदमी अल्लाह से इस्तिखारा करे, मोमिन बन्दे से मश्वरा करे और साबित क़दमी (स्थिरता) से काम करे उसे पछतावा नही होता। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ وَشَاوِرْهُمْ فِي الأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّهِ ﴾ [آل عمران:١٥٩]

और काम में उन से मश्वरा (परामर्श) कर लिया कीजिए, फिर जब पक्का इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें। (आल इम्रानः१५९)

7 - सुबह् और शाम के अज़्कार

सभी तारीफ अल्लाह के लिए है जो अकेला है और दरूद व सलाम उस पर जिस के बाद कोई नबी नहीं।

(अनस ﷺ बयान करते हैं कि नबी ﷺ ने फरमायाः '' मुझे ऐसे लोगों के साथ बैठना इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान में से चार गुलामों को आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्द है जो फज्र की नमाज़ से सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करते हैं। मुझे ऐसे लोगों के साथ बैठना चार गुलाम आज़ाद करने से अधिक पसन्द है जो अस्र की नमाज़ से सूरज डूबने तक अल्लाह का ज़िक्र करें।'' अबू दाऊद हदीस न.३६६७, और शैख अलबानी ने इसे हसन कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद २/६६८)

75- أعوذ بالله من الشيطان الرجيم ﴿اللّهُ لاَ إِلَـهَ إِلاَّ هُـوَ الْحَـيُّ الْقَيُّومُ لاَ تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلاَ نَوْمٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلاَّ بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَـا خَلْفَهُـمْ وَلاَ يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلاَّ بِمَا شَاء وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ وَلاَ يَؤُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴾ [البقرة:٢٥٥]

७५. मैं धुत्कारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह में आता हूँ।

अल्लाह के सिवा कोई मा़बूद (पूजनीय) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है , सबको क़ाइम् रख्ने वाला है । उसको न ऊँघ आती है न नींद, आसमान और जमीन की सब चीज़ें उसी की हैं । कौन है जो उस के पास किसी की सिफारिश् करे उसकी इजाज़त् के बग़ैर । वह जानता है जो लोगों के सामने है और

जो उनके पीछे है, और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम) सक्ते मगर जितना अल्लाह चाहे , और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने वुसअत् (घेरे) में ले रखा है । और उन दोनों की हिफ़ाज़त् उसको थका नहीं सकती और वह बुलन्द है अज़मत् वाला है ।))

(जो आदमी सुबह के वक्त आयतल् कुर्सी पढ़ ले तो वह शाम तक जिन्नों (के शर् व फित्ने) से महफूज़ हो जाता है और जो आदमी शाम के वक्त् पढ़ ले तो सुबह तक् जिन्नों (के शर्) से महफूज़ हो जाता है । हाकिम १/५६२, अलबानी ने सहीहुत-तरग़ीब वत-तरहीब १/२७३ में इसे सहीह कहा है और इसे नसाई और तबरानी की ओर मनसूब किया है और तबरानी की सनद को जैयिद कहा है)

76-بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿ قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدٌۢ ۝٤ ﴾ (الإخلاص ٠٠١-٠٠٤)

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلْفَلَقِ ۝١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِى ٱلْعُقَدِ ۝٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝٥ (الفلق ٠٠١-٠٠٥)

بِسْمِ اللهِ الـرَّحْمٰنِ الـرَّحِيْمِ ﴿ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ۝١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ۝٢ إِلَـٰهِ ٱلنَّاسِ ۝٣ مِن شَرِّ ٱلْوَسْوَاسِ ٱلْخَنَّاسِ ۝٤ ٱلَّذِى يُوَسْوِسُ فِى صُدُورِ ٱلنَّاسِ ۝٥ مِنَ ٱلْجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ۝٦ ﴾ (الناس ١٠٠١-١٠٠٦)

७६. अल्ला के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत दयालू बड़ा रहम करने वाला है।

‘‘ आप कह दीजिए वह अल्लाह एक है, अल्लाह तआला बेनियाज़ है, न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है और न उसका कोई समकक्ष (हमसर) है’’। (सूरतुल इख्लासः १-४)

‘‘ आप कह दीजिए कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है, और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाए। और गाँठ लगाकर उन में फूँकने वालियों की बुराई से और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे। (सूरतुल फलक़ः१-५)

आप कह दीजिए कि मैं लोगों के रब, लोगों के मालि और लोगों के माबूद की पनाह में आता हूँ वस्वसा डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है (चाहे) वह जिन्न में से हो या मानव में से। (सूरतुन्नासः१-६)

(जो आदमी ऊपर की तीनों सूरतें सुबह के वक़्त तीन बार और शाम के वक़्त तीन बार पढ़ ले तो ये सूरतें उस के लिए हर चीज़ से काफी हैं। अबू दाऊद ४/३२२, त्रिमिज़ी ५/५६७, और देखिये सहीह त्रिमिज़ी ३/१८२)

77- ((أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّهِ ، وَ الْحَمْدُ لِلَّـهِ ، لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَشَرِيْكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ، رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِيْ هَذَا الْيَوْمِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهُ ، وَ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْ هَذَاالْيَوْمِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ ، رَبِّ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكَسَـلِ ، وَسُـوْءِ الْكِبَرِ، رَبِّ أَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابٍ فِيْ النَّارِ وَعَذَابٍ فِيْ الْقَبْرِ))

७७. हम ने सुबह़ की और अल्लाह के मुल्क ने सुबह़ की [1] और सब तारीफ अल्लाह के लिए है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक़् नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। उसी के लिए मुल्क है। और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ मेरे रब् आज के इस दिन में जो ख़ैर व भलाई है और जो इस दिन के बाद ख़ैर व भलाई है मैं तुझ से इस का सवाल करता हूँ। [2] और इस दिन के शर (बुराई) से और इस के बाद वाले दिन के शर् से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ मेरे रब् मैं सुस्ती और बुढ़ापे की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ मेरे रब् मैं जहन्नम के अज़ाब और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। (मुस्लिम ४/२०८८)

---

1 और जब शाम के वक़्त् पढ़े तो यह कहे : أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ

2 और जब शाम के समय पढ़े तो इस प्रकार कहे :
رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِيْ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا وَ أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا))

78-((اَللّٰهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا ، وَبِكَ أَمْسَيْنَا ، وَبِكَ نَحْيَا ، وَبِكَ نَمُوْتُ وَإِلَيْكَ النُّشُورُ))

७८ . ऐ अल्लाह तेरे ही नाम से हम ने सुबह़ की और तेरे ही नाम से हम ने शाम की [3] और तेरे ही नाम से हम ज़िन्दा हैं और तेरा ही नाम लेते हुए हम मरेंगे और तेरी ही ओर लौट कर जाना है । (त्रिमिज़ी ५/४६६ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१४२)

79-((اَللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبِّيْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَ أَنَا عَبْدُكَ ، وَأَنَا عَلَىٰ عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَااسْتَطَعْتُ ، أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ ، أَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَ أَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَإِنَّهُ لاَيَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلاَّ أَنْتَ))

७९. ऐ अल्लाह तू ही मेरा रब् है । तेरे सिवा कोई इबादत् के लाइक़ नहीं । तू ने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं अपनी ताक़त् भर तेरे वादे पर क़ाइम् हूँ । मैं ने जो कुछ किया उस के शर् (बुराई) से तेरी पनाह चाहता हूँ । अपने ऊपर तेरी नेमत् का इक़्रार करता हूँ । और अपने गुनाहों का इक़्रार करता हूँ इस लिए मुझे बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई दूसरा गुनाहों को नहीं बख़्श सकता । [4] (बुख़ारी ७/१५०)

---

[3] और जब शाम के समय पढ़े तो इस प्रकार कहे :

((اَللّٰهُمَّ بِكَ أَمْسَيْنَا، وبِكَ أَصْبَحْنَا ، وَبِكَ نَحْيَا ، وَبِكَ نَمُوْتُ وَإِلَيْكَ المَصِيْرُ))

[4] जो आदमी इस दुआ पर यक़ीन रखते हुए शाम को पढ़े और उसी रात उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो ऐसा आदमी जन्नत में दाख़िल् होगा और ऐसे ही अगर यह दुआ सुबह़ को पढ़े और उसी दिन मर जाए तो जन्नत में दाख़िल होगा । (बुख़ारी ७/१५०)

80- ((اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَصْبَحْتُ أُشْهِدُكَ وَ أُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ ، وَمَلاَئِكَتَكَ وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ ، أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ وَحْدَكَ لاَشَرِيْكَ لَكَ ، وَأَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ))

८०. ऐ अल्लाह मैं ने इस ह़ाल में सुबह़ की[5] कि मैं तुझे गवाह बनाता हूँ और तेरा अर्श उठाने वालों को , तेरे फरिश्तों को और तेरी तमाम मख़्लूक़ को गवाह बनाता हूँ कि तू ही अल्लाह है । तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू अकेला है । तेरा कोई शरीक नहीं और बेशक़ मुह़म्मद ﷺ तेरे बन्दे और रसूल हैं । [6] (अबूदाऊद ४/३१७ और इमाम बुख़ारी (रहिमहुल्लाह) की किताब अल्-अद्बुल् मुफ़्रद् हदीस न. १२०१, नसाई की अमलुल-यौमि वल-लैला न. ६, इब्नुस-सुन्नी न.७०, और शैख इब्ने बाज़ ने नसाई और अबू दाऊद की सनद को हसन कहा है, तुहफ़तुल-अख्यार पृष्ठः २३)

81-((اَللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لاَشَرِيْكَ لَكَ ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ))

८१. ऐ अल्लाह मुझ पर या तेरी मख़्लूक़ में से किसी पर जिस नेमत् ने भी सुबह़ की है [7] वह केवल तेरी तरफ से है । तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं । इस लिए तेरे ही लिए सब तारीफ है और तेरे ही लिए शुक्र है ।

---

[5] और जब शाम का समय हो तो यह कहे : ((اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَمْسَيْتُ))

[6] जो आदमी यह दुआ सुबह़ या शाम चार बार पढ़े गा अल्लाह तआला उसको आग (जहन्नम) से आज़ाद कर देगा ।

[7] और जब शाम का समय हो तो यह कहे : ((اللهم ما أمسى بي من نعمة ...))

(जिस ने यह दुआ सुबह के समय पढ़ी तो उसने उस दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिस ने यह दुआ शाम के समय पढ़ी उस ने उस रात का शुक्र अदा कर दिया। अबूदाऊद ४/३१८, नसाई की अमलुल-यौमि वल-लैला न.७, इब्नुस-सुन्नी न.४१, इब्ने हिब्बान 'मवारिद' न.२३६१, शैख़ इब्ने बाज़ रहि ने इस की सनद् को ह़सन् कहा है। देखिए तुह़फतुल् अख़्यार पृष्ठ :.२४)

82-((اَللَّهُمَّ عَافِنِيْ فِىْ بَدَنِيْ ، اَللَّهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ ، اَللَّهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ ، لاَإِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ . اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ ، وَالْفَقْرِ ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ))

तीन बार सुबह़ और तीन बार शाम को पढ़ना चाहिए।

८२. ऐ अल्लाह मुझे मेरे बदन् में आफियत् दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरे कानों में आफियत् दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरी आँखों में आफियत् दे। तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं। ऐ अल्लाह मैं कुफ्र और फक्र (ग़रीबी) से तेरी पनाह चाहता हूँ और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। तेरे सिवा कोई इबादत् के लाइक़ नहीं।

(अबूदाऊद ४/३२४, अहमद् ५/४२, अमलुल्यौमि वल्लैला नसाई हदीस न०.२२, इब्नुस-सुन्नी हदीस न.६६, बुखारी की अदबुल-मुफरद, इब्ने बाज़ ने इसकी सनद को हसन कहा है, तुहफतुल अख्यार पृष्ठः २६)

83 - ((حَسْبِيَ اللهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ))

८३. मुझे अल्लाह ही काफी है। उस के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया और वह अर्शे अज़ीम का रब् है। (जो आदमी इस दुआ को सात बार सुबह् और सात बार शाम को पढ़े गा, अल्लाह उसके लिए दुनिया और आखिरत के कामों के लिए काफी

होगा। इब्नुस-सुन्नी हदीस न.७१, अबूदाऊद ४/३२१, शुअैब और अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने इसकी सनद को सहीह कहा है। देखियेः ज़ादुल मआद २/३७६)

84-((اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِيْ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ، اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ : فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ وَ أَهْلِيْ ، وَمَالِيْ ، اَللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِيْ وَآمِنْ رَوْعَاتِيْ ، اللَّهُمَّ احْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ ، وَمِنْ خَلْفِيْ ، وَعَنْ يَمِيْنِيْ ، وَعَنْ شِمَالِيْ ، وَمِنْ فَوْقِيْ ، وَ أَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِيْ))

८४. ऐ अल्लाह मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत् में माफी और आफियत् का सवाल करता हूँ । ऐ अल्लाह मैं अपने दीन, अपनी दुनिया, अपने खानदान और अपने माल में तुझ से माफी और आफियत् का सवाल करता हूँ । ऐ अल्लाह मेरी परदा वाली चीज़ पर परदा डाल दे और मेरी घब्राहटों को सुकून में बदल् दे । ऐ अल्लाह मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरे दायें तरफ से, और मेरे बायें तरफ से और मेरे ऊपर से मेरी हिफाजत् कर और इस बात से मैं तेरी अज़्मत् की पनाह चाहता हूँ कि अचानक् अपने नीचे से हलाक किया जाऊँ ।

(अबूदाऊद, इब्ने माजा, देखिए सहीह इब्ने माजा २/२३२)

85-((اَللَّهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ، رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيْكَهُ ، أَشْهَدُ أَنْ لاَّ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ ، أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ، وَمِنْ شَرِّالشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ ، وَ أَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِيْ سُوْءاً أَوْ أَجُرَّهُ إِلَى مُسْلِمٍ))

८५. ऐ अल्लाह ऐ ग़ैब तथा हाज़िर को जानने वाले , आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले, हर चीज़ के पालनहार और मालिक ! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं । मैं तेरी पनाह माँगता हूँ अपने नफस् के शर् से और शैतान के शर् और उस के शिर्क से और इस बात से कि मैं अपनी जान पर कोई बुराई करुँ या किसी और मुसलमान के लिए बुराई का कारण बनूँ । (त्रिमिज़ी , अबूदाऊद , और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४२)

86-((بِسْمِ اللهِ الَّذِيْ لاَيَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْـأَرْضِ وَلاَ فِـي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ)) तीन बार पढ़े

८६. अल्लाह के नाम के साथ जिस के नाम के साथ ज़मीन और आसमान में कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुँचाती और वही सुनने वाला और जानने वाला है । (अबूदाऊद ४/३२३ , त्रिमिज़ी ५/४६५, इब्ने माजा, अहमद और देखिए सहीह इब्नेमाजा २/३३२, इब्ने बाज़ ने इसकी सनद को हसन कहा है, तुह्फतुल अख्यारः३६)[8]

87-((رَضِيْتُ بِاللهِ رَباً ، وَبِالْإِسْلاَمِ دِيْناً ، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِياً))

८७ . मैं अल्लाह के रब् होने पर और इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद ﷺ के नबी होने में पर राज़ी हूँ ।[9]

---

[8] जो आदमी इस दुआ को सुबह् और शाम तीन तीन बार पढ़े गा उसे कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकती ।

[9] जो आदमी इस दुआ को तीन बार सुबह् और तीन बार शाम को पढ़े गा, अल्लाह तआला उसे क़यामत् के दिन ज़रुर खुश कर देगा ।

(मुसनद् अहमद् ४/३३७, अमलुल-यौमि वल-लैला 'नसाई' हदीस न.४, इब्नुस-सुन्नी हदीस न.६८, अबू दाऊद ४/३१८, त्रिमिज़ी ५/४६५, इब्ने बाज़ ने इसकी सनद को हसन कहा है, तुह्फतुल अख्यार पृष्ठः ३६)

88- ((يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ أَصْلِحْ لِيْ شأْنِيْ كُلَّــهُ وَلاَ تَكِلْنِيْ إِلَى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ))

८८. ऐ ज़िन्दा रहने वाले ऐ क़ाइम् रखने वाले ! मैं तेरी ही रह्मत् से फरयाद करता हूँ तू मेरे तमाम काम दुरुस्त कर दे और आँख झपक्ने के बराबर भी मुझे मेरे नफ्स के ह़वाले न कर । (हाकिम ने इसे रिवायत करके सहीह कहा है और ज़ह्बी ने इसकी पुीष्ट की है १/५४५, देखिए सहीह़ तरग़ीब व तरहीब १/२७३)

89- ((أَصْبَحْنَا وَ أَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ [10] اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذَا الْيَوْمِ [11] فَتْحَهُ ، وَنَصْرَهُ وَنُــوْرَهُ ، وَبَرَكَتَــهُ ، وَهُــدَاهُ ، وَ أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَ هُ))

८९. हम ने सुबह् की और अल्लाह रब्बुल् आलमीन के मुल्क ने सुबह् की । ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस दिन की भलाई, इस की फत्ह़ व मदद् इस का नूर और इसकी बरकत् और इस की हिदायत् का सवाल करता हूँ और इस दिन की बुराई तथा इस के बाद वाले दिनों की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ ।

---

[10] और शाम के वक़्त कहे . أَمْسَيْنَا وَ أَمْسَى الْمُلْكُ لِلّهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

[11] और शाम के वक़्त कहे :

اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ اللَّيْلَةِ فَتْحَهَا وَنَصْرَهَا وَنُوْرَهَا وَبَرَكَتَهَا وَهُدَاهَا وَ أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا .

(अबूदाऊद ४/३२२ शुअैब और अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने इसकी सनद को हसन कहा है, ज़ादुल् मआ़द २/३७३)

90-أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الإِسْلَامِ، وَعَلَى كَلِمَةِ الإِخْلاَصِ ، وَعَلَى دِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ ﷺ وعَلَى مِلَّةِ أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيفاً مُسْلِماً وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ .

९०. हम ने फित्रते इस्लाम और कलिमये इख़्लास और अपने नबी मुह़म्मद ﷺ के दीन और अपने बाप इब्राहीम की मिल्लत् पर सुबह्[12] की जो ह़नीफ व मुस्लिम थे और वह मुश्रिकों में से न थे । (अह़मद् ३/४०६, ४०७, इब्नुस-सुन्नी की अमलुल-यौमि वल-लैला हदीस न.३४, सहीहुल्जामिअ् ४/२०९)

91- ((سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ)) १०० बार

९१. मैं अल्लाह की पाकी बयान करता और उसकी तारीफ करता हूँ। (जो आदमी सुबह और शाम इस दुआ को सौ बार पढ़े गा क़ियामत के दिन कोई आदमी उस से बेहतर अमल लेकर नहीं आए गा, हाँ अगर कोई आदमी उसी के बराबर या उस से अधिक बार इस दुआ को पढ़े (तो उस से बेहतर हो सकता है)। (मुस्लिम ४/२०७१)

92- ((لاَإِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ)).

९२ . अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ।

[12] और शाम के समय यह कहे : ... أمسينا على فطرة الإسلام

दस बार (नसाई की अमलुल-यौमि वल-लैला हदीस न.२४, देखिए सहीह तरग़ीब व तरहीब १/२७२, तुहफतुल अख्यार:४४, इस दुआ की फ़ज़ीलत इसी किताब की हदीस न.२५५ देखिये)

सुस्ती के समय एक बार पढ़ ले। (अबू दाऊद ४/३१६, इब्ने माजा, अहमद ४/६०, और देखिए सहीह तरग़ीब व तरहीब १/२७०, सहीह अबू दाऊद २/६५७, सहीह इब्ने माजा २/३३१, ज़ादुल मआद २/३७७)

93- ((لاَ إِلهَ إِلاَّاللهُ وَحْدَهُ لاَشَرِيْكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُــوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ)) सुबह के वक़्त १००बार

९३. अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ।[13]

94- ((سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ: عَدَدَ خَلْقِهِ، وَرِضَا نَفْسِهِ، وَزِنَةَ عَرْشِهِ، ومِدَادَ كَلِمَاتِهِ)) सुबह के वक़्त तीन बार

९४. अल्लाह पाक है और उसी के लिए हर क़िस्म की तारीफ है उस की मख़लूक़ की तादाद के बराबर और उस की अपनी मर्जी और उस के अर्श के वज़न् के बराबर और उस के कलिमात की रोशनाई के बराबर । (मुस्लिम ४/२०९०)

95-((اَللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْماً نَافِعاً، وَرِزْقاً طَيِّباً، وَعَمَلاً مُتَقَبَّلاً))

[13] जो आदमी सुबह के समय इस दुआ को १०० बार पढ़े तो उस को दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा, उसके लिए सौ नेकियां लिखी जायें गीं और उस के सौ गुनाह माफ कर दिए जायेंगे और वह उस दिन शाम तक शैतान के शर से महफ़ूज़ रहेगा । और कोई आदमी उस से बेहतर अमल लेकर नहीं आए गा, हाँ अगर कोई आदमी उस से अधिक बार इस दुआ को पढ़े (तो उस से बेहतर हो सकता है)। (बुख़ारी ४/९५ मुस्लिम ४/२०७१)

यह दुआ सुबह के वक़्त पढ़े।

९५. ऐ अल्लाह मैं तुझ से नफा देने वाले इल्म और पाकीज़ा रोज़ी और क़बूल होने वाले अमल् का सवाल करता हूँ। (इब्नुस-सुन्नी ने अमलुल-यौमि वल-लैला में रिवायत किया है, हदीस न.५४, इब्ने माजा न.९२५, शुअैब और अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने इसकी सनद को हसन कहा है, देखिए ज़ादुल् मआद २/३७५)

96-((أَسْتَغْفِرُ اللهَ وَ أَ تُوبُ إِلَيْهِ)) प्रतिदिन १०० बार

९६. मैं अल्लाह से माफी माँगता हूँ और उसी से तौबा करता हूँ। (बुख़ारी फतहुल् बारी के साथ ११/१०१, मुस्लिम ४/२०७५)

97-((أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ))

शाम के वक़्त तीन बार पढ़े।

९७. मैं अल्लाह के मुकम्मल् कलिमात के साथ उन तमाम चीज़ों की बुराई से पनाह चाहता हूँ जो उस ने पैदा की हैं।

(जो आदमी शाम के वक्त तीन बार इस दुआ को पढ़े तो उसे उस रात कोई ज़हरीला जानवर नुक़्सान नहीं पहुँचाएगा, अहमद २/२९०, अमलुल-यौम वल-लैला 'नसाई' न.५९०, इब्नुस-सुन्नी न.६८, और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१८७, सहीह इब्ने माजा २/२६६, तुहफतुल अख्यारः४५)

98- ((اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ)) १० बार

९८. ऐ अल्लाह हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम भेज। (रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं जो आदमी १० बार सुबह़ के वक़्त और १० बार शाम को मुझ पर दरूद पढ़े तो उसे क़यामत के दिन मेरी शफाअत् नसीब होगी। (तबरानी ने इस हदीस को दो सनदों से रिवायत किया है उनमें से एक जैयिद है, देखिये मज़्मउज़्ज़वाइद १०/१२०, सहीह़ तरग़ीब व तरहीब १/२७३)

28 - सोने के समय की दुआएँ

९९. अपनी दोनों हथेलियों को मिलाकर उन में फूँक मारे, फिर उन में पढ़े :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿ قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدٌۢ ۝٤ ﴾ (الإخلاص ٠٠١-٠٠٤)

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلْفَلَقِ ۝١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِى ٱلْعُقَدِ ۝٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝٥ (الفلق ٠٠١-٠٠٥)

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ۝١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ۝٢ إِلَٰهِ ٱلنَّاسِ ۝٣ مِن شَرِّ ٱلْوَسْوَاسِ ٱلْخَنَّاسِ

﴿ ٱلَّذِى يُوَسۡوِسُ فِى صُدُورِ ٱلنَّاسِ ﴿٥﴾ مِنَ ٱلۡجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ﴿٦﴾ ﴾ (الناس ١٠٠١-١٠٠٦)

अल्ला के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत दयालू बड़ा रहम करने वाला है।

'' आप कह दीजिए वह अल्लाह एक है, अल्लाह तआला बेनियाज़ है, न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है और न उसका कोई समकक्ष (हमसर) है''। (सूरतुल इख्लासः १-४)

'' आप कह दीजिए कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है, और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाए। और गाँठ लगाकर उन में फूँकने वालियों की बुराई से और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे''। (सूरतुल फलक़ः१-५)

''आप कह दीजिए कि मैं लोगों के रब, लोगों के मालि और लोगों के माबूद की पनाह में आता हूँ वस्वसा डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है (चाहे) वह जिन्न में से हो या मानव में से''। (सूरतुन्नासः१-६)

फिर दोनों हथेलियों को अपने बदन पर जहाँ तक हो सके फेरे । सर, चेहरा और बदन् के सामने वाले हिस्से से शुरू करे । इस प्रकार तीन बार करे :

(बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ९/६२ मुस्लिम ४/१७२३)

100- ﴿اللّهُ لاَ إِلَـــهَ إِلاَّ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لاَ تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلاَ نَوْمٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلاَّ بِإِذْنِـــهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلاَ يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلاَّ بِمَا شَاء وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ وَلاَ يَؤُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ﴾ [البقرة:٢٥٥]

१००. अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूजनीय) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है , सबको क़ाइम् रख्ने वाला है। उसको न ऊँघ आती है न नींद आसमान और ज़मीन की सब चीज़ें उसी की हैं। कौन है जो उस के पास किसी की सिफारिश् करे उसकी इजाज़त् के बग़ैर। वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है, और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम) सक्ते मगर जितना अल्लाह चाहे, और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने वुसअत् (घेरे) में ले रखा है। और उन दोनों की हिफ़ाज़त् उसको थका नहीं सकती और वह बुलन्द है अज़्मत् वाला है। (सूरतुल बक़राः २५५)

(अगर कोई आदमी सोने के लिए जब बिस्तर पर आए और आयतल् कुर्सी पढ़ ले तो अल्लाह की ओर से उस के लिए एक मुहाफिज (निरीक्षक) मुक़र्रर् (नियुक्त) हो जाता है और सुबह तक उस के क़रीब शैतान नहीं आ सकता। (बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ४/४८७))

101- ﴿ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِۦ ۚ وَقَالُوا۟ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا ٱكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِن نَّسِينَآ أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِۦ ۖ وَٱعْفُ عَنَّا وَٱغْفِرْ لَنَا وَٱرْحَمْنَآ ۚ أَنتَ مَوْلَىٰنَا فَٱنصُرْنَا عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٢٨٦﴾ (البقرة ٢٨٥-٢٨٦)

१०१. रसूल उस चीज़ पर ईमान लाए जो उसकी ओर अल्लाह की तरफ से उतारी गई और मुसलमान भी ईमान लाए। यह सब अल्लाह, उसके फरिश्ते, उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए, उसके रसूलों में से किसी के मध्य हम मतभेद नहीं करते, उन्हों ने कहा कि हम ने सुना और फरमांबरदारी की, ऐ हमारे रब! तुझ से क्षमा चाहते हैं, और हमे तेरी ही ओर लौटना है। अल्लाह किसी प्राणी पर उसकी ताक़त से अधिक बोझ नहीं

डालता, जो नेकी वह करे वह उसी के लिए है और जो बुराई वह करे वह उसी पर है, हे हमारे रब! अगर हम भूल गये हों या गलती की हो, तो हमें न पकड़ना। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हमसे पहले लोगों पर डाला था। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जिसकी हमें ताक़त नहीं, और हमें माफ कर दे और हमें बख्श दे और हम पर दया कर तू ही हमारा मालिक है, हमें काफिर समुदाय पर विजय प्रदान कर। (सूरतुल बक़राः २८५-२८६)

(जो आदमी यह दोनों आयतें रात में पढ़ ले तो उस के लिए ये आयतें काफी हो जायेंगी। बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ९/९४, मुस्लिम १/५५४)

102-((بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعُهُ فَإِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَارْحَمْهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ)).

१०२. तेरे ही नाम[14] से ऐ मेरे रब् मैं ने अपना पहलू (करवट्) रखा और तेरी ही तौफीक से इसे उठाऊँगा। इस लिए अगर तू मेरी जान (प्राण) को रोक ले तो उस पर रहम कर और अगर उसे छोड़ दे तो तू उस की हिफाज़त् कर जैसा कि तू अपने नेक बन्दों की हिफाजत् करता है।

(बुख़ारी ११/१२६ मुस्लिम ४/२०८४)

103- اَللهُمَّ إِنَّكَ خَلَقْتَ نَفْسِي وَأَنْتَ تَوَفَّاهَا لَكَ مَمَاتُهَا وَمَحْيَاهَا إِنْ أَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا ، وَإِنْ أَمَتَّهَا فَاغْفِرْ لَهَا. اَللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ .

14 " जब तुम में से कोई आदमी अपने बिस्तर से उठे और फिर दुबारा उसकी ओर आए तो उसे अपने तहबन्द के किनारे से तीन बार झाड़ ले और बिस्मिल्लाह कहे, क्योंकि उसे पता नहीं कि उसके बाद उस पर कौन सी चीज़ आगई हो और जब बिस्तर पर लेटे तो यह दुआ पढ़े ..."

१०३. ऐ अल्लाह तू ने ही मेरी जान (प्राण) पैदा की और तू ही उसे मौत देगा । तेरे ही क़ब्ज़े में उस को मारना और जिन्दा रखना है । अगर तू इसे ज़िन्दा रखे तो इस की हिफाज़त् कर और अगर इसे मौत दे तो इसे बख़्श दे । ऐ अल्लाह मैं तुझ से आफियत् का सवाल करता हूँ ।

(मुस्लिम ४/२०८३, अहमद के शब्द हैं २/७९)

104- اَللهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ.

१०४. ऐ अल्लाह मुझे (उस दिन) अपने अज़ाब से बचा जिस दिन तू अपने बन्दों को उठायेगा ।

(रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने का इरादा करते तो अपना दायाँ हाथ अपने रुख़सार (गाल) के नीचे रखते फिर तीन बार यह दुआ पढ़ते । अबूदाऊद के शब्द हैं ४/३११ और देखिए सहीह् त्रिमिज़ी ३/१४३)

105-((بِاسْمِكَ اَللهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا))

१०५. ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम से मरता हूँ और ज़िन्दा होता हूँ । (बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ११/११३ मुस्लिम ४/२०८३)

106 - سُبْحَانَ اللهِ ، **33** बार وَالْحَمْدُ للهِ ، **33** बार
وَاللهُ أَكْبَرُ **34** बार

१०६. जो आदमी बिस्तर पर लेटते हुए ३३ बार सुब्हानल्लाह (अल्लाह पाक है) ३३ बार अल्हमदु-लिल्लाह (सब तारीफ अल्लाह के लिए है) और ३४ बार अल्लाहु अक्बर (अल्लाह सब से बड़ा है) पढ़े तो यह उसके लिए खादिम से बेहतर है।

(बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ७/७१ मुस्लिम ४/२०९१)

107-اَللهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ ، وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ ، فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ، ومُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ ، وَالْفُرْقَانِ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ . اَللهُمَّ أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ ، وَأَنْتَ الآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ ، وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ اِقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ .

१०७. ऐ अल्लाह । ऐ सातों आसमानों के रब् और अर्शे अज़ीम के रब् । ऐ हमारे और हर चीज़ के रब । दाने और गुठली को फाड़ने वाले , तौरात , इन्जील और फुरक़ान (क़ुरआन) के नाज़िल् करने वाले! मैं हर उस चीज़ की बुराई तथा शर् से तेरी पनाह चाहता हूँ जिस की पेशानी तू पकड़े हुए है । ऐ अल्लाह ! तू ही अव्वल् है पस् तुझ् से पहले कोई चीज़ नहीं और तू ही आख़िर है पस् तेरे बाद कोई चीज़ नहीं । तू ही ज़ाहिर है पस् तुझ से ऊपर कोई चीज़ नहीं और तू ही बातिन् है पस् तुझ से अधिक पोशीदा कोई चीज़ नहीं । हमारा क़र्ज अदा कर दे और हमें मुहताजगी से (निकाल कर) ग़नी कर दे ।

(मुस्लिम ४/२०८४)

108- ((اَلْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا، وَسَقَانَا ، وَكَفَانَا ، وَآوَانَا، فَكَمْ مِمَّنْ لاَ كَافِيَ لَهُ وَلاَ مُؤْوِيَ))

१०८. सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया और हमें काफी हो गया और हमें ठिकाना दिया, पस्

कितने ही लोग ऐसे हैं जिन्हें कोई किफायत् करने वाला नहीं न कोई ठिकाना देने वाला है । (मुस्लिम ४/२०८५)

109- اَللهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ أَشْهَدُ أَن لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَعُوذُ بِكَ مِن شَرِّ نَفْسِي ، وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِي سُوءاً أَوْ أَجُرَّهُ إِلَى مُسْلِمٍ.

१०९. ऐ अल्लाह ऐ ग़ैब तथा हाज़िर को जानने वाले, आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले, हर चीज़ के रब और मालिक ! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़् नहीं । मैं तेरी पनाह माँगता हूँ अपने नफ्स् के शर् से और शैतान के शर् और उस के शिर्क से और इस बात से कि मैं अपनी जान पर कोई बुराई करुँ या किसी और मुसलमान के लिए बुराई का कारण बनूँ । (अबूदाऊद ४/३१७ , और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१४२)

110- يَقْرَأُ ﴿الٓمٓ﴾ تَنْزِيلَ السَّجْدَةِ وَتَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ .

११०. सूरतुस-सज्दा ﴿الٓمٓ﴾ تَنْزِيلَ السَّجْدَةِ और सूरतुल-मुल्क تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ पढ़े ।

(त्रिमिज़ी , नसाई और देखिए सहीहुल् जामिअ़ ४/२५५)

111- ((اَللّٰهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِيَ إِلَيْكَ ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ ، لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَا مِنْكَ إِلاَّ إِلَيْكَ ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ))

१११. ऐ अल्लाह[15] मैं ने अपने नफ्स (प्राण) को तेरे ह़वाले कर दिया और अपना मामला तुझे सौंप दिया और अपना चेहरा तेरी तरफ कर लिया और अपनी पीठ तेरी ओर झुकाई । तेरी तरफ रग़बत् करते हुए और तुझ से डरते हुए । तेरे दर के सिवा न कोई पनाह की जगह है और न भाग कर जाने की । मैं ईमान लाया तेरी उस किताब पर जो तू ने उतारी और तेरे उस नबी पर जो तू ने भेजा ।

(इस दुआ को पढ़ने वाले के बारे में नबी ﷺ ने फरमायाः "अगर तुम्हारी मौत हो जाये तो तुम्हारी मौत फित्रते इस्लाम पर होगी"। बुख़ारी फत्हुल् बारी के साथ ११/११३ मुस्लिम ४/२०८१)

29- रात को कर्वट् बदल्ते समय की दुआ

रात को जब करवट् बदले तो यह दुआ पढ़े :

112- ((لاَإِلَهَ إِلاَّ اللهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ، رَبُّ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ))

११२. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़् नहीं । जो अकेला और ताक़तवार है । आसमानों और ज़मीन और उन के बीच की सारी चीज़ों का रब, बहुत ग़ालिब बहुत माफ करने वाला है । (इसे ह़ाकिम् ने रिवायत् करके सह़ीह़ कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है १/५४०, अमलुल-यौमि वल-लैला नसाई, इब्नुस-सुन्नी, देखिए सह़ीहुल् जामिअ् ४/२१३)

[15] जब तुम सोने चलो तो नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू कर लो फिर दाहिने करवट पर लेट कर यह दुआ पढ़ो।

30- नींद में बेचैनी और घब्राहट् तथा वह्शत् की दुआ

113-((أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ ، وَشَرِّ عِبَادِهِ ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينَ وَأَنْ يَحْضُرُونِ))

११३. मैं अल्लाह के पूरे कलिमात की पनाह पकड़ता हूँ उस के गुस्से और उस की सज़ा से, उस के बन्दों के शर् से, शैतानों के चोकों से और इस बात से कि वे मेरे पास ह़ाजिर हों।

(अबूदाऊद ४/१२ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१७१)

31- कोई आदमी बुरा ख़्वाब (सपना) देखे तो क्या करे ?

११४.

(१) अपनी बायीं ओर् तीन बार थूके। (मुस्लिम ४/१७७२)

(२) शैतान और अपने इस ख़्वाब की बुराई से तीन बार अल्लाह की पनाह माँगे। (मुस्लिम ४/१७७२, १७७३)

(३) यह ख़्वाब किसी को न सुनाए। (मुस्लिम ४/१७७२)

(४) जिस पहलू पर लेटा हो उसे बदल् दे। (मुस्लिम४/१७७३)

११५.

(५) अगर इच्छा हो तो उठ कर नमाज़ पढ़े।

(मुस्लिम ४/१७७३)

32- कुनूते वित्र की दुआएँ ।

116-((اَللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ ، وَعَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ ، وَتَوَلَّنِي فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ ، وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ ، وَقِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ ، فَإِنَّكَ تَقْضِي وَلاَ يُقْضَى عَلَيْكَ ، إِنَّهُ لاَ يَذِلُّ مَنْ وَالَيْتَ ، [وَلاَيَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ] ، تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ))

११६. ऐ अल्लाह तू ने जिन लोगों को हिदायत् दी है उन्हीं हिदायत याफता लोगों में से मुझे भी कर दे और जिन लोगों को तूने आफियत् दी है उन्हीं के साथ मुझे भी आफियत् दे और जिन का तू वाली बना है उन्हीं के साथ साथ मेरा भी वाली बन जा , और तूने जो कुछ मुझे अता किया है उस में मेरे लिए बरकत् दे , और जो फैसिले तूने किए हैं उन की बुराई से मुझे महफूज रख् । क्योंकि तू ही फैसिला करने वाला है और तेरे खिलाफ कोई भी फैसिला नहीं कर सकता । जिस का तू दोस्त बन जाए वह कभी रुसवा नहीं हो सकता , और जिस का तू दुश्मन बन जाए वह इज़्ज़त् वाला नहीं हो सकता । ऐ हमारे रब् तू बहुत बरकत् वाला और बुलन्द है ।

(अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, अहमद, दारमी, हाकिम, बैहक़ी, दोनो कोष्ठों के बीच बैहक़ी के शब्द हैं, और देखिए: सहीह त्रिमिज़ी १/१४४, सहीह इब्ने माजा १/१९४, इरवाउल ग़लील 'अलबानी' २/१७२)

117 - ((اَللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ ، لاَ أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ، أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ)) .

११७. ऐ अल्लाह मैं तेरी नाराज़गी से भाग कर तेरी रज़ा की ओर पनाह पकड़ता हूँ और तेरी सज़ा से तेरी माफी की पनाह चाहता हूँ, और तुझ से तेरी ही पनाह चाहता हूँ। मैं तेरी पूरी तारीफ बयान करने की ताक़त् नहीं रखता। तू उसी तरह है जिस तरह तू ने खुद् अपनी तारीफ की है।

(अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८० और सहीह इब्ने माजा १/१९४, इरवाउल ग़लील 'अलबानी' २/१७५)

118- اَللَّهُمَّ إِيَّاكَ نَعْبُدُ ، وَلَكَ نُصَلِّي وَنَسْجُدُ ، وَإِلَيْكَ نَسْعَىٰ وَنَحْفِدُ، نَرْجُو رَحْمَتَكَ ، وَنَخْشَىٰ عَذَابَكَ ، إِنَّ عَذَابَكَ بِالْكَافِرِينَ مُلْحَقٌ. اَللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَعِينُكَ ، وَنَسْتَغْفِرُكَ ، وَنُثْنِي عَلَيْكَ الْخَيْرَ ، وَلاَ نَكْفُرُكَ ، وَنُؤْمِنُ بِكَ، وَنَخْضَعُ لَكَ ، وَنَخْلَعُ مَنْ يَكْفُرُكَ .

११८. ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत् करते हैं। तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं। तेरी तरफ ही कोशिश् और जल्दी करते हैं। तेरी रह़मत् की उम्मीद रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं। तेरा अज़ाब काफिरों को मिलने वाला है। ऐ अल्लाह हम तुझ से मदद् माँगते हैं और तुझ से बख्शिश् माँगते हैं। तेरी अच्छी तारीफ करते हैं। तुझ से कुफ्र नहीं करते और तुझ पर ईमान रखते हैं और तेरे सामने झुकते हैं और जो तुझ से कुफ्र करे हम उस से अपना रिश्ता खत्म करते हैं।

(सुनन कुब्रा बैहक़ी २/२११ और बैहक़ी ने इसकी सनद को सहीह कहा है, शैख़ अल्बानी अपनी किताब इर्वाउल् ग़लील में फरमाते हैं कि इस की सनद् सहीह़ है २/१७० और यह दुआ उमर (رضي الله عنه) के क़ौल से साबित है रसूलुल्लाह ﷺ से नहीं)

33- वित्र से सलाम फेरने के बाद की दुआ

119- سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ.

११९. पाक है बहुत पाकीज़गी वाला बादशाह ।

वित्र से सलाम फेरने बाद यह दुआ तीन बार पढ़े, तीसरी बार बुलन्द आवाज़ से पढ़े और आवाज़ लम्बी करे और उसके साथ यह भी पढ़े :

[رَبِّ الْمَلاَئِكَةِ وَالرُّوحِ]

फरिश्तों और रुह (जिब्रील) का रब् ।

(नसाई ३/२४४, दारकुतनी, बरेकिट के बीच के शब्द दारकुतनी के हैं २/३१, इसकी सनद् सहीह है, देखिए ज़ादुल मआद शुअैब और अब्दुल क़ादिर अरनाऊत की तहक़ीक़ १/३३७)

34- ग़म् (चिन्ता)और फिक्र के समय की दुआएं

120-((اَللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ، ابْنُ عَبْدِكَ، ابْنُ أَمَتِكَ، نَاصِيَتِي بِيَدِكَ، مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ ، عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ، أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ، سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ، أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ ، أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَداً مِنْ خَلْقِكَ، أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ، أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي ، وَنُورَ صَدْرِي، وَجَلاَءَ حُزْنِي، وَذَهَابَ هَمِّي))

१२०. ऐ अल्लाह मैं तेरा बन्दा हूँ । तेरे बन्दे और तेरी बन्दी का बेटा हूँ । तेरा हुक्म मुझ में जारी है । मेरे बारे में तेरा फैसिला

इंसाफ पर मब्नी है । मैं तुझ से तेरे हर उस ख़ास नाम के ज़रिऐ जो तू ने खुद अपना नाम रखा है या उसे अपनी किताब में नाज़िल किया है या अपनी मख़्लूक़ में से किसी को सिखाया है या तूने उसे अपने इल्मे ग़ैब में महफ़ूज़ कर रखा है यह सवाल करता हूँ कि तू कुरआन को मेरे दिल की बहार और मेरे सीने का नूर और मेरे ग़म् को दूर करने वाला और मेरी परेशानी को खत्म करने वाला बना दे ।

(मुसनद् अहमद् १/३९१ शैख़ अल्बानी (रहि) ने इसे सहीह कहा है)

121- ((اَللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ)).

१२१. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ परेशानी और ग़म् से और आजिज़् हो जाने तथा सुस्ती व काहिली से और बुज़दिली और बुख्ल् (कन्जूसी) से और क़र्ज (ऋण) के बोझ और लोगों के ग़ल्बे से । (बुख़ारी ७/१५८ रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ अधिक से अधिक किया करते थे । देखिए बुख़ारी फतहुल्बारी के साथ ११/१७३)

35 - बेक़रारी तथा बेचैनी की दुआ

122- ((لاَإِلَهَ إِلاَّ اللهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ ، لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ الْعَـرْشِ الْعَظِيمِ ، لاَإِلَهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ السَّـمَوَاتِ وَرَبُّ الأَرْضِ وَرَبُّ الْعَـرْشِ الْكَرِيمِ)).

१२२. अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत् के लायक़ नहीं । वह अज़मत् वाला तथा बुर्दबार है । अल्लाह के अलावा कोई

इबादत् के लायक़् नहीं जो बड़े अर्श का रब् है । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं जो आसमानों का रब् और ज़मीन का रब् और अर्शे करीम का रब् है ।

(बुख़ारी ७/१५४ मुस्लिम ४/२०९२)

123- ((اَللَّهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُو فَلاَ تَكِلْنِي إِلَىَ نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ وَأَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ))

१२३. ऐ अल्लाह मैं तेरी रह़मत् ही की आशा रखता हूँ । इस लिए तू मुझे पलक् झपक्ने के बराबर भी मेरे नफ्स (आत्मा) के ह़वाले न कर और मेरे लिए मेरे तमाम काम ठीक कर दे । तेरे सिवा कोई भी इबादत् के लायक़ नहीं ।

(अबूदाऊद ४/३२४ अह़मद् ५/४२ शैख़ अल्बानी रह़ि ने इसे ह़सन् कहा है, देखिए सहीह अबूदाऊद ३/९५९ ।)

124- لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ.

१२४. तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़ नहीं , तू पाक है । बेशक मैं ही ज़ालिमों में से हूँ ।

(त्रिमिज़ी ५/५२९, और हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़ह्वी ने इसकी पुष्टि की है १/५०५, और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१६८)

125- اللهُ اللهُ رَبِّي لاَ أُشْرِكُ بِهِ شَيْئاً.

१२५. अल्लाह, अल्लाह मेरा रब् है, मैं उस के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करता ।

(अबूदाऊद २/८७ और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा २/३३५)

36- दुश्मन् तथा शासन् अधिकारी से मुलाक़ात के समय की दुआ

126- اَللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ.

१२६. ऐ अल्लाह हम तुझी को उन के मुक़ाबिले में करते हैं और उन की शरारतों से तेरी पनाह चाहते हैं।

(अबूदाऊद २/८९, हाकिम ने इसे सहीह़ कहा है और ज़हबी ने भी इस पर अपनी सहमति व्यक्त की है २/१४२)

127- اَللَّهُمَّ أَنْتَ عَضُدِي ، وَأَنْتَ نَصِيرِي ، بِكَ أَحُوْلُ وَبِكَ أَصُولُ وَبِكَ أُقَاتِلُ.

१२७. ऐ अल्लाह तू ही मेरे बाज़ू (सहायक) है और तू ही मेरा मदद्गार है। तेरी ही मदद से मैं दुश्मन की चालों को रोकता हूँ और तेरी ही तौफीक़ से मैं हमला करता हूँ और तेरी ताक़त के साथ ही मैं दुश्मन से लड़ता हूँ।

(अबूदाऊद ३/४३ त्रिमिज़ी ५/५७२ और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१८३)

128- حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ.

१२८. हमारे लिए अल्लाह ही काफी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है। (बुख़ारी ५/१७२)

37- शासक् के अत्याचार से डरने वाले की दुआएं

129- اَللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ، وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، كُنْ لِي جَاراً مِنْ فُلاَنِ بْنِ فُلاَنٍ، وَأَحْزَابِهِ مِنْ خَلاَئِقِكَ، أَنْ يَفْرُطَ عَلَيَّ أَحَدٌ مِنْهُمْ أَوْ يَطْغَىٰ، عَزَّ جَارُكَ، وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ.

१२९. ऐ अल्लाह । सातों आसमानों के रब् और बडे अर्श के रब् मेरे लिए फलाँ बिन फलाँ से और अपनी मख्लूक़ में से उनके जत्थों से इस बात से पनाह देने वाला बन जा कि उन में से कोई मेरे ऊपर ज़ियादती करे या सरकशी करे । तेरी पनाह बहुत मज़बूत है और तेरी तारीफ बहुत बड़ी है और तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़ नहीं । (अद्बुल् मुफ्रद लिल बुखारी न. ७०७, शैख अलबानी ने इसे सहीह कहा है, सहीह अद्बुल् मुफ्रद् ५४५)

130- اَللهُ أَكْبَرُ، اَللهُ أَعَزُّ مِنْ خَلْقِهِ جَمِيعاً، اَللهُ أَعَزُّ مِمَّا أَخَافُ وَ أَحْذَرُ، أَعُوذُ باللهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ، الْمُمْسِكِ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ أَنْ يَقَعْنَ عَلَى الأَرْضِ إِلاَّ بِإِذْنِهِ، مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فُلاَنٍ، وَجُنُودِهِ وَأَتْبَاعِهِ وَأَشْيَاعِهِ، مِنَ الْجِنِّ وَالإِنْسِ، اَللهُمَّ كُنْ لِي جَاراً مِنْ شَرِّهِمْ، جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَعَزَّ جَارُكَ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَلاَ إِلَهَ غَيْرُكَ.

१३०. अल्लाह सब से बडा है । अल्लाह अपनी सारी मख़लूक़ात से सब से ज़्यादा ताक़त और गल्बा वाला है । मैं जिस चीज़ से डरता और खौफ खाता हूँ अल्लाह उस से कहीं ज़्यादा ताक़तवार है । मैं उस अल्लाह की पनाह में आता हूँ जिस के

सिवा कोई इबादत् के लायक़ नही,जो सातों आसमानों को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है लेकिन उस की इजाजत से (गिरसकते हैं), तेरे फलाँ बन्दे के शर् से, और उस के लश्करों, चेलों और जिन्नातों और इन्सानों में से उसके जत्थों की बुराई से (तेरी पनाह में आता हूँ) । ऐ अल्लाह तू उन के शर से मेरे लिए मददगार बन जा । तेरी तारीफ बहुत बड़ी है, तेरी पनाह बहुत मज़बूत है और तेरा नाम बहुत बरकत वाला है और तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़ नहीं ।

(अद्बुल् मुफ्रद लिल बुखारी हदसि न. ७०८, शैख अलबानी ने इसे सहीह कहा है, सहीहुल् अद्बिल् मुफ्रद् ५४६)

38 – दुश्मन् के लिए बद्दुआ

131 – اَللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ، سَرِيعَ الْحِسَابِ، اهْزِمِ الأَحْزَابَ، اَللَّهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ.

१३१. ऐ अल्लाह ! ऐ किताब उतारने वाले, जल्दी हिसाब लेने वाले इन जमाअतों को शिकस्त दे दे, ऐ अल्लाह इन्हें शिकस्त दे और इन्हें सख़्त झिंझोड़ दे । (मुस्लिम ३/१३६२)

39– लोगों से डरे तो यह दुआ माँगे

132– اَللهُمَّ اكْفِنِيهِمْ بِمَا شِئْتَ.

१३२. ऐ अल्लाह मुझे इन से काफी हो जा जिस तरह तू चाहे । (मुस्लिम ४/२३००)

40 - जिसे अपने ईमान में शक् हो जाए उसके लिए दुआ

१३३. (१) अल्लाह की पनाह माँगे ।

(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ६/३३६, मुस्लिम १/१२०)

(२) जिस चीज़ में शक पैदा हो रहा है उस से रुक जाए ।

(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ६/३३६, मुस्लिम १/१२०)

१३४. (३) यह दुआ पढ़े :

134- آمَنْتُ بِا للهِ وَرُسُلِهِ

मैं ईमान लाया अल्लाह और उस के रसूलों पर ।

(मुस्लिम १/११९-१२०)

१३५. (४) अल्लाह का यह फरमान पढ़े :

135- ﴿هُوَّ الأَوَّلُ ، وَالآخِرُ ، وَالظَّاهِرُ، وَالْبَاطِنُ، وَهُوَ بِكُلِّ شَـــيْءٍ عَلِيمٌ ﴾

वही अव्वल् है वही आख़िर है वही जाहिर है वही बातिन् है और वह हर चीज़ को जानने वाला है । (अबूदाऊद ४/३२९ शैख़ अल्बानी (रहि) ने इसे ह़सन् कहा है ,सहीह अबूदाऊद ३/९६२।

41 - क़र्ज की अदायगी के लिए दुआ

136-اَللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلاَلِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

१३६. ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी ह़लाल चीज़ों के साथ अपनी ह़राम चीज़ों से काफी हो जा और मुझे अपने फज़्ल व करम् के ज़रिया अपने सिवा सभी लोगों से बेनियाज़ कर दे ।

(त्रिमिज़ी ५/५६०, देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१८०)

137- اَللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ ، وَالْحَزَنِ ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ.

१३७. ऐ अल्लाह मैं परेशानी और ग़म् से, आ़जिज़ी तथा सुस्ती से, बख़ीली (कन्जूसी) तथा बुज़दिली से, क़र्ज (ऋण) के बोझ और लोगों के अपने ऊपर ग़ालिब आने से तेरी पनाह चाहता हूँ । (बुख़ारी ७/१५८)

42 — नमाज़ में या कुरआन पढ़ते समय पैदा होने वाले वसवसों से बचने की दुआ

138- أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ.

१३८. मैं शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह में आता हूँ।

यह पढ़ कर बायीं ओर तीन बार थूक दो। (मुस्लिम ४/१७२९ इस के रावी उस्मान (रजि) फरमाते हैं कि मैं ने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआला ने इसे मुझ से दूर कर दिया)

43 – उस आदमी की दुआ जिस पर कोई काम मुश्किल् हो जाए

139- اَللَّهُمَّ لاَ سَهْلَ إِلاَّ مَا جَعَلْتَهُ سَهْلاً وَأَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ إِذَا شِئْتَ سَهْلاً .

१३९. ऐ अल्लाह कोई काम आसान नहीं मगर जिसे तू आसान कर दे और तू जब चाहे मुश्किल् को आसान कर देता है ।

(सहीह़ इब्ने हि़ब्बान ह़दीस न० २४२७ (मवारिद) इब्नुस-सुन्नी न.३५१, हाफिज़ ने कहा : यह ह़दीस सहीह है। और अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने इमाम नववी की किताब अल-अज़्कार की तखरीज में इस ह़दीस को सहीह कहा है। देखिए पृष्ठ न.१०६)

44— गुनाह कर बैठे तो कौन सी दुआ पढ़े और क्या करे ?

140- مَا مِنْ عَبْدٍ يُذْنِبُ ذَنْباً فَيُحْسِنُ الطُّهُورَ، ثُمَّ يَقُومُ فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ يَسْتَغْفِرُ اللهَ إِلاَّ غَفَرَ اللهُ لَهُ.

१४०. जब किसी बन्दे से गुनाह हो जाए तो वह अच्छी तरह़ वुज़ू करे फिर खड़ा होकर दो रक्अत (नफ्ली) नमाज़ पढ़े फिर अल्लाह से बख़्शिश् की दुआ माँगे तो अल्लाह तआला ऐसे बन्दे को बख़्श देता है । (अबूदाऊद २/८६ त्रिमिज़ी २/२५७ और शैख अलबानी ने इसे सहीह कहा है, सहीह अबू दाऊद १/२८३)

45- शैतान और उस के वसवसे दूर करने की दुआ

141-الاسْتِعَاذَةُ بِاللهِ مِنْهُ

१४१. (१) शैतान से अल्लाह की पनाह मांगना ।

(अबूदाऊद १/२०६ और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी १/७७ और देखिए सूरा अल-मूमिनून : ९८ , ९९)

142- الأَذَانُ

१४२. (२) अज़ान । (मुस्लिम १/२९१ बुख़ारी १/१५१)

143- الأذكار وقراءة القرآن

१४३. (३) मसनून दुआएँ और कुरआन की तिलावत् ।

(रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि अपने घरों को क़बरस्तान न बनाओ, शैतान उस घर से भागता है जिस में सूरा बक़रा पढ़ी जाये । (मुस्लिम १/५३९)

और सुबह़ व शाम तथा सोने जागने की दुआयें, घर में दाख़िल् होने और घर से बाहर निकल्ने की दुआएँ, मस्जिद में दाख़िल् होने और मस्जिद से बाहर निकल्ने की दुआएँ भी शैतान को भगाती हैं । इसी तरह दूसरी मसनून दुआएँ जैसे सोते समय आयतल् कुर्सी पढ़ना, सूरा बक़रा की आख़िरी दो आयतें पढ़ना और जो आदमी सौ बार पढ़े : ((ला इलाहा इललल्लाहु वह़्दहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् ह़म्दु वहुवा अला कुल्लि शैइन् क़दीर)) तो पूरा दिन शैतान से मह़फ़ूज़ रहेगा । इसी तरह अज़ान भी शैतान को भगाती है ।)

46 – नापसन्दीदा वाक़िआ
पेश आने या बेबसी की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : अल्लाह के यहाँ ताक़त्वर मोमिन् कमज़ोर मोमिन् से बेहतर और महबूब है जबकि दोनों में भलाई है, जो काम तुम्हें नफा दे उस के अभिलाषी बनो और अल्लाह से मदद मांगो, बेबस होकर न बैठो, अगर तुम्हें कोई नुक़्सान पहुँच जाए तो यह मत् कहो कि ((अगर मैं इस तरह् करता तो यह हो जाता)) बल्कि यूँ कहो :

144- قَدَّرَاللهُ وَمَا شَاءَ فَعَلَ

१४४. अल्लाह ने (ऐसा ही) तक़दीर में लिखा था और उस ने जो चाहा किया ।

क्योंकि ((अगर)) का शब्द शैतान का काम शुरू कर देता है ।

(मुस्लिम ४/२०५२)

47 — नया पैदा होने वाले बच्चे की मुबारक्बाद और उसका जवाब

145- بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي الْمَوْهُوبِ لَكَ، وَشَكَرْتَ الْوَاهِبَ، وَبَلَغَ أَشُدَّهُ، وَرُزِقْتَ بِرَّهُ.

१४५. अल्लाह तुम्हें इस बच्चे में जो तुम्हें अता किया गया है बरकत् दे । देने वाले अल्लाह का तुम शुक्र अदा करो । वह अपनी जवानी को पहुंचे और तुम्हें उस का अच्छा सुलूक नसीब हो ।

जिसे मुबारक्बाद दी जा रही हो वह मुबारक्बाद देने वाले के लिए इस तरह दुआ करे :

بَارَكَ اللهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَزَاكَ اللهُ خَيْراً، وَرَزَقَكَ اللهُ مِثْلَهُ، وَأَجْزَلَ ثَوَابَكَ .

अल्लाह तेरे लिए और तुझ पर बरकत् फरमाये और अल्लाह तुझे बेहतरीन बदला दे और अल्लाह उस जैसा तुझे भी नवाज़े और तुझे बहुत ज़्यादा सवाब दे । (नववी की अज़्कार पृष्ठ ३४६, और सलीम हिलाली की सहीहुल अज़्कार लिन-नववी २/७१३)

48 - बच्चों को किन कलिमात के साथ अल्लाह की पनाह में दिया जाए

रसूलुल्लाह ﷺ हसन् और हुसैन को इन कलिमात के साथ अल्लाह की पनाह में दिया करते थे :

146- أُعِيذُكُمَا بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لاَمَّةٍ.

१४६. मैं तुम दोनों को हर शैतान और ज़हरीले जानवर से और हर लग् जाने वाली नज़र से अल्लाह के मुकम्मल् कलिमात के साथ पनाह देता हूँ। (बुख़ारी ४/११९ इब्ने अब्बास की हदीस)

49 - बीमार पुर्सी के वक़्त मरीज़ के लिए दुआ

147- لاَبَأْسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ

१४७. कोई हरज् नहीं यह बीमारी अल्लाह ने चाहा तो (गुनाहों से) पाक करने वाली है।

(बुख़ारी फत्हुलबारी के साथ १०/११८)

(२)

148- أَسْأَلُ اللهَ الْعَظِيمِ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيَكَ.

१४८. मैं बड़ी अज़्मत् वाले अल्लाह से जो अर्शे अज़ीम का रब है सवाल करता हूँ कि वह तुझे शिफा दे। (कोई मुसलमान ऐसे मरीज़ की बीमार पुर्सी करे जिस की मौत का समय न आ पहुँचा हो और सात बार

यह दुआ पढ़े तो अल्लाह के हुक्म से उसे शिफा मिल जाती है, त्रिमिज़ी , अबूदाऊद और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी २/२१० और सहीहुल् जामिअ् ५/१८०)

50- बीमार पुर्सी की फज़ीलत

149 - قال ﷺ ((إذا عاد الرجل أخاه المسلم مشىٰ في خرافة الجنة حتى يجلس فإذا جلس غمرته الرحمة، فإن كان غدوة صلى عليه سبعون ألف ملك حتى يمسي، وإن كان مساء صلىٰ عليه سبعون ألف ملك حتى يصبح))

१४९. हजरत अली (रज़ि) फरमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना कि (आदमी जब अपने मुस्लिम भाई की बीमार पुर्सी के लिए जाता है तो वह बैठने तक जन्नत के फलों तथा मेवों में चलता है, जब वह बैठ जाता है तो उसे (अल्लाह की) रह़मत् ढाँप लेती है, अगर सुबह़ के समय गया हो तो शाम तक सत्तर हज़ार फरिश्ते उस के लिए दुआ करते रहते हैं और अगर शाम के समय गया हो तो सत्तर हज़ार फरिश्ते सुबह़ तक दुआ करते रहते हैं । (त्रिमिज़ी , इब्ने माजा , अह़मद और देखिए सहीह़ इब्ने माजा १/२४४ और सहीह़ त्रिमिज़ी १/२८६ शैख़ अहमद शाकिर ने भी इसे सहीह़ कहा है)

51 - ज़िन्दगी से मायूस मरीज़ की दुआ

150- اَللَّهُمَّ اغْفِرْلِي وَارْحَمْنِي وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ الأَعْلَىٰ.

१५०. ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम् कर और मुझे रफीक़े आला के साथ मिला दे । (बुख़ारी ७ /१० मुस्लिम ४/१८९३)

१५१. आइशा (रज़ि) फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ वफात के समय अपने दोनों हाथों को पानी में डाल कर अपने चेहरे पर फेरने लगे और यह दुआ पढ़ने लगे :

151- لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ إِنَّ لِلْمَوْتِ لَسَكَرَاتٍ

अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं , बेशक़् मौत की कई सख़्तियाँ हैं । (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ८/१४४, इस हदीस में मिसवाक का भी उल्लेख है)

152- لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَاللهُ أَكْبَرْ ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ.

१५२. अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं, वह अकेला है , अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं , अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए हर किस्म की तारीफ है । अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक़् नहीं और न बचने की ताक़त् है और न कुछ करने की मगर अल्लाह की मदद् से ।

(त्रिमिज़ी , इब्ने माजा, शैख़ अल्बानी (रहि) ने इसे सहीह़ कहा है देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१५२ और सहीह़ इब्ने माजा २/३१७)

52 - जो आदमी मरने के क़रीब हो उसे यह कलिमा पढ़ाया जाए

153 – ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ))

१५३. जिस का अख़िरी कलाम ((लाइलाहा इल्लल्लाह)) होगा वह जन्नत में दाख़िल् होगा ।

(अबूदाऊद ३/१९० और देखिए सह़ीहुल् जामिअ् ५/३४२)

53- जिसे कोई मुसीबत् पहुँचे वह निम्नलिखित दुआ पढ़े

154– إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ اَللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خيراً مِنْهَا .

१५४. बेशक् हम अल्लाह ही की मिलकियत हैं और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं । ऐ अल्लाह मुझे मेरी मुसीबत् में सवाब दे और मुझे इस के बदले में इस से बेहतर चीज़ अता कर । (मुस्लिम २/६३२)

54 - मैयित की आँखें बन्द करते वक़्त की दुआ

155– اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لِفُلاَنٍ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِي الْمَهْدِيِّينَ وَاخْلُفْهُ فِي عَقِبِهِ فِي الْغَابِرِينَ وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهُ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ وَافْسَحْ لَهُ فِي قَبْرِهِ وَنَوِّرْ لَهُ فِيهِ .

१५५. ऐ अल्लाह फलाँ को (नाम लेकर कहे) बख़्श दे और हिदायत् पाने वालों में इस का दर्जा (पद) बुलन्द कर और इस के बाद इस के पीछे रहने वालों में तू इस का जानशीन (प्रतिनिधि) बन जा । और ऐ रब्बुल् आलमीन हमें और इसे बख़्श दे और इस के लिए इस की क़ब्र को कुशादा कर दे और इस के लिए उस में रौशनी कर दे । (मुस्लिम २/६३४)

55 – नमाज़े जनाज़ा की दुआ

156- اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ، وَارْحَمْهُ ، وَعَافِهِ ، وَاعْفُ عَنْهُ، وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ، وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ ، وَاغْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ ، وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ ، وَأَبْدِلْهُ دَاراً خَيْراً مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلاً خَيْراً مِنْ أَهْلِهِ، وَزَوْجاً خَيْراً مِنْ زَوْجِهِ ، وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ ، وَأَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ [وَعذَابَ النَّارِ]

१५६. ऐ अल्लाह इसको बख़्श दे, और इस पर रहम् फरमा, और इसको आफियत् दे, और इस को माफ कर दे , और इस की अच्छी मेहमान नवाज़ी कर, और इस की क़ब्र को कुशादा कर दे , और इस के गुनाह को पानी, बर्फ और ओले से धुल् दे । और इस को गुनाहों से इस तरह साफ कर दे जैसे तू ने सफेद कप्ड़े को मैल से साफ कर दिया है । और इसे बदले में इस के घर से अच्छा घर दे, और इस के घर वालों से अच्छे घर वाले दे और इस के जोड़े से अच्छा जोड़ा दे । और इस को जन्नत् में दाख़िल् फरमा । और इसको क़ब्र और जहन्नम् के अज़ाब से बचा ले । (मुस्लिम २ /६६३)

157- اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا، وَمَيِّتِنَا، وَشَاهِدِنَا، وَغَائِبِنَا، وَصَغِيرِنَا، وَكَبِيرِنَا، وَذَكَرِنَا، وَأُنْثَانَا. اَللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الإِسْلاَمِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الإِيمَانِ، اَللَّهُمَّ لاَ تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ وَلاَ تُضِلَّنَا بَعْدَهُ .

१५७. ऐ अल्लाह हमारे जिन्दों और मुर्दों, हमारे हाजिर और गायब, हमारे छोटों और बड़ों और हमारे मर्दों और औरतों को बख़्श दे । ऐ अल्लाह हम मे से जिसको तू ज़िन्दा रखे उसको इस्लाम पर ज़िन्दा रख् और हम में से जिसको तू मौत दे उसको ईमान पर मौत दे । ऐ अल्लाह इसके बद्ले (अज्र) से हम को महरूम न रख् और इस के बाद हम को गुमराह न कर । (इब्ने माजा १/४८०, अहमद २/३६८, देखिए सहीह इब्ने माजा १/२५१)

158- اَللَّهُمَّ إِنَّ فُلاَنَ بْنَ فُلاَنٍ فِي ذِمَّتِكَ ، وَحَبْلِ جِوَارِكَ ، فَقِهِ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ ، وَأَنْتَ أَهْلُ الْوَفَاءِ وَالْحَقِّ . فَاغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.

१५८. ऐ अल्लाह फलाँ बिन् फलाँ तेरे ज़िम्मे और तेरी पनाह में है । इस लिए तू इसे क़ब्र की आज़माइश् और जहन्नम के अज़ाब से बचा । तू वफा और हक़् वाला है । इस लिए इसे बख़्श दे और इस पर रहम कर । बेशक तू ही बख़्शने वाला बहुत ज्यादा मेहरबान है । (इब्ने माजा और देखिए सहीह इब्ने माजा १/२५१ और अबूदाऊद ३/२११)

159- اَللَّهُمَّ عَبْدُكَ وَابْنُ أَمَتِكَ احْتَاجَ إِلَى رَحْمَتِكَ ، وَأَنْتَ غَنِيٌّ عَنْ عَذَابِهِ إِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِي حَسَنَاتِهِ وَإِنْ كَانَ مُسِيئاً فَتَجَاوَزْ عَنْهُ.

१५९. ऐ अल्लाह यह तेरा बन्दा और तेरी बांदी का बेटा तेरी रहमत् का मुहताज हो गया है और तू इस को अज़ाब देने से बेनियाज़ है । अगर यह नेकी करने वाला था तो इस की नेकियों में इज़ाफा कर और अगर बुराई करने वाला था तो इस से दरगुज़र (माफ) फरमा । (हाकिम ने इसे रिवायत् किया और सहीह कहा है और इमाम ज़हबी ने भी इस पर सहमति व्यक्त की है १/३५९ और देखिए शैख़ अल्बानी (रहि) की किताब अहकामुल् जनाइज़् पृष्ठ १२५)

56- बच्चे पर नमाज़े जनाज़ा के दौरान की दुआएं

160- ((اَللهُمَّ أَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ))

१६०. ऐ अल्लाह इसे क़ब्र के अज़ाब से बचा।

(सईद बिन मुसैइब कहते हैं कि मैं ने अबू हुरैरा के पीछे एक ऐसे बच्चे की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी जिस ने कभी कोई पाप नहीं किया था, मैं ने उन्हें इन शब्दों में दुआ करते हुये सुना।... मुवत्ता १/२८८, मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा २/२१७, बैहक़ी ४/६, और इसकी सनद को शुऐब अरनाऊत ने शरहुस-सुन्ना लिल-बग़वी की तहक़ीक़ में सहीह कहा है ५/२५७)

यह दुआ पढ़ना भी बेहतर है:

اَللهُمَّ اجْعَلْهُ فَرَطاً وَذُخْراً لِوَالِدَيْهِ، وَشَفِيعاً مُجَاباً . اَللهُمَّ ثَقِّلْ بِهِ مَوَازِينَهُمَا وَأَعْظِمْ بِهِ أُجُورَهُمَا ، وَأَلْحِقْهُ بِصَالِحِ الْمُؤْمِنِينَ ، وَاجْعَلْهُ فِي كَفَالَةِ إِبْرَاهِيمَ، وَقِهِ بِرَحْمَتِكَ عَذَابَ الْجَحِيمِ، وَ أَبْدِلْهُ دَاراً خَيْراً مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلاً خَيْراً مِنْ أَهْلِهِ، اَللهُمَّ اغْفِرْ لأَسْلاَفِنَا، وَأَفْرَاطِنَا، وَمَنْ سَبَقَنَا بِالإِيمَانِ.

१६०. ऐ अल्लाह इसे इस के माँ बाप के लिए पहले जाकर मेहमान नवाज़ी की तैयारी करने वाला और ज़ख़ीरा बना दे और ऐसा सिफारिशी बना जिस की सिफारिश् क़बूल हो । ऐ अल्लाह इस के साथ इस के माँ बाप दोनों के तराज़ू को भारी कर दे और इस के जरिये से उन दोनों के सवाब को बढ़ा दे और इसे नेक मोमिनों के साथ मिला दे और इसे इब्राहीम की कफालत् में कर दे और अपनी रह़मत् से इसे जहन्नम के अज़ाब से बचा । ऐ अल्लाह इस को बदले में इस के घर से अच्छा घर और इस के घर वालों से अच्छा घर वाले दे। ऐ अल्लाह हमारे असलाफ और हमारे पहले जाकर मेहमान नवाज़ी की तैयारी करने वालों और हम से पहले गुज़रे हुऐ ईमान वालों को माफ कर दे।

(देखिए : इब्ने कुदामा की मुगनी ३/४१६, शैख़ बिन् बाज़ (रहि) की किताब ((अद्दुरूसुल् मुहिम्मा लिआम्मतिल् उम्मा)) पृष्ठ १५)

161- اَللهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطاً ، وَسَلَفاً ، وَأَجْراً.

१६१. ऐ अल्लाह इसे हमारे लिए पहले से जाकर मेहमान नवाज़ी के लिए तैयारी करने वाला और पेशरव् और सवाब का जरिया बना दे । (ह़सन् बसरी ताबई (रहि) बच्चे के जनाज़ा पर सूरा फातिहा और यह दुआ पढ़ते थे । बग़वी की किताब शरहुस्सुन्ना ५/३५७, मुसन्नफ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ हदीस न.६५८८, बुखारी ने इसे किताबुल जनाईज़ में मुअल्लक़ ज़िक्र किया है, ६५ जनाज़ा पर फातिहा पढ़ने का बाब २/११३)

57 – ताज़ियत् की दुआ

(मैयित के घर वालों को किस तरह तसल्ली दें)

162- إنَّ لِلَّهِ مَا أَخَذَ ، وَلَهُ مَا أَعْطَىٰ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُسَمًّىٰ .... فَلتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ.

१६२. अल्लाह ही का है जो उस ने ले लिया और उसी का है जो उस ने अता किया और उस के पास हर चीज़ के लिए एक मुक़र्रर वक्त है। इस लिए आप सब्र से काम लें और सवाब की नीयत् रखें। (बुख़ारी २/८० मुस्लिम २/६३६)

और अगर इस प्रकार कहे तो अच्छा है :

أَعْظَمَ اللهُ أَجْرَكَ ، وأَحْسَنَ عَزَاءَ كَ ، وَغَفَرَ لِمَيِّتِكَ

अल्लाह तआला आप को बहुत ज़्यादा सवाब दे और आप लोगों को अच्छी तरह तसल्ली दे, और आप के मरने वाले् को बख़्श दे। (इमाम नववी की किताब अल्अज़्कार पृष्ठ : १२६)

58 — मैयित को क़ब्र में दाख़िल् करते समय की दुआ

163- بِسْمِ اللهِ وَعَلَىٰ سُنَّةِ رَسُولِ اللهِ.

१६३. अल्लाह के नाम से और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत के मुताबिक़ तुम्हें क़ब्र में दाख़िल कर रहा हूँ। (अबूदाऊद ३/३१४ सनद् सह़ीह़ है। मुसनद् अह़मद् के शब्द यह हैं : بِسْمِ اللهِ وَعَلَىٰ مِلَّةِ رَسُوْلِ اللهِ

और इस की सनद् भी सह़ीह़ है)

59 - मैयित को दफन् करने के बाद की दुआ

164- اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ اَللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ .

१६४. ऐ अल्लाह इसे माफ कर दे, ऐ अल्लाह इसे साबित क़दम रख ।

(रसूलुल्लाह ﷺ जब मुर्दे को दफन करने से फारिग़ होते तो उस के पास ठहर कर फरमाते: (अपने भाई के लिए अल्लाह से बख़्शिश् माँगों और इस के लिए साबित् क़दम् रहने की दुआ करो क्योंकि अब इस से सवाल किया जायेगा । अबूदाऊद ३/३१५ और इमाम ह़ाकिम ने इसे रिवायत करके सह़ीह़ कहा है और इमाम ज़हबी ने इस पर सहमति व्यक्त की है १/३७०)

60 – क़ब्रों की ज़ियारत् की दुआ

165- اَلسَّلامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ وَإِنَّـا إِنْ شَاءَ اللهُ بِكُمْ لاَحِقُونَ [وَيَرْحَمُ اللهُ الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنَّا وَالْمُسْـتَأْخِرِينَ] أَسْأَلُ اللهُ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةُ .

१६५. ऐ इस घर वाले (क़ब्र तथा बर्ज़ख़ी घर वाले) मोमिनो और मुसलमानो ! तुम पर सलाम हो और हम भी अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम से मिलने वाले हैं । [और हम में से पहले जाने वालों पर और बाद में जाने वालों पर अल्लाह रह़म फरमाए ।] मैं अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह से आ़फियत् का सवाल करता हूं । (मुस्लिम २/६७१, इब्ने माजा १/४९४, और शब्द उन्हीं के हैं और बुरैदा रावी हैं, दोनों बरेकिटों के बीच मुस्लिम में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस के शब्द हैं २/६७१)

61- आँधी की दुआएँ

166- اَللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا.

१६६. ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस की भलाई का सवाल करता हूँ और इस की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ। (अबूदाऊद ४/३२६ इब्ने माजा २/१२२८ और देखिए सहीह़ इब्ने माजा २/३०५)

167- اَللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا ، وَخَيْرَ مَا فِيهَا ، وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ مَا فِيهَا ، وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ.

१६७. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस की भलाई का और उस चीज़ की भलाई का जो इस में है और उस चीज़ की भलाई का जिस के साथ यह भेजी गई है और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस की बुराई से और उस चीज़ की बुराई से जो इस में है और उस चीज़ की बुराई से जिस के साथ यह भेजी गई है। (मुस्लिम २/६१६ बुख़ारी ४/७६)

62- बादल गरजते समय पढ़ी जाने वाली दुआ

अब्दुल्लाह बिन् जुबैर (رضي الله عنه) जब बादल की गरज् सुनते तो बातें छोड़ देते और यह दुआ पढ़ते :

168- سُبْحَانَ الَّذِي يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلاَئِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ

१६८. पाक है वह ज़ात बादल् की गरज जिस की तस्बीह़ बयान करती है उस की तारीफ के साथ और फरिश्ते भी उस के डर से उस की तस्बीह़ पढ़ते हैं। (मोवत्ता २/९९२ शैख़ अल्बानी (रहि) फरमाते हैं कि सह़ाबी से इस दुआ की सनद् सह़ीह़ है)

63- बारिश् माँगने की कुछ दुआएँ

169- اَللَّهُمَّ أَسْقِنَا غَيْثاً مُغِيثاً مَرِيئاً مَرِيعاً ، نَافِعاً غَيْرَ ضَارٍّ ، عَـاجِلاً غَيْرَ آجِلٍ.

१६९. ऐ अल्लाह हमें ऐसी बारिश् अता कर जो मदद् गार, खुश्गवार , सरसब्ज़ करने वाली और फायदा पहुँचाने वाली हो, नुक़्सान देने वाली न हो, जल्दी आने वाली हो न कि देर से आने वाली । (अबूदाऊद १/३०३, शैख अलबानी ने सहीह अबू दाऊद में इस की सनद को सहीह़ कहा है १/२१६)

170- اللَّهُمَّ أَغِثْنَا، اللَّهُمَّ أَغِثْنَا، اللَّهُمَّ أَغِثْنَا.

१७०. ऐ अल्लाह हमें बारिश् दे । ऐ अल्लाह हमें बारिश् दे । ऐ अल्लाह हमें बारिश् दे । (बुख़ारी १/२२४ मुस्लिम २/६१३)

171- اللَّهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ ، وَبَهَائِمَكَ ، وَانْشُرْ رَحْمَتَكَ وَأَحْيِي بَلَدَكَ الْمَيِّتَ.

१७१. ऐ अल्लाह अपने बन्दों और अपने चौपायों को पानी पिला और अपनी रह़मत् को फैला दे और अपने मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दे । (अबूदाऊद १/३०५ और शैख अलबानी ने सहीह अबूदाऊद में इसे हसन कहा है १/२१८)

64- बारिश् उतरते समय की दुआ

172- اَللَّهُمَّ صَيِّباً نَافِعاً

१७२. ऐ अल्लाह इसे नफा देने वाली बारिश् बना दे । (बुख़ारी फतहुल् बारी के साथ २/५१८)

65- बारिश् उतरने के बाद की दुआ

173- مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللهِ وَرَحْمَتِهِ.

१७३. हम पर अल्लाह के फज़्ल और उस की रह़मत् से बारिश् हुई । (बुख़ारी १/२०५ मुसिलम १/८३)

66- बारिश् रुकवाने के लिए दुआ

174- اَللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلاَ عَلَيْنَا. اَللَّهُمَّ عَلَى الآكَامِ والظِّرَابِ ، وَبُطُونِ الأَوْدِيَةِ ، وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ

१७४. ऐ अल्लाह हमारे आस पास बारिश् बरसा और (अब) हम पर न बरसा । ऐ अल्लाह टीलों और पहाड़ियों पर और वादियों के बीच और पेड़ों के उगने की जगहों पर बारिश् बरसा ।

(बुख़ारी १/२२४ मुस्लिम २/६१४)

67- नया चाँद देखने की दुआ

175- اللهُ أَكْبَرُ ، اَللَّهُمَّ أَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالأَمْنِ وَالإِيمَانِ ، وَالسَّلامَةِ وَالإِسْلاَمِ ، وَالتَّوْفِيقِ لِمَا تُحِبُّ رَبَّنَا وَتَرْضَى، رَبُّنَا وَرَبُّكَ اللهُ .

१७५. अल्लाह सब से बड़ा है । ऐ अल्लाह तू इसे हम पर तुलू कर अम्न , ईमान , सलामती और इस्लाम के साथ और उस

चीज़ की तौफीक़ के साथ जिस को तू पसन्द करता है ऐ हमारे रब और जिस से तू खुश होता है । (ऐ चाँद) हमारा रब् और तेरा रब् अल्लाह है । (त्रिमिज़ी ५/५०४ दारमी १/३३६ शब्द दारमी के हैं और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१५७)

68- रोज़ा खोलते समय की दुआयें

176- ذَهَبَ الظَّمَأُ ، وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ ، وَثَبَتَ الأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللهُ

१७६. प्यास चली गई और रगें तर हो गईं और अगर अल्लाह ने चाहा तो अज्र (सवाब) साबित् हो गया ।

(अबूदाऊद २/३०६ और देखिए सहीहुल् जामिअ् ४/२०९)

177- اللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ أَنْ تَغْفِرَلِي

१७७. ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी उस रह़मत के जरिये से जिस ने हर चीज़ को घेर रखा है यह सवाल करता हूँ कि तू मुझे बख़्श दे । (इब्ने माजा १/५५७, यह दुआ अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन् आ़स (رضي الله عنه) रोज़ा खोलते समय पढा करते थे, ह़ाफिज़ ने अल्अज़्कार की तख़रीज में इसे ह़सन् कहा है । देखिए अज़कार की शरह़ ४/३४२)

69- खाना खाने से पहले की दुआ

(१) रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से कोई खाना खाने लगे तो पढ़े :

178- ((بِسْمِ اللهِ))

१७८. अल्लाह के नाम से खाना शुरु करता हूँ ।

और अगर शुरू में कहना भूल जाए तो कहे :

((بِسْمِ اللهِ فِي أَوَّلِهِ وَآخِرِهِ))

अल्लाह के नाम से (खाना शुरु करता हूँ) इस के शुरू में और इस के आख़िर में । (अबूदाऊद ३/३४७ त्रिमिज़ी ४/२८८ और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी २/१६७)

(२) जिसे अल्लाह तआला खाना खिलाए वह यह दुआ पढ़े :

179- اَللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْراً مِنْهُ.

१७९. ऐ अल्लाह हमारे लिए इस में बरकत् दे और हमें इस से बेहतर खिला ।

और जिसे अल्लाह तआला दूध पिलाए वह यह दुआ पढ़े :

"اَللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ "

ऐ अल्लाह हमारे लिए इस में बरकत् अता कर और हमें इस से भी ज़्यादा दे । (त्रिमिज़ी ५/५०६ और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१५८)

70- खाने से फारिग़ होने के बाद की दुआ

180- الْحَمْدُ لِلهِ الَّذِي أَطْعَمَنِي هَذَا ، وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلاَ قُوَّةٍ .

१८०. तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे यह खाना खिलाया और मेरी किसी भी ताक़त् के बिना मुझे यह खाना दिया । (अबूदाऊद , त्रिमिज़ी, इब्नेमाजा और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१५९)

181- الْحَمْدُ للهِ حَمْداً كَثِيراً طَيِّباً مُبَارَكاً فِيهِ غَيْـرَ [مَكْفِـيٍّ وَلاَ] مُوَدَّعٍ ، وَلاَ مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا

१८१. तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है, बहुत ज़्यादा, पाकीज़ा तारीफ जिस में बरकत् की गई है , जिसे न काफी समझा गया है, न विदा किया गया है और न उस से बेनियाज़ हुआ जा सकता है ऐ हमारे रब् । (बुख़ारी ६/२१४ त्रिमिज़ी ५/५०७, शब्द त्रिमिज़ी के हैं)

71- मेहमान की मेज़बान के लिए दुआ

182- اللهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ ، وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ.

१८२. ऐ अल्लाह तू ने इन्हें जो कुछ दिया है उस में इन के लिए बरकत् फरमा और इन्हें बख़्श दे और इन पर रहम फरमा ।

(मुस्लिम ३/१६१५)

72- जो आदमी कुछ पिलाए या पिलाना चाहे उस के लिए दुआ

183- اَللَّهُمَّ أَطْعِمْ مَن أَطْعَمَنِي وَاسْقِ مَنْ سَقَانِي

१३८. ऐ अल्लाह जिस ने मुझे खिलाया तू उसे खिला और जिस ने मुझे पिलाया तू उस को पिला । (मुस्लिम ३/१२६)

73- किसी के यहाँ रोज़ा इफ्तारी करने की दुआ

184- أَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُونَ ، وَأَكَلَ طَعَامَكُمُ الأَبْرَارُ ، وصَـلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلاَئِكَةُ.

१८४. तुम्हारे यहाँ रोज़ेदार इफतार करते रहें और तुम्हारा खाना नेक लोग खाते रहें और फरिश्ते तुम्हारे लिए दुआयें करते रहें।

(अबूदाऊद ३/३६७, इब्ने माजा १/५५६, नसाई अमलुल-यौमि वल-लैला न.२९६-२९८, और उन्हों ने बयान किया है कि नबी ﷺ जब किसी के घर इफतार करते थे यह दुआ पढ़ते थे। और शैख़ अल्बानी (रहि) ने सहीह अबू दाऊद में इसे सहीह कहा है २/७३०)

74- दुआ जब खाना हाज़िर हो और रोज़ादार रोज़ा न खोले

185- إذا دعي أحدكم فليجب، فإن كان صائماً فليصل وإن كـان مفطراً فليطعم .

१८५. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से किसी को (खाने की) दावत दी जाए तो उसे क़बूल करनी चाहिए, अगर वह रोज़ादार हो तो उसे (दावत देने वाले के लिए) दुआ करनी चाहिए और अगर रोज़े से न हो तो उसे खाना चाहिए। (मुस्लिम २/१०५४)

75- रोज़ादार को जब कोई गाली दे तो वह क्या कहे ?

186- إِنِّي صَائِمٌ، إِنِّي صَائِمٌ

१८६. मैं रोज़े से हूँ , मैं रोज़े से हूँ । (बुखारी फत्हुल् बारी के साथ ४/१०३ मुस्लिम २/८०६)

76- पहला फल देखने के समय की दुआ

187- اَللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي ثَمَرِنَا، وبَارِكْ لَنَا فِي مَدِينَتِنَا ، وبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِنَا ، وبَارِكْ لَنَا فِي مُدِّنَا .

१८७. ऐ अल्लाह हमारे लिए हमारे फल् में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे शहर में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे साअ़ में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे मुद् में (अर्थात नाप, तौल के पैमानों में) बरकत् दे । (मुस्लिम २/१०००)

77- छींक की दुआ

188-((إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ اَلْحَمْدُ لِلَّهِ ، وَلْيَقُلْ لَهُ أَخُوْهُ أَوْ صَاحِبُهُ : يَرْحَمُكَ اللهُ ، فَإِذَا قَالَ لَهُ : يَرْحَمُكَ اللهُ ، فَلْيَقُلْ : يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ))

१८८. रसूल ﷺ ने फरमाया : जब तुम में से किसी को छींक आए तो उसे कहना चाहिए :

اَلْحَمْدُ لِلَّهِ

हर क़िस्म की तारीफ अल्लाह ही के लिए है ।

और उस के दोस्त या भाई को कहना चाहिए :

يَرْحَمُكَ اللهُ

अल्लाह तुझ पर रह़म् करे ।

और जब उस का भाई उसे يَرْحَمُكَ اللهُ कहे तो वह उसे यह कहे :

يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

अल्लाह तुम्हें हिदायत् दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे ।

(बुख़ारी ७/१२५)

78- जब काफिर छींकते समय अल्ह़म्दुलिल्लाह कहे तो उस के लिए क्या कहा जाए

189- يَهْدِيكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

१८९. अल्लाह तुम को हिदायत् दे और तुम्हारी ह़ालत् संवार दे ।

(त्रिमिज़ी ५/८२, अहमद ४/४००, अबू दाऊद ४/३०८ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी २/३५४)

79- शादी करने वाले के लिए दुआ

190- بَارَكَ اللهُ لَكَ ، وَبارَكَ عَلَيْكَ ، وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ.

१९०. अल्लाह तेरे लिए बरकत् करे और तुझ पर बरकत् करे और तुम दोनों को भलाई पर इकट्ठा करे ।

(अबूदाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी १/३१६)

80- शादी करने और सवारी ख़रीदने वाले की दुआ

१९१. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से कोई आदमी किसी औरत से शादी करे या लौंडी ख़रीदे तो यह कहे:

191- اللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ.

ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस की भलाई का सवाल करता हूँ और उस चीज़ की भलाई का सवाल करता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है और तेरी पनाह माँगता हूँ इस के शर से और उस चीज़ के शर से जिस पर तू ने इसे पैदा किया है ।

और जब कोई ऊँट (या जानवर) ख़रीदे तो उस की कौहान की चोटी पकड़ कर यही दुआ पढ़े । (अबूदाऊद २/२४८ इब्ने माजा १/६१७ और देखिए सहीह़ इब्ने माजा १/३२४)

81- बीवी के पास आने से पहले की दुआ

192- بِسْمِ اللهِ. اَللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ، وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا.

१९२. अल्लाह के नाम से । ऐ अल्लाह हमें शैतान से बचा और जो (औलाद) हमें अता करे उसे भी शैतान से बचा । (बुख़ारी ६/१४१ मुस्लिम २/१०२८)

82- गुस्सा आ जाने के वक़्त की दुआ

193- أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

१९३. मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ।

(बुख़ारी ७/९९ मुस्लिम ४/२०१५)

83 – मुसीबत् में मुब्तला आदमी को देखने के वक़्त की दुआ

194- الْحَمْدُ للهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلاَكَ بِهِ وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيلاً

१९४. तमाम तारीफ उस अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे उस चीज़ से आफियत् दी जिस में तुझे मुब्तला किया है और उस ने मुझे अपने पैदा किए हुए बहुत से लोगों पर फज़ीलत् बख़्शी। (त्रिमिज़ी ५/४९४, ५/४९३ और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१५३)

84- मजलिस् में पढ़ने की दुआ

अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के लिए एक ही मजलिस में उठने से पहले सौ (१००) बार यह दुआ शुमार की जाती थी :

195- رَبِّ اغْفِرْ لِي وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُورُ

१९५. ऐ मेरे रब् मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा क़बूल फरमा बेशक् तू बहुत तौबा क़बूल करने वाला , बहुत ज्यादा बख़्शने वाला है । (त्रिमिज़ी वग़ैरह और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५३ और सहीह इब्ने माजा २/३२१ श्ब्द त्रिमिज़ी के हैं)

85- मजलिस के गुनाह दूर करने की दुआ (मजलिस क कफ़्फारा)

196- سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ، أَشْهَدُ أَن لاَّ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ.

१९६. ऐ अल्लाह तू पाक है और तेरे लिए हर प्रकार की तारीफ है । मैं शहादत् देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । मैं तुझ से माफी चाहता हूँ और तुझ से तौबा करता हूँ । (त्रिमिज़ी , अबूदाऊद , नसाई , इब्नेमाजा और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५३, आइशा (रजि) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ किसी मजलिस् में बैठते या कुरआन पढ़ते या नमाज़ पढ़ते तो उसका इख़्तिताम इस दुआ पर करते थे ..... नसाई की अमलुल यौम वल-लैला न.३०८, मुसनद् अह़मद् ६/७७, डा. फारुक़ हमादा ने नसाई की अमलुल यौमि वल-लैला की तहक़ीक़ पृष्ठ २७३ में इसे सहीह कहा है)

86- (ग़फरल्लाहु लका) यानी अल्लाह तुझे माफ फरमाये कहने वाले के लिए दुआ

197- ((وَلَكَ))

१९७. और तुझे भी माफ करे ।

(मुस्नद् अह़मद् ५/८२, नसाई की अमलुल यौम वल-लैला पृष्ठ :२१८ न.४२१, डा. फारुक़ हमादा की तहक़ीक)

87- अच्छा सुलूक करने वाले के लिए दुआ

198- جَزَاكَ اللهُ خَيْراً

१९८. अल्लाह तआला तुझे बेहतरीन बदला दे ।

(त्रिमिज़ी हदीस २०३५ और देखिए सह़ीहुल् जामिअ् हदीस न० – ६२४४ और सह़ीह़ त्रिमिज़ी २/२००)

88- दज्जाल से मह़फूज़ रहने के वज़ाईफ़

१९९. (१) जो आदमी सूरा कहफ् के शुरू की दस् आयतें याद कर ले वह दज्जाल से मह़फूज़ (सुरक्षित) रहेगा ।

(मुस्लिम १/५५५, और एक रिवायत में है सूरा कहफ् की आखिरी दस आयतें मुस्लिम १/५५६)

(२) हर नमाज़ के आख़िरी तशह़्हुद् के बाद दज्जाल के फित्ने से पनाह माँगना । (देखिए इसी किताब में दुआ न०–५५,५६)

89- (मुझे तुम से अल्लाह के लिए मोह़ब्बत् है) कहने वाले के लिए दुआ

200- أَحَبَّكَ الَّذِي أَحْبَبْتَنِي لَهُ.

२००. वह हस्ती (अल्लाह) तुझ से मोहब्बत् करे जिस के लिए तूने मुझ से मोहब्बत् की । (अबूदाऊद ४/३३३, शैख अलबानी ने सहीह सुनन अबू दाऊद ३/९६५ में इसे हसन कहा है)

90- माल व दौलत पेश करने वाले के लिए दुआ

201- بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ.

२०१. अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे परिवार और माल व दौलत में बरकत् दे । (बुख़ारी फत्हुल् बारी के साथ ४/८८)

91- क़र्ज़ अदा करते समय क़र्ज़ देने वाले के लिए दुआ

202- بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ ، إِنَّمَا جَزَاءُ السَّلَفِ الْحَمْدُ وَالأَدَاءُ .

२०२. अल्लाह तआला तेरे लिए तेरे परिवार और माल में बरकत् दे । क़र्ज का बदला तो सिर्फ तारीफ (शुक्रिया) और अदा करना है ।

(नसाई की अमलुल यौमि वल-लैला पृष्ठ :३००, इब्ने माजा २/८०९ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/५५)

92- शिर्क से डरने की दुआ

203- اَللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أُشْرِكَ بِكَ وَأَنَا أَعْلَمُ ، وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لاَ أَعْلَمُ.

२०३. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस बात से कि मैं जानते हुए तेरे साथ किसी को शरीक बनाऊँ। और मैं तुझ से बख़शिश् माँगता हूँ उन गुनाहों से जो मैं नहीं जानता।

(मुस्नद अहमद ४/४०३ और देखिए सह़ीहुल् जामिअ़ ३/२३३ और अलबानी की सह़ीह़ तरग़ीब व तरहीब १/१९)

93- बरकत की दुआ देने वाले के लिए दुआ

204- ((وَفِيكَ بَارَكَ اللهُ))

२०४. अल्लाह तुझे भी बरकत् दे।

(इब्नुस्सुन्नी पृष्ठ १३८ हदीस न०-२७८ और देखिए इब्नुल् क़ैयिम् की किताब अल्वाबिलुस्सैयिब् पृष्ठ : ३०४, तहक़ीक़ बशीर मुहम्मद ऊयून)

94- बद् फाली को नापसन्द करने की दुआ

205- اَللَّهُمَّ لاَ طَيْرَ إِلاَّ طَيْرُكَ وَلاَ خَيْرَ إِلاَّ خَيْرُكَ وَلاَ إِلَهَ غَيْرُكَ

२०५. ऐ अल्लाह नहीं है कोई नहूसत् मगर तेरी ही नहूसत् (यानी तेर ही हुक्म से) और नही है कोई भलाई मगर तेरी ही भलाई और तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं।

(अहमद२/२२०, इब्नुस्सुन्नी न. २९२, और अलबानी ने अल्अहादीसुस्सहीहा ३/५४, न. १०६५ में इसे सहीह कहा है, किन्तु फाल (नेक फाली) को नबी ﷺ पसन्द करते थे, इसी लिए एक दफा एक आदकी के मुँह से आप ने एक अच्छी बात सुनी तो आप को अच्छी लगी, चुनांचे फरमाया: तेरी फाल हम ने तेरे मुँह से ली है । अबू दाऊद, अहमद, शैख अलबानी ने अल-अहादीसुस-सहीहा २/३६३ में इसे सहीह कहा है और इसकी निसबत अखलाकुन-नबी पृष्ठ : २७० में अबुश-शैख की ओर की है)

95- सवारी पर सवार होने की दुआ

206- بِسْمِ اللهِ ، الْحَمْدُ للهِ ﴿سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ﴾ الْحَمْدُ للهِ ، الْحَمْدُ للهِ ، الْحَمْدُ للهِ، اللهُ أَكْبَرُ ، اللهُ أَكْبَرُ ، اللهُ أَكْبَرُ ، سُبْحَانَكَ اللهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي ، فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ .

२०६. अल्लाह के नाम से । हर क़िस्म की तारीफ अल्लाह के लिए है । पाक है वह ज़ात जिस ने इस (सवारी) को हमारे क़ाबू में कर दिया है हालाँकि हम इसे अपने क़ाबू में नहीं कर सकते थे और हम अपने रब ही की ओर लौट कर जाने वाले हैं । सब तारीफ अल्लाह के लिए है । सब तारीफ अल्लाह के लिए है । सब तारीफ अल्लाह के लिए है । अल्लाह सब से बडा है । अल्लाह सब से बडा है । अल्लाह सब से बडा है । ऐ अल्लाह तू पाक है । वाकई मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है, पस् मुझे बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई गुनाहों को बख़्शने वाला नहीं ।

(अबूदाऊद ३/३४ त्रिमिज़ी ५/५०१ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५६)

96- सफर (यात्रा) की दुआ

207- اللهُ أَكْبَرُ ، اللهُ أَكْبَرُ ، اللهُ أَكْبَرُ ﴿ سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴾ اللهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوَى ، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَى ، اللهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ ، اللهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ ، وَالْخَلِيفَةُ فِي الأَهْلِ ، اللهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالأَهْلِ.

२०७ . अल्लाह सब से बडा है । अल्लाह सब से बडा है । अल्लाह सब से बडा है । पाक है वह ज़ात जिस ने इस को हमारे क़ाबू में कर दिया हालाँकि हम इसे अपने क़ाबू में न कर सकते थे । ऐ अल्लाह हम अपने इस सफर (यात्रा) में तुझ से नेकी और तक़वा और ऐसे अमल् का सवाल करते हैं जिसे तू पसन्द करे । ऐ अल्लाह हमारा यह सफर हम पर आसान कर दे और इस की दूरी को हमारे लिए समेट दे । ऐ अल्लाह तू ही सफर में (हमारा) साथी और घर वालों में जानशीन् है । ऐ अल्लाह मैं तुझ से सफर की मशक़्क़त् से और उसके तकलीफदेह मन्ज़र से और माल तथा घर वालों में बुरी तबदीली (या बुरी हालत में लौटने) से तेरी पनाह चाहता हूँ।

और जब सफर से घर की तरफ वापस् लौटे तो ऊपर की दुआ पढ़े और उस के साथ यह दुआ भी पढ़े :

آيِبُونَ ، تَائِبُونَ ، عَابِدُونَ ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ

हम वापस लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत् करने वाले और अपने रब् ही की तारीफ करने वाले हैं। (मुस्लिम २/९९८)

97- किसी गाँव या शहर में दाख़िल् होने की दुआ

208- اَللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ ، وَرَبَّ الأَرْضِينَ السَّبْعِ وَما أَقْلَلْنَ ، وَرَبَّ الشَّيَاطِينِ وَمَا أَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ . أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ أَهْلِهَا، وَخَيْرَ مَا فِيهَا ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا ، وَشَرِّ أَهْلِهَا، وَشَرِّ مَا فِيهَا.

२०८. ऐ अल्लाह ऐ सातों आसमानों के रब् और उन चीज़ों के रब् जिन पर यह साया कर रखे हैं, और सातों ज़मीनों और उन चीज़ों के रब् जिन को यह उठा रखे हैं, और शैतानों और उन चीज़ों के रब् जिन्हें इन्हों ने गुमराह किया है, और हवाओं के रब् और उन चीज़ों के जो उन्हों ने उड़ायी हैं। मैं तुझ से इस गावँ की भलाई का और इस गावँ में रहने वालों की भलाई का और इस में मौजूद चीज़ों की भलाई का सवाल करता हूँ ,और मैं इस गावँ की बुराई और इस के बासियों की बुराई से और उन चीज़ों की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ जो इस में हैं।

(इमाम हाकिम् ने इसे रिवायत् करके सहीह़ कहा है और इमाम ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है २/१००, इब्नुस्सुन्नी न. ५२४, हाफिज़ ने अज़कार की तखरीज में इसे हसन कहा है ५/१५४, शैख़ बिन् बाज़ (रहि) ने फरमाया: नसाई ने इसे ह़सन् सनद के साथ रिवायत किया है, देखिए तुह़फतुल् अख़्यार पृष्ठ ३७)

98- बाज़ार में दाख़िल् होने की दुआ

209- لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

२०९. अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है । वह ज़िन्दा करता है और मारता है । और वह ज़िन्दा है उसे मौत नहीं आती उसी के हाथ में सब भलाई है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ।

(त्रिमिज़ी ५/२९१ ह़ाकिम् १/५३८, शैख अलबानी ने सहीह इब्ने माजा २/२१ और सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१५२ में इसे ह़सन कहा है)

99- सवारी के फिसल्ने या गिरने के समय की दुआ

210- بِسْمِ اللهِ

२१०. अल्लाह के नाम से । (अबूदाऊद ४/२९६ और शैख अलबानी ने इुसे सहीह अबू दाऊद ३/९४१ में सहीह कहा है)

100- मुसाफिर की मुक़ीम के लिए दुआ

211- أَسْتَوْدِعُكُمُ اللهَ الَّذِي لاَ تَضِيعُ وَدَائِعُهُ.

२११. मैं तुम्हें उस अल्लाह के हवाले करता हूँ जिस के हवाले की हुई चीज़ें कभी नष्ट और बरबाद नहीं होतीं । (अह़मद् २/४०३, इब्ने माजा २/९४३ और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा २/१३३)

101- मुक़ीम आदमी की मुसाफिर के लिए दुआ

212- أَسْتَوْدِعُ اللهَ دِينَكَ ، وَأَمَانَتَكَ ، وَخَوَاتِيمَ عَمَلَكَ.

२१२. मैं तेरे दीन, तेरी अमानत् और तेरे आखिरी अमल को अल्लाह के हवाले करता हूँ । (अह़मद् २/७ त्रिमिज़ी ५/४९९ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी २/१५५)

213- زَوَّدَكَ اللهُ التَّقْوَى، وَغَفَرَ ذَنْبَكَ ، وَيَسَّرَ لَكَ الْخَيْرَ حَيْثُ مَا كُنْتَ.

२१३. अल्लाह तआला तुझे तक़वा अता करे और तेरे गुनाह बख़्शे और तू जहाँ कहीं भी रहे अल्लाह तआला तेरे लिए भलाई आसान कर दे । (त्रिमिज़ी और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१५५)

102- सफर के दौरान तस्बीह और तक्बीर

214- قال جابر رضي الله عنه: ((كنا إذا صعدنا كبرنا، وإذا نزلنا سبحنا))

२१४. जाबिर (رضي الله عنه) फरमाते हैं कि जब हम ऊपर चढ़ते तो तक्बीर ((अल्लाहु अक्बर्)) पढ़ते और नीचे उतरते तो तस्बीह़ ((सुब्ह़ानल्लाह)) कहते थे । (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ६/१३५)

103- मुसाफिर की दुआ जब वह सुबह़ करे

215- سَمَّعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللهِ ، وَحُسْنِ بَلاَئِهِ عَلَيْنَا. رَبَّنَا صَاحِبْنَا ، وَأَفْضِلْ عَلَيْنَا عَائِذاً بِاللهِ مِنَ النَّارِ .

२१५. एक सुनने वाले ने हमारी ओर से अल्लाह की तारीफ और उस के हम पर जो अच्छे इनआमात और एह़सानात हैं उन का शुक्र सुना । ऐ हमारे रब् हमारा साथी बन जा और हम पर फज़्ल फरमा । आग से अल्लाह की पनाह माँगते हुए (हम) यह दुआ करतै हैं । (मुस्लिम ४/२०८६)

104- सफर के दौरान या बिना सफर के किसी जगह ठहरने की दुआ

216- أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

२१६. मैं अल्लाह के पूरे कलिमात के साथ पनाह चाहता हूँ उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की है । (मुस्लिम ४/२०८०)

105- सफर से वापसी की दुआ

जब रसूलुल्लाह ﷺ किसी जंग या ह़ज्ज से वापस लौटते तो हर ऊँची जगह पर तीन बार अल्लाहु अक्बर कहते, फिर यह दुआ पढ़ते :

217 - لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ، آيِبُونَ ، تَائِبُونَ ، عَابِدُونَ ، لِرَبِّنَا حَامِـدُونَ ، صَدَقَ اللهُ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ.

२१७. अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत् के लायक़ नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए मुल्क है । उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । हम वापस लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत् करने वाले और केवल अपने रब् की तारीफ करने वाले हैं । अल्लाह ने अपना वादा सच्चा कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद् की और अकेले अल्लाह ने सारे लश्करों को शिकस्त दी (पराजित कर दिया) (बुख़ारी ७/१६३ मुस्लिम २/९८०)

106- खुश् खबरी या ना पसन्दीदा बात सुनने वाला क्या कहे ?

२१८. रसूलुल्लाह ﷺ के पास अगर कोई खुश करने वाली खबर् आती तो आप फरमाते :

((اَلْحَمْدُ للهِ الَّذِي بِنِعْمَتِهِ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ))

सब तारीफ अल्लाह ही के लिए है जिस के इन्आम से अच्छे काम मुकम्मल् होते हैं ।

और अगर आप को कोई ना पसन्दीदा मामला पेश आता तो फरमाते :

((اَلْحَمْدُ للهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ))

हर हाल में तमाम तारीफ अल्लाह ही के लिए है ।

(इब्नुस्सुन्नी की अमलुल यौमि वल-लैला, इमाम हाकिम् ने इसे रिवायत् करके सहीह़ कहा है १/४९९, शैख़ अल्बानी रहिमहुल्लाह़ ने सहीहुल् जामिअ् में इसे सहीह़ कहा है ४/२०१)

107- रसूलुल्लाह ﷺ पर दरूद भेजने की फज़ीलत्

219- قالﷺ: ((من صلىٰ علي صلاة صلىٰ الله عليه بها عشراً))

२१९. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जो आदमी मुझ पर एक बार (दरूद भेजे गा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें नाज़िल फरमाये गा । (मुस्लिम १/२८८)

220- وقالﷺ : ((لا تجعلوا قبري عيداً وصلوا علي ، فإن صلاتكم تبلغني حيث كنتم))

२२०. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : ((मेरी क़ब्र को मेलागाह न् बनाओ और मुझ पर दरुद भेजो । तुम जहाँ भी हो तुम्हारा दरुद मुझे पहुँच जाता है । (अबूदाऊद २/२१८ अह़मद् २/३६७, शैख़ अल्बानी रहि ने सहीह़ अबू दाऊद में इसे सहीह़ कहा है २/३८३)

221- وقالﷺ : ((البخيل من ذكرت عنده فلم يصل علي))

२२१. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : बख़ील (कन्जूस) वह है जिस के पास मेरा जिक्र हो और वह मुझ पर दरुद न भेजे ।

(त्रिमिज़ी ५/५५१ और देखिए सहीहुल् जामिअ् ३/२५ और सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१७७)

222- وقالﷺ : ((إن لله ملائكة سياحين في الأرض يبلغوني مـــن أمتي السلام))

२२२. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला के कुछ ऐसे फरिश्ते हैं जो ज़मीन में घूमते फिरते हैं वह मेरे उम्मतियों का सलाम मुझे पहुँचाते हैं। (नसाई, ह़ाकिम् २/४२१ और इस ह़दीस को शैख़ अल्बानी (रहि) ने सहीह़ कहा है देखिए सहीह़ नसाई १/२७४)

223- وقـــالﷺ: ((ما من أحد يسلم علي إلا رد الله علي روحـــي حتى أرد عليه السلام))

२२३. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : कोई आदमी जब भी मुझ पर सलाम पढ़ता है तो अल्लाह तआला मेरी रूह़ (प्राण) को मेरे बदन् में वापस लौटा देता है ताकि मैं उसे सलाम का जवाब दूँ। (अबूदाऊद ह़दीस न०-२०४१ और शैख़ अल्बानी (रहि) ने इस ह़दीस को ह़सन् कहा है देखिए सहीह़ अबूदाऊद १/३८३)

108- सलाम को फैलाना

224- قال رسول اللهﷺ : ((لا تدخلوا الجنة حتى تؤمنوا، ولا تؤمنوا حتى تحابوا، أولا أدلكم على شيء إذا فعلتموه تحاببتم، أفشوا السلام بينكم))

२२४. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : तुम जन्नत में दाख़िल् नहीं हो सकते यहाँ तक कि तुम मोमिन् बनो और तुम मोमिन् नहीं होगे यहाँ तक कि आपस में एक दूसरे से मोहब्बत करो । क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ जिस के करने से तुम एक दूसरे से मोहब्बत करने लगोगे । आपस में सलाम को खूब फैलाओ ।

(मुस्लिम १/७४, वगैरा)

225- ((ثلاث من جمعهن فقد جمع الإيمان: الإنصاف من نفسك، وبذل السلام للعالم، والإنفاق من الإقتار))

२२५. अम्मार बिन् यासिर (رضي الله عنه) फरमाते हैं कि : तीन चीज़ें ऐसी हैं कि जो आदमी इन तीनों को हासिल् कर ले तो उस ने ईमान जमा कर लिया : (१) अपने आप से इन्साफ करना । (२) तमाम लोगों से सलाम करना । (३) तन्गदस्त होते हुये भी (अल्लाह की राह में) ख़र्च करना । (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ १/८२ मौकूफ मोअल्लक् यानी यह सहाबी का फरमान है)

226 - وعن عبد الله بن عمر رضي الله عنهما: أن رجلاً سأل النبي ﷺ أي الإسلام خير؟ قال: ((تطعم الطعام، وتقرأ السلام على من عرفت ومن لم تعرف)).

२२६. अब्दुल्लाह बिन् उमर (रज़ि.) फरमाते हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया कि इस्लाम का कौन सा काम सब से बेहतर है ? आप ﷺ ने फरमाया: ((यह कि तुम खाना खिलाओ और जिसे तुम पहचानते हो और जिसे नहीं पहचानते सब से सलाम करो ।)) (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ १/५५ मुस्लिम १/६५)

109- काफिर के सलाम का जवाब किस तरह दिया जाए

227 - إذا سلم عليكم أهل الكتاب فقولوا: وَعَلَيْكُمْ

२२७. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि : जब यहूद व नसारा तुम से सलाम करें तो तुम उन्हें जवाब में कहो :

وَعَلَيْكُمْ

(और तुम पर भी)।

(बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ११/४२ और मुस्लिम ४/१७०५)

110- मुर्ग़ बोलने और गदहा हींगने के वक़्त की दुआ

228 - إذا سمعتم صياح الديكة فأسألوا الله من فضله، فإنها رأت ملكاً وإذا سمعتم نهيق الحمار فتعوذوا بالله من الشيطان ، فإنه رأى شيطاناً.

२२८. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि : जब तुम मुर्ग़ की बाँग सुनो तो अल्लाह तआला से उस का फज़्ल माँगो (मिसाल के तौर पर यह पढ़ो) :

اَللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

क्योंकि वह फरिश्ता देखता है, और जब गदहे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह माँगों क्योंकि वह शैतान देखता है । (यानी यह पढ़ो : أَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ) (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ६/३५० मुस्लिम ४/२०९२)

111- रात को कुत्तों के भूँकने के वक़्त की दुआ

229 - ((إذا سمعتم نباح الكلاب ونهيق الحمير بالليل فتعوذوا بـــالله منهن فإنهن يرين ما لا ترون)).

२२९. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि जब तुम रात के वक़्त कुत्तों के भूँकने और गदहों के हींगने की आवाज़ सुनो तो उन से अल्लाह की पनाह माँगों क्योंकि वह ऐसी चीज़ें देखते हैं जिन्हें तुम नहीं देख पाते । (अबूदाऊद ४/३२७, अहमद ३/३०६ और शैख़ अल्बानी ने इस हदीस को सहीह अबू दाऊद ३/९६१ में सहीह कहा है)

112- उस आदमी के लिए दुआ जिसे तुम ने बुरा भला कहा हो या गाली दी हो

अबू हुरैरा (रजि) फरमाते हैं कि उन्हों ने रसूलुल्लाह ﷺ को यह दुआ करते हुए सुना :

230- ((اللهُمَّ فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَبَبْتُهُ فَاجْعَلْ ذَلِكَ لَهُ قُرْبَةً إِلَيْـــكَ يَـــوْمَ الْقِيَامَةِ))

२३०. ऐ अल्लाह जिस किसी मोमिन को मैं ने बुरा भला कहा हो तो क़यामत् के दिन इसे उस के लिए अपने क़रीब होने का ज़रिया बना दे । (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ११/१७१, मुस्लिम ४/२००७, मुस्लिम के शब्द हैं : **فاجعلها له زكاة ورحمة** (इस को उसके लिए पाकीज़गी और रहमत का ज़रिया बना दे ।)

113- मुसलमान किसी मुसलमान की तारीफ में क्या कहे

231- قال ﷺ : إذا كان أحدكم مادحاً صاحبه لا محالة فليقل: أَحْسِبُ فُلاَناً وَاللهُ حَسِيبُهُ وَلاَ أُزَكِّي عَلَى اللهِ أَحَداً أَحْسِبُهُ ـ إِنْ كَانَ يَعْلَمُ ذَاكَ – كَذَا وَكَذَا.

२३१. आप ﷺ ने फरमाया : जब तुम में से किसी को जरूर ही किसी की तारीफ करनी हो तो यह कहे :

मैं समझता हूँ कि फलाँ आदमी ऐसे और ऐसे (मिसाल के तौर पर नेक, परहेज़गार, दीनदार् वगैरा)) है, और अल्लाह उस का हिसाब लेने वाला है और मैं किसी को अल्लाह के सामने पाक नहीं क़रार दे सकता । यह तारीफ भी उस वक़्त करे जब यह खूब अच्छी तरह जानता हो । (मुस्लिम ४/२२९६)

114- जब मुसलमान अपनी तारीफ सुने तो क्या कहे

232- اَللَّهُمَّ لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا يَقُولُونَ، وَاغْفِرْ لِي مَا لاَ يَعْلَمُونَ وَاجْعَلْنِي خَيْراً مِمَّا يَظُنُّونَ]

२३२. ऐ अल्लाह जो यह लोग मेरे बारे में कह रहे हैं उस पर मेरी पकड़ मत करना और मुझे माफ कर दे वह जो ये नहीं जानते हैं। [और मुझे उस से बेहतर बना दे जो ये मेरे बारे में गुमान करते है ।] (बुखारी की अदबुल मुफरद न.७६१, शैख अलबानी ने सहीहुल् अद्बिल् मुफ्रद् न.५८५ में इसकी सनद को सहीह कहा है, दोनों बरेकिटों के बीच के शब्द बैहक़ी ने शुअबुल ईमान ४/२२८ में एक दूसरी सनद से ज़्यादा किए हैं)

115- हज्ज या उम्रा का इह़राम बाँधने वाला तल्बिया कैसे कहे

233- لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لاَ شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ، وَالنِّعْمَةَ، لَكَ وَالْمُلْكَ، لاَ شَرِيكَ لَكَ.

२३३. मैं ह़ाजिर हूँ। ऐ अल्लाह मैं ह़ाजिर हूँ। मैं ह़ाजिर हूँ तेरा कोई शरीक नहीं , मैं ह़ाजिर हूँ। बेशक् तमाम तारीफ और नेमत् और बादशाही तेरे ही लिए है। तेरा कोई शरीक नहीं।

(बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ३/४०८ मुस्लिम २/८४१)

116- ह़ज्रे अस्वद् वाले कोने पर अल्लाहु अक्बर कहना चाहिए

234- طاف النبي ﷺ بالبيت على بعير كلما أتى الركن أشار إليه بشيء عنده وكبر.

२३४. नबी ﷺ ने ऊँट पर सवार हो कर बैतुल्लाह का तवाफ किया। जब आप ﷺ हज्रे अस्वद् वाले कोने के पास आते तो उस की तरफ् अपने पास मौजूद किसी चीज़ से इशारा करते और ((अल्लाहु अक्बर)) कहते। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ३/४७६) किसी चीज़ से मुराद छड़ी है। देखिए बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ३/४७२)

117- रुक्ने यमानी और हज्रे अस्वद् के दरमियान दुआ

235- رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

२३५. ऐ हमारे रब् हमें दुनिया और आख़िरत् में भलाई अता फरमा और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा।

(अबूदाऊद २/१७९ अह्मद् ३/४११ शरहुस्सुन्ना लिल् बग़वी ७/१२८, अलबानी ने सहीह अबू दाऊद १/३५४ में इसे हसन कहा है)

118- सफा और मरवा पर ठहरने की दुआ

जब आप ﷺ सफा के क़रीब पहुँचे तो फरमाया :

236- ﴿ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللهِ﴾.. أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللهُ بِهِ .

२३६. सफा और मरवा (यह दोनों पहाड़ियाँ) अल्लाह की निशानियों में से हैं । मैं उसी से शुरू कर रहा हूँ जिस से अल्लाह ने शुरू किया है ।

फिर आप ने सफा से सई शुरू की, उस पर चढ़ते गए यहाँ तक कि बैतुल्लाह नज़र आने लगा, फिर आप ने क़िब्ला की तरफ् मुहँ किया और अल्लाह की तौहीद और बड़ाई बयान करते हुए यह दुआ पढ़ी :

((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الأَحْزَابُ وَحْدَهُ)).

अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । वह अकेला है । उस ने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की मदद् की और अकेले उस ने सारे लश्करों को शिकस्त दी ।

फिर इसके बीच आप ने दुआ फरमाई, इस तरह आप ने तीन बार कहा । हदीस लम्बी है और उस में यह भी है कि नबी ﷺ ने मरवा पर भी वैसे ही किया जैसे सफा पर किया ।

(मुस्लिम २/८८८)

119- अरफा के दिन (९जुल्हिज्जा) की दुआ

रसूल ﷺ ने फरमाया : सब से बेहतर दुआ अरफा के दिन की दुआ है, और उस दिन जो कुछ मैं ने और मुझ से पहले नबियों ने कहा उस में सब से अफज़ल यह है :

237- لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

२३७. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं । वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ।

(त्रिमिज़ी, शैख अलबानी ने सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१८४ और सिलसिला सहीहा ४/६ में इसे हसन कहा है)

120- मश्अरे हराम के पास की दुआ

२३८. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़सवा (ऊँटनी) पर सवार हो गये। जब मशअरे हराम (मुज़्दलि़फा) पहुँचे तो क़िब्ला की ओर मुँह कर के अल्लाह तआला से दुआ की, अल्लाहु अक्बर, लाइलाहा इल्लल्लाह और तौहीद के कलिमात कहते रहे। अच्छी तरह रोशनी होने तक यहीं ठहरे रहे। फिर सूरज निकलने से पहले यहाँ से रवाना हो गये। (मुस्लिम २/८९१)

121- जमरात की रमी के वक़्त हर कंकरी के साथ तक्बीर

२३९. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीनों जमरात के पास जब भी कंकरी फेंकते अल्लाहु अक्बर कहते, फिर आगे बढ़ते और

पहले और दूसरे जमरा के बाद क़िब्ला की ओर मुँह करके अपने दोनों हाथ उठाकर दुआ करते। किन्तु जमरा अक़बा (आखिरी जमरा) की रमी करते हुये हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्बर कहते और उसके पास बिना ठहरे हुये वापस हो जाते।

(बुखारी फत्हुल बारी के साथ ३/५८३, ३/५८४, और इसके शब्द यहीं देखिये, बुखारी फत्हुल बारी के साथ ३/५८१, मुस्लिम ने भी इसे रिवायत किया है)

122- तअज्जुब् और खुश कुन काम पर दुआ

240- سُبْحَانَ اللهِ.

२४०. अल्लाह पाक है ।

(बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ १/२१०, ३९०, ४१४ मुस्लिम ४/१८५७)

241- اللهُ أَكْبَرُ

२४१ . अल्लाह सब से बडा है ।

(बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ८/४४१ और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी २/१०३, २/२३५, मुसनद अहद ५/२१८)

123- खुशख़बरी मिलने पर क्या करे?

२४२. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी खुश करने वाली चीज़ की ख़बर मिलती तो आप अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हुये सज्दा में गिर पड़ते। (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा, देखिए सहीह इब्ने माजा १/२३३, इर्वाउल ग़लील २/२२६)

124- जो आदमी अपने जिस्म में दर्द महसूस करे वह क्या दुआ पढ़े

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है कि जिस्म के जिस हिस्से में तकलीफ़ हो उस पर अपना हाथ रखो और तीन बार कहोः

بِسْمِ اللّٰهِ

अल्लाह के नाम से।

और सात बार यह दुआ पढ़ोः

243 - أَعُوذُ بِاللهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَ أُحَاذِرُ

२४३. मैं अल्लाह तआला और उसकी कुदरत् की पनाह पकड़ता हूँ उस चीज़ के शर् (बुराई) से जो मैं पाता हूँ और जिस से डरता हूँ। (मुस्लिम ४/१७२८)

125- अपनी नज़र लग जाने का डर हो तो क्या कहे

२४४. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई आदमी अपने भाई या अपने यहाँ या अपने माल में खुश करने वाली चीज़ देखे तो उसे बरकत की दुआ करनी चाहिए, क्योंकि नज़र लग जाना हक़ है। (मुसनद अहमद ४/४४७, इब्ने माजा, मालिक, अलबानी ने सहीहुल जामिअ में इसे सहीह कहा है १/२१२, देखिए ज़ादुल मआद अरनाऊत की तहक़ीक़ ४/१७०)

126- घबराहट के समय क्या कहा जाए ?

٢٤٥- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ))

२४५. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

(बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ६/१८१, मुस्लिम ४/२२०८)

127- आम जानवर या ऊँट ज़बह् करते समय क्या कहे?

241- بِسْمِ اللهِ وَاللهُ أَكْبَرُ [اَللهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ] اَللهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّي.

२४६. अल्लाह के नाम से ज़बह् करता हूँ । अल्लाह सब से बड़ा है [ऐ अल्लाह यह क़ुरबानी तेरी ही तरफ से और तेरे ही लिए है] ऐ अल्लाह यह (क़ुरबानी) मेरी तरफ से क़बूल फरमा ।

(मुस्लिम ३/१५५७ बैहक़ी ९/२८७, बरैकिट के बीच के शब्द बैहक़ी वग़ैरा के हैं, और आखिरी जुमला मुस्लिम की रिवायत का अर्थ है)

128- सरकश् शैतानों के फरेब और चाल से बचने की दुआ

247 - أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لاَ يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلاَ فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، وَبَرَأَ وَذَرَأَ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيهَا،

وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الأَرْضِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْـــلِ وَالنَّهَارِ، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ إِلاَّ طَارِقاً يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمَنُ.

२४७. मैं अल्लाह के उन मुकम्मल् कलिमात की पनाह पकड़ता हूँ जिन से कोई नेक और कोई बुरा आगे नहीं गुज़र सकता उस चीज़ की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया और वजूद बख़्शा और फैलाया, और उस चीज़ की बुराई से जो आसमान से उतरती है, और उस चीज़ की बुराई से जो उस में चढ़ती है, और उस चीज़ की बुराई से जो उस ने ज़मीन में फैलाया और उस की बुराई से जो उस से निकलती है और रात और दिन के फित्नों के शर से और रात के वक़्त हर आने वाले की बुराई से सिवाए उस रात को आने वाले के जो भलाई के साथ आए । ऐ बहुत ज़्यादा रहम करने वाले । (अह्मद् ३/४१९ सहीह सनद् के साथ, इब्नुस सुन्नी न. ६३७, अरनाऊत ने तहाविया की तखरीज़ पृष्ठ १३३ में इसकी सनद को सहीह कहा है, देखिए मजमऊज़्ज़वाइद् १०/१२७)

124- तौबा और इस्तिग़्फार
(अल्लाह से माफी और बख़्शिश् माँगना)

248 - قال رسول الله ﷺ : والله إني لأستغفر الله و أتوب إليـــه في اليوم أكثر من سبعين مرة.

२४८. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : अल्लाह की क़सम मैं दिन में सत्तर मर्तबा से ज्यादा अल्लाह से बख़्शिश् माँगता और उस के सामने तौबा करता हूँ । (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ११/१०१)

249- وقالﷺ : يا أيها الناس توبوا إلى الله فإني أتوب في اليوم إليه مائة مرة.

२४९. नबी ﷺ ने फरमाया : ऐ लोगो अल्लाह के सामने तौबा करो, मैं दिन में सौ (१००) बार उस के सामने तौबा करता हूँ। (मुस्लिम ४/२०७६)

250- وقالﷺ : من قال: أَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيمَ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الْحَـيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ، غفر الله له وإن كان فر من الزحف.

२५०. आप ﷺ ने फरमाया : जो आदमी यह दुआ पढ़े :

((أَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيمَ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ))

मैं अज़मत वाले अल्लाह से माफी माँगता हूँ जिस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और सब को क़ायम रखने वाला है और मैं उसके सामने तौबा करता हूँ।

तो अल्लाह तआला उसे बख़्श् देता है चाहे वह लड़ाई के मैदान से भागा हुआ हो। (अबूदाऊद २/८५, त्रिमिज़ी ५/५६९, और हाकिम ने इसे रिवायत कर के सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है, और शैख अलबानी ने भी इसे सहीह कहा है, देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८२, जामिउल उसूल ४/३८९-३९० तहक़ीक़ अरनाऊत)

251- وقال ﷺ : ((أقرب ما يكون الرب من العبد في جوف الليل الآخر فإن استطعت أن تكون ممن يذكر الله في تلك الساعة فكن)).

२५१. आप ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला बन्दे के सब से क़रीब रात के आख़िरी हिस्से में होता है । अगर तुम उन लोगों में शामिल् हो सको जो उस वक्त अल्लाह को याद करते हैं तो हो जाओ । (त्रिमिज़ी, नसाई १/२७९, हाकिम और देखिये सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१८३, जामिउल उसूल ४/१४४ तहक़ीक़ अरनाऊत)

252- وقال ﷺ ((أقرب ما يكون العبد من ربه وهو ساجد فأكثروا الدعاء)).

२५२. आप ﷺ ने फरमाया : बन्दा अपने रब् से सब से ज्यादा क़रीब सजदे की ह़ालत् में होता है तो सजदे में ज़्यादा से ज़्यादा दुआ किया करो । (मुस्लिम १/३५०)

253- وقال ﷺ : ((إنه ليغان على قلبي وإني لأستغفر الله في اليوم مائة مرة)).

२५३. अग़र्र मुज़नी बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: मेरे दिल् पर पर्दा सा आ जाता है और मैं दिन में सौ (१००) बार अल्लाह से बख्शिश् माँगता हूँ । (मुस्लिम ४/२०७५)

(इब्नुल् असीर फरमाते हैं कि पर्दा सा आने से मुराद भूल है । क्योंकि आप ﷺ हमेशा ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र व अज़कार, क़ुर्बत और अल्लाह के मुराक़बा में मश्ग़ूल रहते थे । लेकिन जब कभी इन में किसी चीज़ से कुछ ग़फ्लत् हो जाती या आप भूल जाते तो उसे अपने लिए गुनाह शुमार करते और ऐसी ह़ालत् में अधिक से अधिक तौबा व इस्तिग़्फार करते । देखिए जामिउल् उसूल २/३८६)

130- तस्बीह (سبحان الله) तह्मीद (الحمد لله) तह्लील (لا إله إلا الله) और तक्बीर (الله أكبر) की फज़ीलत

254- قالﷺ : من قال : سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مرة حطت خطاياه ولو كانت مثل زبد البحر.

२५४. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो आदमी एक दिन में सौ (१००) बार :

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ

पाक है अल्लाह अपनी तारीफों के साथ

कहे उस के गुनाह माफ कर दिए जाते हैं चाहे वह समुन्दर के झाग के बराबर हों। (बुख़ारी ७/१६८, मुस्लिम ४/२०७१, सुब्ह व शाम इस दुआ को सौ बार पढ़ने की फज़ीलत के लिए देखिए इसी किताब की हदीस न. ९१)

255- وقالﷺ : من قال لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ عشر مرار. كان كمن أعتق أربعة أنفس من ولد إسماعيل.

२५५. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो आदमी दस बार यह दुआ पढ़े :

لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

वह उस आदमी की तरह होगा जिस ने इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद किए । (बुख़ारी ७/६७, मुस्लिम शब्द के साथ ४/२०७१, इस दुआ को दिन में सौ बार कहने की फ़ज़ीलत के लिए देखिए इसी किताब की हदीस न.९३)

256- وقالﷺ : كلمتان خفيفتان على اللسان، ثقيلتان في الميزان ، حبيبتان إلى الرحمن: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ

२५६. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : दो कलमे ज़बान पर हलके हैं लेकिन मीज़ान (तराज़ू) में भारी हैं और अल्लाह को बड़े प्यारे हैं:

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ

पाक है अल्लाह और उसी के लिए हर क़िस्म की तारीफ है , पाक है अज़मत् वाला अल्लाह । (बुखारी ७/१६८ मुस्लिम ४/२०७२)

257- وقالﷺ لأن أقول سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ للهِ، وَلاَ إِلــهَ إِلاَّ اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ، أحب إلي مما طلعت عليه الشمس.

२५७. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : मेरे नज़दीक सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, लाइलाहा इल्लल्लाह और अल्लाहु अक्बर का कहना उन तमाम चीज़ों से ज्यादा महबूब है जिन पर सूरज निकलता है । (यानी यह कलिमात कहना दुनिया की सारी नेमतों से ज्यादा महबूब है) (मुस्लिम ४/२०७२)

258- وقالﷺ : أيعجز أحدكم أن يكسب كل يوم ألف حسنة فسأله سائل من جلسائه كيف يكسب أحدنا ألف حسنة؟ قال: يسبح مائة تسبيحة، فيكتب له ألف حسنة أو يحط عنه ألف خطيئة.

२५८. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : ((क्या तुम में से कोई आदमी रोज़ाना एक हज़ार नेकी कमाने से भी आजिज़ है ? आप के पास बैठे हुए साथियों में से एक ने कहा हम में से कोई एक हज़ार नेकी कैसे कमा सकता है ? आप ﷺ ने फरमाया : वह सौ बार तस्बीह़ कहे तो उस के लिए एक हज़ार नेकी लिखी जाएगी या (आप ने फरमाया) उस के एक हज़ार गुनाह मिटा दिये जाऐं गे । (मुस्लिम ४/२०७३)

259- من قال: سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ غرست له نخلة في الجنة.

२५९. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो आदमी

سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ

अज़मतों वाला अल्लाह पाक है अपनी तारीफों के साथ ।

कहता है उस के लिए जन्नत में खजूर का एक पेड़ लगा दिया जाता है । (त्रिमिज़ी ५/५११, हाकिम १/१०५, हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है, देखिए सहीहुल जामिअ ५/५३१, सहीह त्रिमिज़ी ३/१६०)

260- وقالﷺ : يا عبد الله بن قيس ألا أدلك على كنز من كنوز الجنة؟ فقلت: بلى يا رسول الله، قال: قل: لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ

२६०. नबी ﷺ ने फरमाया : ऐ अब्दुल्लाह बिन् क़ैस क्या मैं तुझे जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना न बताऊँ ? मैं ने कहा या रसूलल्लाह क्यों नहीं जरूर बतायें ! आप ﷺ ने फरमाया: तुम कहो

لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ

अल्लाह की तौफीक़ के बिना न गुनाह से बचने की हिम्मत है न नेकी करने की ताक़त। (बुखारी फत्हुल बारी के साथ ११/२१३, मुस्लिम ४/२०७६)

261- وقالﷺ : أحب الكلام إلى الله أربع: سُبْحَانَ اللهِ ، وَالْحَمْدُ للهِ ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ، لا يضرك بأيهن بدأت.

२६१. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : चार कलिमात अल्लाह के यहाँ सब से ज़्यादा महबूब हैं

سُبْحَانَ اللهِ ، وَالْحَمْدُ للهِ ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ،

और इन में से जिस से भी चाहो शुरू करो कोई हरज नहीं ।

(मुस्लिम ३/१६८५)

262- جاء أعرابي إلى رسول الله ﷺ فقال: علمني كلاما أقوله: قال: ((قل : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، اللهُ أَكْبَرُ كَبِيراً، وَالْحَمْدُ للهِ كَثِيراً، سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ)) قال فهؤلاء لربي فما لي؟ قال: ((قُلْ اللَّهُمَّ اغْفِرْلِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي))

२६२. एक आराबी (दिहाती) रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और कहने लगा मुझे कुछ कलाम सिखायें जो मैं कहा करूँ । आप ﷺ ने फरमाया कहो :

لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، اللهُ أَكْبَرُ كَبِيراً، وَالْحَمْدُ للهِ كَثِيراً، سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ))

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा और तमाम तारीफ केवल अल्लाह ही के लिए है बहुत ज़्यादा । अल्लाह बहुत पाक है जो सारे जहानों का रब् है । अल्लाह ग़ालिब और हिकमत वाले की तौफीक़ के बिना न बुराई से बचने की हिम्मत है न नेकी करने की ताक़त।

दिहाती ने कहा यह तो मेरे रब के लिए हैं, मेरे लिए क्या है ? आप ﷺ ने फरमाया कहो :

((اللهُمَّ اغْفِرْلِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي))

ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम कर, मुझे हिदायत् दे और मुझे रोज़ी दे । (मुस्लिम ४/२०७२ अबू दाऊद ने यह ज़्यादा किया है कि जब वह दिहाती वापस जाने लगा तो आप ﷺ ने फरमाया : इसने अपने दोनों हाथ भलाई से भर लिये, १/२२०)

263- كان الرجل إذا أسلم علمه النبي ﷺ الصلاة ثم أمره أن يدعو بهؤلاء الكلمات: ((اللهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي))

२६३. जब कोई आदमी मुसलमान होता तो नबी ﷺ उसे नमाज़ सिखाते फिर उसे इन कलिमात के साथ दुआ करने का आदेश देते:

((اللهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي))

ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे , मुझ पर रहम कर , मुझे हिदायत् दे, मुझे आफियत् दे और मुझे रोज़ी दे ।

(मुस्लिम ४/२०७३, मुस्लिम की एक रिवायत में है कि यह कलिमात तेरे लिए तेरी दुनिया और आखिरत जमा कर दें गे)

264-إن أفضل الدعاء: الْحَمْدُ للهِ ، و أفضل الذكر: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ.

२६४. नबी ﷺ का फरमान है कि सब से अफज़ल् दुआ अलहमदुलिल्लाह है और सब से अफज़ल **ज़िक्र** लाइलाहा इल्लल्लाह है । (त्रिमिज़ी ५/४६२, इब्ने माजा २/१२४९, हाकिम १/५०३, हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है, देखिए सहीहुल जामिअ १/३६२)

265-الباقيات الصالحات: سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ للهِ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ ، وَاللهُ أَكْبَرُ، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ

२६५. अल्बाक़ियातुस्सालिहात (अर्थात बाक़ी रहने वाले नेक अमल्) यह हैं :

((سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ للهِ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ))

अल्लाह पाक है, और सब तारीफ अल्लाह के लिए है, और अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, और अल्लाह सब से बड़ा है, और नहीं है बुराई से बचने की हिम्मत और न नेकी करने की ताक़त मगर अल्लाह की तौफीक़ से। (अहमद हदीस न०–५१३ तरतीब अहमद शाकिर, इसकी सनद सहीह है, और देखिए मजमउज़्ज़वाइद १/२९७, हाफिज़ इब्ने हजर ने बुलूगुल मराम में इसे अबू सईद की रिवायत से नसाई के हवाले से नक़ल किया है और फरमाया है कि इसे इब्ने हिब्बान और हाकिम ने सहीह कहा है।)

131- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तस्बीह कैसे पढ़ते थे ?

266- عن عبد الله بن عمرو رضي الله عنهما قال: ((رأيت النبي ﷺ يعقد التسبيح بيمينه))

२६६. अब्दुल्लाह बिन् अम्र (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) फरमाते हैं कि मैं ने नबी ﷺ को अपने दायें हाथ से तस्बीह़ गिनते देखा।

(अबूदाउद शब्द के साथ २/८१ त्रिमिज़ी ५/५२१ और देखिए सह़ीहुल् जामिअ् ४/२७१ हदीस न. ४८६५)

132- मुख़तलिफ नेकियाँ और जामिअ आदाब

267- إذا كان جنح الليل - أو أمسيتم - فكفوا صبيانكم، فإن الشياطين تنتشر حينئذ، فإذا ذهب ساعة من الليل فخلوهم، وأغلقوا

الأبواب واذكروا اسم الله ، فإن الشيطان لا يفتح باباً مغلقاً، وأوكوا قربكم واذكروا اسم الله ، وخمروا آنيتكم واذكروا اسم الله، ولـــو أن تعرضوا عليها شيئاً، وأطفئوا مصابيحكم))

२६७. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जब रात का अंधेरा छा जाये या फरमाया जब शाम हो जाए तो अपने बच्चों को रोक लिया करो क्योंकि उस समय शैतान फैलते हैं और जब रात का कुछ हिस्सा बीत जाए तो उन्हें छोड़ दो, और बिस्मिल्लाह पढ़ कर दरवाज़े बन्द कर दिया करो क्योंकि शैतान बन्द दरवाज़ा नहीं खोलता, और अल्लाह का नाम लेकर अपने मश्कीज़ों के मुँह तस्मे से बाँध दिया करो और अल्लाह का नाम लेकर अपने बरतन् ढाँप दिया करो चाहे (अगर ढाँकने के लिए कुछ न मिले तो) उन पर कोई चीज़ ही रख दिया करो और अपने चिराग़ बुझा दिया करो ।

(बुखारी फत्हुल बारी के साथ १०/८८, मुस्लिम ३/१५९५)

وصلى الله وسلم وبارك على نبينا محمد وعلى آله وأصحابه أجمعين.